JAINA

JNYANANABALI

ज्ञानावली ।

द्वितीय खण्ड ।

श्रीयुक्त राय सेताबचद नाहार बाहादुर के आज्ञासे

आजीमगंज विश्वविनोद छापाखाना मे
श्रीश्याम लाल चक्रवर्त्ति ने छापा
औ प्रकाश किया ।

सम्वत् १९६२ माघ ।

निछरावर १)

विज्ञापन ।



इस ग्रन्थके छापने मे अथवा सशोधन करणे मे जो कोइ जगे अक्षर खोट, काना माता भुल हुवा होय अथवा और कोइ तरेह ज्ञानादिकका छापने मे आशातना हुवा होय सो सकल श्री सघ समक्षे मन वचन काया कर मिच्छामिं दुक्कड़ं होय, और साधर्म्मिक श्री सङ्घ से इह प्रार्थना है, कि. इस पुस्तक मे जो कुछ कदि २ अशुद्ध होय, तिसकुं संशोधन करके जयना से उपयोग कर पाठ करणे मे आवे । इति ॥ श्री रस्तु कल्याण मस्तु । उत्तरोत्तर मङ्गलीक ॥



॥ ओं नमः ॥

ज्ञानावली।

—०॥॰—

॥ प्रतिक्रमण विधि ॥

—०००—

॥ अथ प्रथम सामायिक विधि लिख्यते ॥

प्रथम मुहपती आसनपुजनी प्रमार्जिकर (३) वार गुरुवंदना देणी, इच्छामि खमासमणो वन्दिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मथ्येपण वन्दामि, पूजजी इछाकार भगवन सुहराइ सुह दिवसि सुख तप सरीर निरावाध सुख सञ्जम जातरा निरवहतिछै पूजजि साता ॥ इति गुरुपरम्पर वन्दना ॥ णमो अरिहन्ताण णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण, णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्वसाहूणं, एसोपञ्च णमुक्कारो, सव्व पाव प्पणासणो, मङ्गलाणञ्च सव्वेसि पढमं हवइ मङ्गलं। कहणो ॥ इच्छाकारेण सन्दिसह भगवन इरीयावहिय पड़िक्कमामि इच्छं इच्छामि प्पड़िक्कमिउ १ इरिया वहियाए विराहणाए गमणा गमणे २

पाणक्कमणे वीयक्कमणे हरियकमणे उसाउत्तग पणग दग मट्टी मक्कड़ा सन्ताना सङ्कमणे जेमे जीवा विराहिया ए गिंदिया वेइंदिया ते इंदिया चउरिंद्रिया पञ्चिन्द्रिया अभिया वत्तिया लेसिया सङ्घाईया सङ्घट्टिआ परावियां किलामिया उद्दविया ठाणा उट्ठाण सङ्कामिया जीविआउ विवरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडम् ॥ तस्स उत्तरी करणेण कहणो ॥ आठ नवकारका काउसग्ग ॥ पछै काउसग्ग पारि, नमो अरिहन्ताण ऐसा प्रगट पणे कहणा, लोगस्स उज्जोय गरे धम्म तित्थयरे जिणे अरिहन्ते कित्तयमं चउवि सम्पि केवलि ॥ उसभ १ मजियञ्च २ वंदे सम्भव ३ मभि नन्दनञ्च ४ सुम इञ्च ५ पउमप्पहं ६ सुपास ७ जिणञ्च चन्दप्पहं वदे ८ सुविहिञ्चं पुप्फदन्त ९ सियल १० सियञ्च ११ वास-पूजञ्च १२ विमल १३ मणन्तञ्च जिण १४ धम्मं संतिञ्च वंदामि १६ कुंथु १७ अरञ्च १८ मल्लि १९ वन्दे मुनिसुव्वय २० नमि जिनञ्च २१ वदामि रिठ्ठनेमि २२ पासन्तहं २३ वद्धमानञ्च २४ ॥ एवमए अभित्थुया विहुअरयमला पहीण जरमरणा चौविसम्पि जिनवरा तित्थयरा म पसी अतु कित्तिय वंदिय महिया जेते लोग्गस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग बोहि लाभ समाहि वर मुत्तमं दिन्तु ६ चदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं प्पया सयरा सागर वर गम्भिरा सिद्धा

सिद्धि मम दिसन्तु ७ ॥ (खडा हो कहणा)करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियम पज्जवा सामि दुविहं तिविहेण मणेण वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि तस्स भन्ते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ४ नीचै वैसकर वोलना ॥ नमोत्थुणं अरिहन्ताणं भगवंताण आईगराणं तित्थयराणं सयं स बुद्धाण २ पुरिसुत्तमाण पुरिस सीहाण पुरिसवर पुण्डरियाण पुरिसवर गन्ध हत्थीणं ३ लोगोत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं ४ अभयदयाण चक्खुदयाणं मग्गदयाण शरणदयाण जीवदयाण वोहिदयाणं ५ धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीण। दीवोत्ताण सरणगइपइट्ठा अप्पडिहयवर नाण दसणधराण वियट्ट छउमाणं जिणाण जावयाण तिन्नाणं तारियाणं बुद्धाणं वोहियाण मुत्ताण मोयगाणं ८ सव्वन्नूण सव्व दरसीण सिव मयल मरुय मणत मक्खय मव्वावाह मपुन रावित्ति सिद्धिगइ नामधेय ठाण सम्पत्ताणं नमो जिणाण जीय भयाणं ९ ठाणं सम्पाविउ कामस्स णमो जिणाण ॥ इत्ति सामायिक लेवा विधि ॥

पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे उसाउत्तंग पणग दग मट्टी मक्कड़ा सन्ताना सङ्कमणे जेमे जीवा विराहिया ए गिंदिया वेइंदिया ते इंदिया चउरिंद्रिया पञ्चिन्द्रिया अभिया वत्तिया लेसिया सङ्घाईया सङ्घट्टिआ पराविया किलामिया उद्दाविया ठाणा उट्ठाण सङ्कामिया जीविआउ विवरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडम् ॥ तस्स उत्तरी करणेण कहणो ॥ आठ नवकारका काउसग्ग ॥ पछै काउसग्ग पारि, नमो अरिहन्ताणं अैसा प्रगट पणै कहणा, लोगस्स उज्जोय गरे धम्म तित्थयरे जिणे अरिहन्ते कित्तयमं चउवि सम्पि केवलि ॥ उसभ १ मजियञ्च २ वंदे सम्भव ३ मभि नन्दनञ्च ४ सुम इञ्च ५ पउमप्पहं ६ सुपासं ७ जिणञ्च चन्दप्पहं वंदे ८ सुविहिञ्च पुप्फदन्त ९ सियल १० सियञ्च ११ वास-पूजञ्च १२ विमल १३ मणन्तञ्च जिण १४ धम्म संतिञ्च वंदामि १६ कुंथु १७ अरञ्च १८ मल्लि १९ वन्दे मुनिसुव्वय २० नमि जिनञ्च २१ वदामि रिट्ठनेमि २२ पासन्तह २३ वद्धमानञ्च २४ ॥ एवमए अभित्थुया विहुअरयमला पहीण जरमरणा चौविसम्पि जिनवरा तित्थयरा म पसी अंतु कित्तिय वंदिय महिया जेते लोग्गस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग बोहि लाभ समाहि वर मुत्तम दिन्तु ६ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहिय प्पया सयरा सागर वर गम्भिरा सिद्धा-

सिद्धिं मम दिसन्तु ७ ॥ (खडा हो कहणा)करेमि भंते सामा-
इय सावज्ज जोगं पच्चक्खामि जाव नियम पज्जवा सामि
दुविह तिविहेण मणेण वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि
तस्स भन्ते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वो-
सरामि ४ नीचे वैसकर बोलना ॥ नमोत्थुण अरिहन्ताणं
भगवताण आईगराण तित्थयराणं सय स बुद्धाण २ पुरिसु-
त्तमाणं पुरिस सीहाणं पुरिसवर पुण्डरियाणं पुरिसवर गन्ध
हत्थीण ३ लोगोत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोग-
पईवाण लोगपज्जोयगराणं ४-अभयदयाण चक्खुदयाणं मग्ग-
दयाण शरणदयाण जीवदयाण वोहिदयाण ५ धम्मदयाणं
धम्मदेसियाणं धम्मनायगाण धम्मसारहीणं धम्मवरचा
उरंत चक्कवट्टीणं । दीवोत्ताण सरणगइपइट्ठा अप्पडिहयवर
नाण दसणधराण वियट्ट छउमाणं जिणाण जावयाण तिन्नाण
तारियाणं बुद्धाण वोहियाण मुत्ताणं मोयगाणं ८ सव्वन्नूणं
सव्व दरसीण सिव मयल मरुय मणंत मक्खय मव्वावाह
मपुन रावित्ति सिद्धिगइ नामधेय ठाण सम्पत्ताणं नमो
जिणाण जीय भयाणं ९ ठाणं सम्पाविउ कामस्स णमो
जिणाण ॥ इत्ति सामायिक लेवा विधि ॥

न होयत्ते मि॰ तीन विराधना ज्ञानविराधना दसन विराधना चारित्र विराधना तिन विराधना मांहे कोई विराधना कीधी होय ते दिवसीके वीसे मि॰ च्यार कषाय क्रोध मान माया लोभ च्यार कषाय मांहे कोई कषाय सेवी होयते मि॰ च्यार ध्यान आरत ध्यान रुद्र ध्यान धर्म ध्यान सुकल ध्यान च्यार ध्यान मांहे कोई दुर ध्यान ध्यायो होय ते मि॰ च्यार कथा राज कथा देस कथा स्त्री कथा भत्ती कथा च्यार कथा मांहे कोई कथा कीधी होय तेमि॰ पांच ईन्द्रि श्रोत्रइन्द्रि चक्षुइन्द्रि घ्राणेन्द्रि रसेन्द्री स्परसेन्द्री पांच ईन्द्रि मांहे कोई इन्द्रि मोकली मेली होयते मि॰ पांच प्रमाद, मद्य विसय कसाया निद्रा विगाय पञ्च मे भणीया, ए ए पञ्च पमाया जीवा पाडंती ससारे १ पांच प्रमाद मांहे कोई प्रमाद सेव्यो होय ते मि॰ छ काय पृथिवी काय अप काय तेउ काय वायु काय वनसपती काय तिस काय छ काय मांहे कोइ काय विराधी होयते मि॰ छ लेस्या किसन लेस्या नील लेस्या कापोत लेस्या तेजो लेस्या पदम लेस्या सुकल लेस्या छ लेस्या मांहे कोई पाडूवी लेस्या ध्याई होयते मि॰ सातभय इहलोक भय परलोक भय आदान भय अकस्मात भय आजीविका भय मरणका भय अ सलाका भय ए सात भय मांहे कोई भय कीधो होयते मि॰ सात कु विसन, 'दूतञ्च मांसञ्च'सुराच वेश्या पापार्द्ध चोरी

परदार सेवा एतानि सप्त व्यसनानि लोके, घोराति घोरं नरके पतति १ सात कु विसन माहे कोई कु विसन सेव्यो हुवैत दि॰मि॰। आठ मद। जाति मद कुल मद वल मद रूप मद तप मद लाभ मद श्रुत मद ऐश्वर्य मद आठ मद माहे कोई मद कीधो होयते मि॰ आठ कर्म ज्ञानावरणी दरसनावरणी वेदनी मोहनी आऊखो नाम कर्म गोत्र कर्म अन्तराय आठ कर्मरी एकसो अठावन प्रकृति माहे कोई असुभ प्रकृति बांधी होय ते मि॰ नवतत्व। जीवतत्व अजीवतत्व पुण्यतत्व पाप तत्व आश्रवतत्व सम्वरतत्व निरजरातत्व बधतत्व मोक्षतत्व ए नवतत्व माहे कोई तत्व सूधो सरदह्यो न होय ते मि॰ नव नियाणा निबंधन नारीनर सुर अपवियार पवियारत सदवृत्त दरिदत्तञ्च चइज्जइ नव नीयाणाइ १ नवनियाणा माहे कोई नियाणो कीधो होयते दि॰ मि॰ दसप्रकार री मिथ्यात्व धम्मे अधमा सन्ना अधम्मे धम्म सन्ना असाहू साहू सन्ना साहू असाहू सन्ना अजीवे जीवसन्ना जिवे अजीवसन्ना अमुत्ते मुत्तसन्ना मुत्ते अमुत्त सन्ना उमग्गे मगा सन्ना मग्गे उमग्गसन्ना ए दशविध मिथ्यात्व माहे कोई मिथ्यात्व सेव्यो होयते मि॰ इग्यारे प्रतिमा श्रावकनी दसण वय सामाइ पोसह पमाय वम्भ सचित्तं आरम्भ पेसउ दिट्ट वज्जीय समण भूइये इग्यारे प्रतिमा श्रावकनी सूधी सरदही न होय ते दि॰मि॰ इग्यारे अङ्ग आचारङ्ग १ सुयगडां

ग २ ठांणांग ३ समवायाङ्ग ४ भगवति ५ ज्ञाता धर्मकथा ६ उपासग दशाङ्ग ७ अन्तगढ ८ अणुत्तरोववाई ९ प्रश्न व्या कर्ण १० विपाकसूत्र ११ इंग्यारे अङ्गमांहे कोई अङ्ग सुधो सरधो न हुवेतो दिवसीके विषे तस मिच्छामि दुक्कड १ ॥ बारे व्रत श्रावकना पांच अणुव्रत तीन गुणव्रत च्यार सिक्षा व्रत बारे व्रत श्रावकना सुधा सरदह्या न होयत मि० बारे उपाङ्ग उववाई राय पसेणी जीवाभीगम पन्नवणा जम्बुद्वीप पन्नती चन्द पन्नती सूरपन्नती निरावली कप्पीया कप्पवडंसिया पुप्फीया पुप्फ चूलीया वन्हिदशा बारे उपाङ्ग माहे कोई उपाङ्ग सुधो सरदह्यो न होयते मि० तेरह काठीया आलस मोह अवन्नथभा कोहा पम्माय कृपणिता भय सोग अनियाणा विषय कुतुहला रमणा १ तेरह काठीया माहे कोई धरम करतां काठीयो आडो आयो होय त मि० चवदह नेम ॥ सचित्त दव्व विगई पाणह तंबोल वत्थ कुसमेसु वाहण सयण विलेवण अवभ दिसि णाण भत्तेसु १ चवदह नेम लेने चितारया न होयते मि० पनरह कर मा दाण ईङ्गाल कम्मे वणकम्मे साडी कम्मे भाडीकम्मे फोडी कम्मे दन्त वणिज्जे लख्ख वणिज्जे रस वणिज्जे केस वणिज्जे विस वणिज्जे जन्त पिलण कम्मे निलञ्छन कम्मे दव दावणि या सरदह तलाव परिसोसणीया असञ्जति जन पोसणिया पनरे करमादान माहि कोई दूषण लागो होय ते मि० सोले

कपायरी चोकडी च्यार कोधरी च्यार मानकी च्यार मायारी चार लोभकी सोलह कपायकी चोकडी माहे कोई बंध पाड्यो होयते मि० सतरे प्रकारे सञ्जम पृथवी काय सञ्जमे अपकाय सञ्जमे तेउ काय सञ्जमे वाउकाय सञ्जमे वनस्पतिकाय सञ्जमे वेरिद्रि सञ्जमे तेरिद्री सञ्जमे चोरिंद्री सञ्जमे पञ्चेद्रि सञ्जमे अजीव सञ्जमे पेहा सञ्जमे अपेहा सञ्जमे पमज्जणा सञ्जमे पारिठावणिया सञ्जमे मण सञ्जमे वय सञ्जमे काय सञ्जमे सतरे प्रकारे सञ्जम माहे कोई असञ्जम सेव्यो हुवे ते दि० मि० ॥ अठारे पापस्थान प्राणातिपात मृपावाद अदत्तादान मैथुन परिग्रह क्रोध मान माया लोभ राग द्वेप कलह अभिख्यान पैशुन्य रति अरति परपरवाद माया मोस मिथ्या दरसन सल्लच अठारे पाप स्थान माहे कोई सेव्यो होय सेवायो होय सेवता प्रते भलो करि जाण्यो होय ते दिवसके विषय त्रिविध २ करि ते मिच्छामी दुक्कड ॥ इति श्रीआलोयन विधि ॥

पीछे आसन प्रमार्जि कर उभो थको इच्छं आलोयेमि ईच्छामि ठामि काउसग्ग पछे सव्व सव्व देवसिय दुच्चिन्तिय दुभ्भासियं दुचिट्ठिय अतिचार श्रावक सूत्र भणाएमि पछे उकडु नीचे वेस कर नवकार० करेमि भन्ते क० चत्तारि मङ्गल अरिहन्ता मङ्गल सिद्धा मङ्गल साहु मङ्गल केवली पन्नत्तो धम्मो मङ्गल चत्तारि लोगुत्तमा अरिहन्ता लो० सिद्धा लो०

साहु लो० केवली पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमा, चत्तारि सरणं पवज्जामि, साहु सरणं पवज्जामि, केवली पन्नतो धम्मो सरणं पवज्जामि, इच्छामि ठामि काउसग्गं नवकार० ॥ वन्देत्तु सव्व सिद्धे धम्मायरिएअ, सव्व साहूअ, इच्छामि पडिक्कमिउ सावग धम्मा ईआरस १ जोमे वया इयारो, नाणे तह दंसणे चरित्तेय, सु हु मोअ वायरोवा, तं निन्दे तञ्च गरिहामि २ दुविहे परिग्गहमि, सावज्जे वहु विहेय आरम्भे, कारावणे अकरणे पडिक्कमे देवसियं सव्वं ३ ज वद्ध मिंदि एहि चउहिं कसाएहि अप्प सथ्थेहि रागेणव दोसेणव त निन्दे तञ्च गरि हामि ४ आगमणे निग्गमणे ठाणे चंकमणे अणाभोगे अभि उगे अनिउगे, पडि० ५ सङ्का कङ्ख विगञ्छा, पसंसतह सन्थवो कुलिङ्गीसु, सम्मत्तस ईयारे पडि० ६ छ काय समारम्भे, पयणे पया वणेअ जेदोसा अतट्ठा य परट्ठा उभयट्ठा चेव तं निदे ७ पञ्चन्ह मणुव्वयार्णं गुणव्वयाणच तिन्न मइयारे सिक्खा णञ्च चउण्हं पडि० ८ पढ्मे अणुव्वयमि थूलग पाणाइ वाय विरईओ आयरिय मप्प सत्थे ईत्थ पमाय प्रसङ्गेण९ वहवध छवि च्छेये अईभारे भत्तपाण वुत्थेए पढमं वयस्स ईयारे पडि १० वीए अणु व्वयमी परि थुलग अलिय वयण विरईओ, आयरिय मप्प सत्थे इत्थ पमाय प्पसङ्गेण ११ सहस्सा रहस्स दारे मोसु वए सेय कुड लेहेय वीअ वयस्स इयारे पडि० १२

तईए अणुव्वयमि थलग पर दव्व हरण विरइओ आयरिअ मप्प सत्थे इत्थ पमाय प्पसङ्गेण प० १३ तेना हड़ प्पउगे तप्पडि रूवे विरुद्ध गमणेय कूड़ तुल्ले कूड़माणे पडि० १४चउत्थे अणुव्वयमि निच्च परदार गमण विरईओ आयरिअ मप्पसत्थेईत्थ प०१५ अपरिग्गहिया इत्तर अणङ्ग वीवाह तिव्व अणुरागे चउत्थे वयस्स इयारे पडि० १६ इत्ता अणुव्वय पञ्चममि आयरिअ मप्पसत्थमि परिमाण परिच्छेए इत्थ० १७ धन धन्न खित्त वत्थु रुप्प सुवन्नय कुविय परिमाणे दुप्पय चउप्पयमि पडि० १८ गमणस्सउ परिमाणे दिसासु उड्ढ अहेय तिरियञ्च वुड्ढि सई अन्तरद्धा पढमंमि गुणव्वये निंदे १९ मज्जंमिय मंसमिय पुप्फे फलेय गन्धमल्लेय उवभोग परिभोगे वीयंमि गुणव्वए निंदे२० सचित्ते पडिवद्धे अप्पोल दुप्पोलिअंच आहारे तुच्छो सहि भक्खणया पडि० २१ इङ्गाली वण साड़ी भाड़ी फोड़ी सु वज्जए कम्म वणिज्जञ्चेव दन्त लक्ख रस केस विस वि-सयं २२ एव खुज्जत पीलण कम्म निल्लञ्छणञ्च दव दाण सरदह तलाय सोस, असई पोसञ्च वज्जिज्जा २३ सत्थग्गि मूसल जन्तग तण कट्ठ मन्त मूल भेसिज्जे, दिण्णे दिवा घए वा पडि० २४ ण्हाणुवट्ठण वन्नग विलेवणे सद्द रूव रस गन्धे वत्थासण आभरणे पडि० २५ कदप्पे कुक्कुईए मोहरि अहि गरण भोग अइरित्ते दडम्मि अणट्ठाए तईयमि गुणव्वए निंदे

२६ तिविहे दुप्पणिहाणे अणवट्ठाणे तहासइ विहूणे सामाइय वितह कए पढमे सिक्खावए निंदे २७ आणवणे पेसवणे सद्दे रुवेअ पुग्गलेक्खेवे देसाविगासियंमि वीए सिक्खा वए निंदे २८ सन्थारूच्चार विही पमाय तह चेव भोयणा भोए पोसह विहि विवरीए तइये सिक्खा वए निंद्रे २९ सचित्ते निक्खिमणे पिहणेव वए समच्छरे चेव कालाईं कम दाणे चउत्थे सिक्खा वए निंदे ३० सुहिएसुअ दुहिएसुअ जा मे अस्सञ्जएसु अणु कम्पा रागेणव दोसेनवा त निंदे तञ्च गरिहामि ३१ साहू सु सम्बिभागो नकऊ तव चरण करण गुत्तीसु सन्ते फासुय दाणे त निंदे तञ्च गरिहामि ३२ इहलोए परलोए जीविअ मरणेअ आस सम्पउगे पञ्चविहो अईयारो मा मुज्झ हुज्ज मरणन्ते ३३ काण्ण काईयस्स पडिक्कमे वाइअस्स वायाए मणसा माणसियस्स सव्वस्स वया ईआरस्स ३४ वन्दण वय सिक्षा गारवेसु सन्ना कसाय दण्डेसु गुत्तीसुअ समिईसुअ जो अईयारो त निंदे ३५ सम्मदिट्ठी जीवो जई विहु पाव समा यरे किंचि अप्पोसि होई बन्धो जेन ननिद्ध धस कुणई ३६ तम्पिहु सपडिक्कमण सुप्परिया वश उत्तर गुणञ्च खिप्प उवमामेई वाहिव्व सु सिक्खिउ विज्जो ३७ जहाविस कुट्ठ गय मन्त मूल विसारया विज्जाहणत मन्तेहि तोत हवइ नि-व्विस ३८ एव अठ्ठविह कम्म राग दोस समज्जिय आलोयं-

तोय निंदंतो खिप्प हणई सु सावओ३९वय पावंपि मणुस्सो आलोइय निंदीअ गुरु सयासे होइ अईरंगल हूओ ओहरि अ भरुव्व भार वहो ४० आवस्सएण य एण सावओ जई वि वहुरओ होइ दुक्खाण मन्त किरिअ काही अचिरेण कालेण ४१ आलोयणा वहु विहा नय सम्भरिआ पड़िक्कमणं काले मूल गुण उत्तर गुणे त निंदे तञ्च गरिहामि ४२ तस्स धम्म स्स केवलि पण्णतस्स अम्भुट्ठिओमि आराहणाए विरओमि विराहणाए तिविहेण पड़िक्कन्तो वन्दामि जिण चउव्विस ४३ जावन्ति चैइआइ उड्ढेअ अहेअ तिरिअ लोएअ सव्वाइ ताइ वन्दे इह सन्तो तत्थ सन्ताइ ४४ (भगवन) जावन्ति केवि साहू भरहे रवए महाविदेहेअ सव्वेसि तेसि पणओ तिविहे ण तिदण्ड विरिआण ४५ चिर सञ्चिय पाव पणासणिए भव सय सहस्स महणीए चउविस जिण विणीग्गय कहाइ वउलन्तु मे दीअहा ४६ मम मङ्गल मरिहन्ता सिद्धा साहू सुअञ्च धम्मोअ सम्मदिट्ठी देवा दित समाहिञ्च वोहिञ्च ४७ पड़ि सिद्धाण करणे किच्चाण मकरण पड़िक्कमण असद्दहणेअ तहा विवरीअ परूवणाएअ ४८ खामेमि सव्व जीवे सव्वे जीवा खम न्तु मे मित्तीमे सव्वभुएसु वेर मज्झ नके नइ ४९ एवमह आलो इअ निंदिअ गरहिअ दुगुञ्छिय सम्म तिविहेण पडिक्कन्तो वन्दामि जिणं चउव्वीम ५० ॥ इतिश्रीवन्दित्तु सम्पूर्ण ॥

इच्छामि खमासमणो" इत्यादि वर्डी वन्दना २ वार देणी पछै खामणा देणी इच्छाकारण मन्दिरसह भगवन् अभुट्ठिअमि अभिन्तर देवसिय खाममि इच्छ खामेमि देवसियं ज किञ्च अपत्तियं परपत्तिय भत्ते पाणे विणए वियावच्चे अलावे संलावे उच्चासणे समासण अन्तर भासाए उवरि भासाए ज किञ्च मुज्झ विणय परिहीण सुहुमम्बा बायरंवा तुभ्भे जाणह अह न जाणामि तरस मिच्छामी दुक्कड १ पछै सर्वने खमाय कर उभा होयने सात लाख पृथिवी काय सात लाख अप्पकाय सात लाख तेउकाय सात लाख वाउ काय दस लाख प्रत्येक बनस्पती काय चौदह लाख अनन्त काय बेलाख बेइन्द्रि बेलाख तेइन्द्रि बेलाख चौरिन्द्री च्यार लाख नारकी च्यार लाख देवता च्यार लाख तिर्यञ्च पचेंद्रि चौदह लाख मनुष्यनी जाति एवङ्कार च्यार गति चौरासी लाख जीवा जोनि सूक्ष्म बादर गर्भज समुर्छिम पर्याप्ता अपर्याप्ता सन्नी असन्नी जलचर स्थलचर खेचर उरचर भुजपर जे कोई जीव अभिहीया वत्तीया लेसीया सङ्घाया सङ्घट्टीया परावीया किलामिया उदवीया ठाणो उट्ठाण सङ्कामिया जीवीआओ विवरोविया तस्स मिच्छामी दुक्कड १ अठारे लाख चोविस हजार एकसो विस भूज्जो २ करि तस्स मिच्छामी दुक्कड १ भगवनजी आयरिय उवज्झाए सीसे साम्मिए कुल

गणिए जेमे कथा कसाया सव्व तिविहेण खामेमि १ सव्वस्स समण संहुस्स भगवन् अञ्जलि करे सीसे सव्व खमावइत्ता खामेमि सव्वस्स अहंपि २ सव्वस्स जीव रासिस्स भावउ धम्मो निहिय निहिय चित्तो सव्व जीव खमावइत्ता खामेमि सव्वस्सईहंपि ३ इति प्रतिक्रमण चतुर्थ आवस्सक इच्छाकारेण सन्देह सह भगवन ज्ञान दर्सण चारित्त तप अतिचार विसोधनार्थे करेमि काउसग्ग नवकार ॥ करेमि भन्ते० ॥ इच्छामि ठामि काउसग्ग तस्सुत्तरी० च्यार लोगस्सरा काउसग्ग अथवा १६ नवकारको काउसग्ग पछे काउसग्ग पारि प्रगट पणे नमो अरिहन्ताण एसा कह कर लोगस्स उज्जोयगरे पछे २ वार वन्दणा देणी इति काउसग्ग ५मो आवस्सक पछे उभो होयनै रयणि पच्चक्खाण करै रयणि पच्चस्खाण ॥ चउविहंपि आहारं- असण पाण खाइम साइम अन्नत्थणा भोगेण सहसा गारेण महत्तरा गारेण सव्व समाई वत्तिया गारेण वोसिरामी १ सामायिक १ चउविसस्था २ वन्दणा ३ पडिक्कमणो ४ काउसग्ग ५ पचक्खाण ६ खड़ावस्सक नै विषै कांई दोस लागो होय ते दिवसकै विषै तस्स मिच्छामि दुक्कड २ नमो खमा समणाण गोयमाणंणं महामुणिण थुई थुइ भणामि निस्सही नमो त्थुण अरिहन्नाण० पछे पालगी आसण वैस कर सच्चे तिर्थंकर

पांच पद कु धदणा देणी ॥ आदिनाथजी १ अजितनाथ जी २ सम्भवनाथजी ३ अभिनन्दनजी ४ सुमतनाथजी ५ पद्मप्रभुजी ६ सुपारसनाथजी ७ चन्दाप्रभुजी ८ सुविधनाथ जी ९ सीतलनाथजी १० श्रीश्रेयांसनाथजी ११ वासपूजजी १२ विमलनाथजी १३ अनन्तनाथजी १४ धर्मनाथजी १५ शान्तिनाथजी १६ कुंथुनाथजी १७ अरनाथजी १८ मल्लि-नाथजी १९ मुनिसुव्रतजी २० नमिनाथजी २१ नेमनाथजी २२ पार्श्वनाथजी २३ महावीर स्वामिजी २४ एते चउवीसति तीर्थङ्करा शांता शांतिकरा भवन्तु सीमन्धर स्वामी १ युग-मन्धिर स्वामी २ बाहु ३ सुबाहु ४ सुजात ५ स्वयप्रभु ६ ऋषभानन ७ अनन्त वीर्य ८ सूर प्रभु ९ विसाल १० वज्रधर ११ चन्द्रानन १२ चन्द्रबाहु १३ भुजङ्गम १४ ईश्वर १५ नेमी श्वर १६ वीरसेण १७ महाभद्र १८ देवयस १९ अजित जिन २० इति वीसंवहरमान नाम ॥ इन्द्रभूति १ अग्निभूति २ वायुभूति ३ व्यक्त ४ सुधर्मा ५ मण्डित ६ मौर्यपुत्र ७ अक-म्पित ८ अचलभ्राता ९ मेतार्य १० प्रभास ११ ए इग्यारे गणधर नाम ॥अथ पांचपदांकी वन्दणा लिख्यते ॥ पेहलापद मैं जघन्न तो वीस तीर्थङ्कर उत्कृष्टा एकसो साठ तथा सित्तर तीर्थङ्कर तथा दोयसे चालीस अथवा न्यारसे अस्सी तीर्थङ्कर चौतिस अतिसय पैंतिस वाणी कर विराजमान एक हजार

आठ लक्खणका धरण हार चउसठ इंद्रका पूजनीक वारे गुणें करि विराजमान अनन्तो ज्ञान अनन्तो दर्शन अनन्तो बल अनन्ते सुख देवध्वनि भाष मण्डल फटक सिंहासण असोक वृक्ष पुप्फ वृष्टि देव दुन्दभी चमर दुलय तिन छत्र धरे जघन्यतो दोय कोड़ केवली उत्कृष्टा नव कोड़ केवली केवल ज्ञान केवल दर्शनरा धरणहार सर्व्व द्रव्य क्षेत्र काल भावरा सर्व्व वस्तु जांणण हार जिणां महा पुरसांजीने हाथ जोड़ मान छोड़ नीचो सीस नमाय एक हजार आठ वार हमारी वन्दणा नमस्कार होयज्यो तिख्खुत्तो अयाहिण पयाहिण वन्दामि नमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मङ्गल देवय चेवय पज्जुवासामि मत्थेण वन्दामि १ दुजा पदमै पनरे भेदे सिद्धजी सीधा आठ कर्म्म खपाय मोक्ष पहुता जठे जन्म नही जरा नही रोग नही सोग नहीं कर्म नही काया नही मोह नही माया नही चाकर नहीं ठाकुर नही आठ गुणे करि विराजमान अनन्तो ज्ञान अनन्तो दर्सन अनन्तो सुखा माहे सुख क्षायक समकित सहित अटल अव घांणा अमूर्त्ति पणो अगुरु लघु पणो अनन्त बल सहित ज्यां सिद्ध महाराजने मान छोड़ हाथ जोड़ नीचो सीस नमाय एक हजार आठ वार वन्दणा नमस्कार होज्यो २ तीजा पदमै आचारजजी छत्तीस गुणे

करि विराजमान पांच इन्द्री जीते नव वाड ब्रह्मचर्य पाले च्यार कषाय टाले पांच महाव्रत पाले पांच आचार पाले पांचे सुमति सुमता तीण गुप्ते गुप्ता आठ सम्पदा सहित जिहां महा पुरसांने वन्दणा नमस्कार होयज्यो ३ चौथे पद उपाध्यायजी पचीस गुणे करि विराजमान इग्यारे अङ्ग वारै उपाङ्ग पोतै भणै औरा नें भणावै चउदै पूर्व्वरा पारगामी जिहां महा पुरषा नें हमारी एक हजार आठ वार वन्दणा नमस्कार होज्यो ४ पांचमा पदके विषै पोतारा धर्माचार्यजी साची श्रधा साची प्ररूपणा करै पञ्च महाव्रत चोखा पालै उणा साधानै आदि लेई नें जघण्य पदमे दोय हजार कोड़ि साधु उत्कृष्टा नव हजार कोड साधु पांच भरत पाच ऐरावत पाच महा विदेह पाच पनरे क्षेत्रमे जयवन्ता विचरै साधुजी महाराज केवा वै छै सतावीस गुणे करि विराजमान पांच महाव्रत पालै पांच इन्द्री जीते च्यार कषाय टाले भाव शुच करण शुच योग शुच मन समे धारणा वचन समै धारणा काया समै धारणा णांण सम्पन्ना दर्सण सम्पन्ना चारित्र सम्पन्ना क्षमावन्त वैराग्यवन्त वेदनी आए वेदना सहे मरणान्त उपसर्ग सहे वस्त्र पात्र, आहार थानक निरदोस भोगवे वावीस परिसह सहे नव वाडि सहित सील पाले दस

प्रकार को यति धर्म पाले बैयालीस दूखण रहित सुध आहार पांणी भोगवै भगवानकी आज्ञा सहित चाले जीहां महापुरुसानै हमारी एक हजार आठ वार वन्दणा नमस्कार होज्यो तिक्खुत्तो॰ ५ इति पाञ्च पदकी वन्दणा ॥

पछै पद्मासण बैस कर आज्ञा स्वामीजी एक नवकार॥ पछै स्तवन कहणो ॥ मङ्गल कर जिन राय सुणौ चउवीस तीर्थङ्कर नाम सुणौ ॥ श्रीआदिश्वर जग आदि करो। श्रीअजित नाथ भव पाप हरो ॥ १ ॥ सम्भव स्वामी सुख करणा । अभिनन्दन जिनवर दुख हरणा ॥ श्रीसुमति नाथ द्यो सुमति सदा । श्रीपदम प्रभु प्रणमौ आनन्दा ॥ २ ॥ श्रीसुपारस आसा पूरो । चन्दा प्रभु अशुभ करम चूरो ॥ सुविधिनाथ सीतल गावो । श्रेयांस एकादश मन ध्यावो ॥ ३ ॥ वासुपूज्य विमला स्वामी । श्री अनन्त धर्म शिव जिन गामी ॥ शान्ति कुंथु अर जिणराया । मल्लि मुनि सुव्रत सुखदाया ॥ ४ ॥ नेमि पास वदु पाया । श्रीमहावीर जिना गुण गाया ॥ ए जिनवर जे मन ध्यावे । त ऋद्धि सिद्धि सुख पावे ॥ ५ ॥ कलस॰ इम चउवीस जिनवर । कल्प तरुवर सुख सागर सेवीये। भव जलधि तारण सुगति कारण । जगत गुरु आराहिए ॥ नागोरी गच्छ श्री आसकरण गच्छपति । ददाजी दुख दूरग ॥ देवाधि देव-

दयाल धुनतो । श्रीसद्धर्म मङ्गल पुरए ॥ इति श्री चतुर्विंशति जिन स्तवनम् ॥

पछै तावकायं ठाणेण मुणेणं झाणेण अप्पाण वोसरामि पछै च्यार लोगस्सरो काउसग्ग वा अथवा सोल नवकारको काउसग्ग करणो पछै काउसग्ग पारो प्रगट पणे १ लोगस्स कह कर नीचै बैस कर जी स्वामी ऐसा कहणा । पछै गुरुजी नही हुवै तो पांते मङ्गलीक कहै॰ नवकार॰ धम्मो मङ्गल मुक्किट्ठ अहिंसा सञ्जमो तवो देवा वित्त नम सन्ति जस्स धम्मे सयामणो १ जहा दुम्मस्स पुप्फेसु भमरो आवियइ रस नय पुप्फ किलामेई सोयै पिणेई अप्पय २ ए मेए समणा वुत्ता जे लोए सन्ति साहुणो विहङ्ग माव पुप्फेसु दाण भत्ते सणे रया ३ वय च विंत्ति लब्भामो नय कोई उवहाम्मई अहा गड़े सुरियन्ते पुप्फेसु भमरो जहा ४ महुकार समाबुद्धा जे भवन्ति अणेस्सिया नाणा पिंडया दन्ता तेण वुच्चंति साहुणो तिबेमि ५ इति दुम्म पुप्फिया झयण पढम सम्मत्त ॥ सर्व्वे मगल मांगल्य सर्वे कल्याण कारण प्रधान सर्व्व धर्म्माणां जैन जयति सासन १ पछै एक सिज्झाय कहणी पनरै दिनरी पनरै सिज्झाय कहणी कदाचित मुख पाठ नही आवै तो सुख कारण तो सुत्र पाठ करणो रोज सुत्र कारण केहणा और

सिश्शाय आवै तो सुख कारण नही कहणी ॥

सुख कारण भवियन। समरो नित नवकार ॥ जिण सासण आगम चवदह पूरव सार। इण मन्त्रनी महिमा कहतां न लांठ पार, सुर तरु जिम चिंतित वञ्छित फल दातार ॥ १॥ सुर दानव मानव सेवकरे कर जोडी भूमण्डल विचरै तारै भवियण कोड़ि, सुर छन्दै विलसै अतिशय जासु अनन्त पहिले पद नमियै अरिगञ्जन अरिहन्त ॥ २ ॥ जै पनरै भेदे सिद्ध थया भगवन्त पञ्चमी गति पहुता अष्ट करम करि अत, फल अकल सरूपी पञ्चानतक देह जिनवर पाय प्रणमु बीजे पद वलि एह ॥३॥ गछ भार धुर धर सुदर ससिहर सोम कर सारण वारण गुण छत्तीसे थोम। श्रुतजांण शिरोमणि सागर जेम गम्भीर तीजे, पद नमियै आचारीज गिरिधीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुणआगर सूत्र भणावै सार तप विध सञ्जोगे भाखै अरथ विचार, मुनिवर गुणजुत्ता ते कहियै उवझाय, चौथे पद नमियै अहनिस तहना पाय ॥५॥ पञ्चाश्रव टाले पाले पञ्च आचार तपसी गुणधारी वारि विषय विकार, तृस थावर पीहर लोक माहै ज साध त्रिविधे ते प्रणमु परमारथ गुण लाध ॥ ६ ॥ अरि करि हरि सायण डाइन भूत वैताल सव पाप पणासे थासे मगल माल, इण समरया सङ्कट दूर टले ततकाल

जपे जिण गुण प्रभु गुणवर सिस रसाल ७ इति श्री नवकार स्वाध्याय सम्पूर्ण ॥

पढ्यो मंत्र नवकार ताप तेजगो निवरि पढो मंत्र नवकार दुख दालिद्र टाले, पढ़ो मंत्र नवकार हुवे कायर नर सूरा पढो मंत्र नवकार हुवै भण्डार भर पूरा, पढो मंत्र नवकार मोक्ष मार्ग निहालै, जपिये मंत्र श्रीजिनवर्ग तणो दिन दिन जस अधिको बधे नवकार मंत्र पढ्या पछे और मत्रं प्राणी कांई पढ ॥ १ ॥ पहिलो मंगलीक कहुं हिये एह, उत्तम टाले सयल सदेह ॥ अरिहत अरि जेहने नहीं कोय सो सरणो स्वामी मुझ होय १ मंगलीक बीजो मनमें धरो लोक माहि छे उत्तम खरो। सिद्ध गया जे सिद्ध अनंत सो सरणो स्वामी होय धरत २ मंगलीक बोलु हिवे तरती लोक माहि छे उत्तम यती। साधु सरण भवियण अणुसरो जिम भव सायर दुतर तरो ३ मंगलीक चौथो अवधार केवली भाषित धर्म सम्भाल। टाले रोग सोग भय मरण साचो श्रीजिन धर्म्म नो सरण ४ च्यारे सरण करे नर जेह भव सायर डूबे नहि तेह। सकल कर्म नो आणे अंत मोक्ष तणा सुख लहे अनन्त ५ तीन काल तिहु जोग करे उंची पदवी ते नर वरे। विजय भद्र कवियण इम कहे गर्भावास जीवडो नवि रहे ॥ इति श्रीमांगलिक सूत्रम् ॥

पछे नवकार वाली गुणनी स्तवन सिज्झाय गावणा। स्वाध्याय पतिक्रमण करतां सामायिक काल दोय घडी थाय जावे तो सामायिक पार लेणी ॥ मुहपती पडलेई ने र खडा होय ने नवकार करणा० इच्छाकारेण सन्दिसह भगवान इरिया वहि पडिक्कमामि०तस्सुत्तरी० ८ नवकारका काउसग्ग पारी नमो अरिहन्ताण पछे लोगस्स उज्जोय गर पछे नीचे बेस कर नमोत्थुण० पछे पारणकी पाटी कहे०॥ फासिय पालिय चेव सोहीय तीरीय नहा किट्टिय आरा-हिय चेव एर सममि पड्यव० १। ज न फासिय न पालीय न सोहीय न तीरीय न आराहीय दश मनरा दश वच नरा बारे कायरा बत्तिस दोषा माहे कोई दोष लागो होय ते दिवसी सामायिक विषे तस्स मिच्छामि दुक्कड नवमा सामायिक व्रत माहे कोई अतिचार लागो होय ते आलेवु मन वचन कायका जोग पाडवा ध्यान प्रवरताया हुवे सामायिक माहे समता कीधी नहीं हुवे अण पुगीया पारि हुवे पारतां विसारी हुव विधे करतां अविध असातणा हुई हुवे ते मिच्छामि दुक्कड १ पछे तिन नवकार गुणनो इति सामायिक पारणा विधि सम्पूरण ॥ इति श्रीपट्टा-वरतक विधि देवसी प्रतिक्रमण विधि-सम्पूर्ण ॥

प्रह उठीने समरो जे हो (भविगण)-मङ्गलीक सरणा

प्यार । आपद टाले सम्पदा हो ॥ भ० ॥ दौलत नो दातार हीयड़ै राखीनै हो ॥ भ०१ ॥ अरिहन्त सिद्ध साधो तणो हो ॥ भ० ॥ केवली भाख्यो धर्म । ए च्यारु जपता थका हो ॥ भ० ॥ टुटै आठू कर्म हो ॥ भ०२ ॥ ए च्यारुं सुख कारिया हो ॥ भ० ॥ ए च्यारु मङ्गलीक ए च्यारुं उत्तम कह्या हो ॥ भ० ॥ ए च्यारु तहतीक हो ॥ भ०३ ॥ गेलें घाटे चालन्ता हो ॥ भ० ॥ स्मरु वारम्वार । गाधी नगरी चालता हो ॥ भ० ॥ विघन निवारणहार हो ॥ भ०४ ॥ डाकन साकण भुतड़ा हो ॥ भ० ॥ सिंह चिता नै सूर ॥ वैरी दूसमण चोरडा हो ॥ भ० ॥ रहै सदाई दूर हो ॥ भ० ५ ॥ सुख साता वरते घनी हो ॥ भ० ॥ जै ध्यावे नर नार पर भव जातां जीवनें हो ॥ भ० ॥ सरणाको आधार हो ॥ भ०६ म० ॥ राखो शरणा की आसता हो ॥ भ० ॥ नेड़ो नहीं आवै रोग । वरते आनन्द सुख सही हो ॥ भ० ॥ वाला तणो सञ्जोगही ॥ भ०७ ॥ निस दिन याकु ध्यावता हो ॥ भ० ॥ जीव तणे उधार । कुमी नहीं कोई वस्तुनी हो भ० ॥ याही जगमें सार ही ॥ भ०८ ॥ मन चिन्ता मनोरथ फले हो ॥ भ० ॥ वरते कोड़ कल्याण । सुध मन करनै स्मरता हो ॥ भ० ॥ निश्चे पद निरवाण ही ॥ भ०९ ॥ ए सरणानै ध्यावतां हो ॥ भ० ॥ नाम तणो आधार । ए

शरणाकी कीर्त्ति कही हो ॥भ०॥ ध्यावो मनह मझार॥ ही ॥ सम्वत् अठारे बावने हो ॥ भ० ॥ पाली सेहर सुखकार ॥ चौथमल्ल इम विनवे हो ॥ भ० ॥ सुनज्यो बाल गोपाल ॥ भ० १० ॥ इति मङ्गलीक सरणा ॥

॥ अथ प्रतिक्रमणसिझाय लिख्यते ॥

करि पड़िकमणो भावसुं, दोय घड़ि शुभ ज्ञाण लालरे ॥ पर भव जाता जीवनें, सम्बल साचो जाण लालरे ॥ १ ॥ करि पड़िकमणो भावसुं ॥ श्री मुख वीर समुच्चरे, श्रेणिक राय प्रतिबोध लालरे ॥ लाख खण्डी सोनातणी, दीये दिन प्रति दान लालरे ॥ २ ॥ करि पड़िकमणो भावसु ॥ लाख बरस लग तेहनें, इम दीये द्रव्य अपार लालरे ॥ इक सामायक नी तुला नावे तेह लगार लालरे ॥ ३ ॥ करि पड़िकमनों भावसु ॥ सामायक परसाद थी, लहीये अमर विमान लालरे ॥ धरम सिंह मुनिवर कहे, मुगति तणो ए निदान लालरे ॥ करि० ॥ इति

अथ अठार भार सिझाय ।

जिन चउवीस नमी चित चङ्ग रङ्गे दया दिल आणीरे ॥ भार अठार वनस्पति कहिये एहनी मगली वाणीरे ॥ १ ॥ जीव दया जतन करि पालो टालो विराधना एहनीरे ॥ चतुर पुरुष चित भेद विचारी धारो जाति छे जेहनीरे ॥ २ ॥ तिन

वाञ्छित जल वरषाइछे ॥ तो अब परजाकी नीति घटीछे मेह घणो तरसायछे ॥ १४ ॥ हीन जातिको विसवो दानो भला पुरुष नहीं खायछे ॥ तो अबतो ब्राह्मण जावै वान्या विनज करायछे ॥१५॥ आगे धोलो केश देखि करि तप करिवा उठि जायछे ॥ तो अबतो बुढ़ा होवेछे सो फेर परणव्या जायछे ॥१६॥ गडरापति दौलत पाई खरचै नाहि लगारछे ॥ तो कष्ट घणी करि जोडतो जोरावर लै जायछे ॥१७॥ लेत उधारा बल रुपइया लिखत पक्की लिखाय छे ॥ तो देता विरियां कपट विचारै दगावाज अधिकायछे १८ ॥ परनारीको पाप घणाछे पुरुष परायो त्यागछे॥ तो सील वरतने खंडछे जो खोटी गतिमे जायछे ॥ १९ ॥ कन्या बड़ी सयानी करि करि बुढाको परणायछे ॥ तो पूंजी लेता दाम चुकावे मीठा भोजन खायछे ॥२०॥ गाली गीतमें ख्याल तमासे रात्या खड़ा रहायछे ॥ तो कथा धरमको चरचा सुनता आखा नींद भरि आयछे ॥२१॥ अबै जगत में भाङ्ग तमाखु सुखे पीवे खायछे ॥ तो स्वामी यति सन्यासी जोगी ज्यो अमल बनायछे॥२२॥एकादशी करछे निरजल सोतो व्रत फल पायछे ॥ तो भ ति भांतिका स्वाद बनावे पेट भरयो फल जायछे ॥२३॥ ज्योंही का तो खावे पीवे ज्यासु बड़ी कहायछे ॥ तो ज्याइको गुण विसर जावे उलटो

वैर करायछे ॥२४॥ अंव जीवके क्रोध घणोछै मान वड़ाइ गायछे॥ तो लोभ घणो करि कपट करिछे हरिया वृक्ष कटाय छे ॥२५॥ पूजा करता जाप जपता मन थिरता नही पायछे तो मौन धारकै माला फेरे मनमे मती करायछे ॥ २६ ॥ विना अरथही झूठा बोले कुड़ी साप भरायछे ॥ तो चुगली करिके गाव लुटावे दौदे आगि लगायछ ॥२७॥ वड़ा जीव कु मारचा संती हत्यारो कहावायछे ॥ तो छोटा जीव हजारा मारे सो क्यो भूल्या जायछे ॥२८॥ राग द्वेषकु छोडेछै सो वैरागी सुखदायछे॥ तो अब वैरागी भेक धारके सत्र वाति लड़ायछे ॥ २९ ॥ पोथि पाना प्रभुकी सुरति पूजे सुगति वधायछे ॥ तो भुखा मरता वेचन जावे सारो नरक कमायछे ३० ॥ चोरी निन्द्या आछी लागे जुवा खेलवा जायछे ॥ तो ज्ञान गोठिकी सङ्गति वैठा घरका राडि करायछे ॥ ३१ ॥ जेसी रचना वरते जगमे तैसी जोड़ जुड़ायछे॥ तो गावे देवा ब्रह्मचारी सुनता आनन्द पायछे ॥ ३२ ॥ इति कलि-युगकी विनती सम्पूर्णम् ॥

अथ अईमत्ता सिझ्याय ।

वीर जिनेश्वर-वादी गौतम, गोचरिया सञ्चरिया। फिलासपुरी नगरीमे चाल्या घर घर आगन फिरिया ॥१॥ आगे यहा पधारोजी लटके पात्र धरीजै, लटकै पात्र धरीजे

हम पर कृपा कीजे ॥ आ० १ ॥ तिण अवसर अईमत्ता रमंन्ता पग भमता मुनि दीठा। कञ्चन वरणी काया निरखी मनमे लागा मीठा ॥ आ० २ ॥ विनय करी अईमत्ता बोले किहा फिरो किरपालो। खरी दुपहरी पगा उघाड़ा, भमियां केई कामा ॥ आ० ३ ॥ मधुर वचनसे मुनिवर बोल्या सुद्ध गवेषण कीजे। निरतिचार अणे निरदूषण घर घर भिक्षा लीजे ॥आ० ४॥ आवो आज हमारे आंगन, कहस्यो ते विध करस्या। ज्यो ओहीने जुगति करीने, भावे भिक्षा देस्या ॥ आ० ५॥ आगु तेडीने घर ले आया, आया मन आनदे। अईमत्ता साथै गौतमने, श्री देवी राणी वन्दे ॥ आ० ६ ॥ आज हमारे रयण चिन्तामणि मेह अमीरस वूठा। आज हमारे सुरतरु फलिया, जो गौतमने दीठा ॥ आ० ७ ॥ रे बालुडा बहु बुधवन्ता गोयम गणहर ल्यांया। थाल भरीन असणादिक गोयमने वहराया ॥ आ० ८ ॥ विनय करि अईमत्ता पूछे किहा वसो किरपाला। वीर समीपे वसु अईमत्ता सङ्ग चल्या अईमत्ता ॥आ० ९॥ वीर वादी वाणी वलि सुणवा आया मन हुलासे। अनुमति मांगे माताजीसूं सञ्जम ले प्रभु पासे ॥ आ० १०॥ रे बालूड़ा बहु बुधवन्ता सञ्जमन स्यु जाणे। बालपणेमे श्रीराज सुख, भोगवो तुम हम साथे। आ० ११ ॥ विनय करि अईमत्ता बोले- कुमर कहइ कुल

भाणो । सो जाण सो जाण नाही ना जाण सो जाण ॥ आ०, १२ ॥ एक दिवसका राज करीने, मात मनोरथ पूरै । सञ्जम लेस्यां जिनवर आगै, दुरगति करस्यां दूरे ॥ आ०१३॥ अनु मति लईने सञ्जम लीधा, पाल माटीना त्राथी । काचली तिहां तरतां मुका नान्हड़ीया मन साची ॥ आ०१४ ॥ तप-स्याये करि केवल पाम्यौ पहुचौ पद निर्वाण । भावे करिजे तपस्या करसी, ते पावे शिवठाण ॥ आ०१५॥ इति अई-मत्ता सिझ्याय सम्पूरण ॥

अथ वैराग्य सिझ्याय लिख्यते ।

भुलो मन भमरा काई भम्यो भमियो दिवसने रात । मायानो बांध्यो प्राणियो भुल्यो भ्रमजाल ॥ भु०१ ॥ कुम्भ काचोरे काया कारमी, तेहना करोरे जतन । वीनसन्ता वार लागे नहीं निर्मल राखोरे मन ॥ भु०२ ॥ केहना छोरु केहना वाछरु केहना मायने बाप । प्राणी जीव जासे एकलो साथै पुण्य ना पाप ॥ भु०३ ॥ आस्या तो डुंगर जेवडी मरवो पगलाने हेठ । धन सञ्चीने काई करो स्रो देवनी भेट ॥ भु०४ ॥ धन्धो करि धन जोडियो लाखो उपर कोड मरणरी वेला मानवी लियो कदोरो छोड ॥ भु०५ ॥ मुरख कहे धन मोहरो धोखे धानन खाय । वस्त्र बिना जाय पोढसी लपगति लाकडा माय ॥ भु०६ ॥ भव सागर दुःख जल

भयो तिरवो छे तेह। त्रिचमे नीह सबलो थयो करमे वायने मेह ॥ भु०७॥ लखपति छत्रपति सबी गये गया लाख वै लाख । गरभ करि गोखे वेठता जल बल होय गया राख॥ भु०८॥ धमण धखतिरे रह गई बुझ गई लाल अङ्गार । एरण को ठरको मिट्यो उठ चल्यारे लोहार ॥ भु०९॥ उलट नदी मारग चालवो जावो पैलेजी पार। आगल हाट नही हट वाणीयां सम्बल लिजोरे लार ॥ भु०१०॥ परदेशी परदेशमे कुनसु कररे सनेह । आयारे कागल उठ चल्यो न गिणे आंधिने मेह ॥ भु०११॥ केई चाल्यारे केई चालसी केई चालणहार । केई वेठा वूडा वापडा जाणो नरक मझार ॥ भु०१२॥जिण घर नोवत बाजति होता छत्तीस राग । ते मन्दिर खाली पड्या बेठन लागारे काग ॥ भु०१३ ॥ महमद कहे वस्तु माहरी जे कोई आवेरे साथ । आपणो लाभ उठारीयो लेसो साहिब हाथ ॥ भु०१४ ॥ इति वैराग्य सिझ्झाय सम्पूर्ण ॥

अथ इलाची पुत्रनी सिझ्झाय लिख्यते ॥

नाम इला पुत्र जानिये धनदत्त शेठनो पुत्र । नटवि दे- खीने मोहियो जे राखे घर सुत्त ॥१॥ करमन छुटेरे प्राणियां पुरव नेह विकार । निजकुल छण्डीरे नट थयो नांणी सरम लगार ॥ क०१॥ इक पुर आव्योरे नाचवा उंची वांश विशेष तिहां राय जोवारे आवियो मिलिया लोक अनेक ॥ क०२॥

दोय पग पहरीरे पावडी वांस चढ्यो गजगेल। निरधारा ऊपर नाचतो खेलै नव नव खेल ॥ क०३ ॥ ढोल वजावेरे नटवी गावे किन्नर नाद। पाय तल घुघरा घम घमे गाजे अम्बर नाद ॥ क०४ ॥ तिहा राय चित मेरे चितवे लुबधो नटवीनें साथ। जो नट पडेरे नाचतो तो नटवी मुझ हाथ ॥ क०५ ॥ दानन आपेरे भूपति नट जाणे नृप वात। हु धन वछुरे रायनो राय वंछे मुझ घात ॥ क०६ ॥ तब तिहा मुनिवर पेषीओ धन धन साधुनी राग। धिग धिग विषयारे जीवने इम पाम्या वइराग। क०७। थाल भरी सुध मोदक पदमणी ऊभेला बार। लो लो कहे लता नथी धन धन मुनि अवतार ॥ क०९ ॥ सम्बर भावेरे कवली थयो मुनि कर्म खपाय। केवल महिमाजी सुर करे लब्धि विजे गुण गाय ॥ क १० ॥ इति इलाची पुत्रनी सिझ्याय सम्पूर्ण ॥

॥ अथ विजय शेठनी सिझ्याय लिख्यते ॥

सुकल पक्ष विजया व्रत लीनो शेठ किसन पपरो जाणी धन धन श्रावक पुण्य प्रभावक विजय सेठने सेठानी ॥ ध० सज सिणगार चढी पिय मन्दिर हिय हरप ओर हुलसानी तिण दिवस मुज वरत तणाते सेठ बोले मधुरी वाणी ॥ ध० २ ॥ वचन सुणीने तो नीर ढलिया वदन कमले थाये विल

षांनि । प्रेम धरी पदमणनें पूछे थे किम यो विलखांणी ॥ ध०३॥ सुकल पक्ष व्रत गुरु मुख लीनो थे परणो दूजी राणी दूजी नार मारे वेन बराबर धन धीरज थारी हो राणा ॥ ध०४ ॥ हियहार सिणगार सजी सब श्यांम घटा हिय हुलसांनि । बरषाकाल अति घणो गरजे निहु धारा बरषे हो पानी ॥ ध०५ ॥ एक सीज्याने दोनुं परबल तो विण मन राखो हुलसानी । पट रस मांस दुवादश बासर सरस समज हिय हूलसानी ॥ ध०६ ॥ मन बच काया अखण्डत निरमल मिल पलां सानो जांणी । विमल केवलि करि प्रशंसा ए दोनुं उत्तम प्राणी ॥ ध०७॥ प्रगट होया सञ्जम व्रत लीनो मोह कर्म कीया धुल धानी । रतन चन्द कर जोडी विनवै केवल ले गया निरवाणि ॥ ध०८ ॥ इति ॥

अथ दश श्रावक सिज्झाय ॥

आनन्दे आनन्द हुवै, काम देव कल्याण । सुरा देव सुख सपजै, सुलस नाम सुविहाणं ॥ १ ॥ सुखडाल समरया दुख टले, नणनी नाद विनोद । गाथापति चुलनी पियां, ध्यायां होय प्रमोद ॥ २ ॥ कुंडे कोलियो कुल तिलक, महा सतक सतवन्त । सुलहे नित सराहिये, जिम करमां आवै अन्त ॥ ३ ॥ दसे श्रांवक सह वीरना, जे ध्यावे इक चित्त । त्यां घर अचल वधावना दिन दिन बांधे वित्त ॥ ४ ॥ सप्तमे

अङ्ग भापीया, श्री वीर जिनन्द देव। करजोडी गढ़मल कहे स्वामीजी आपो सेव ॥ ५ ॥ इति दश श्रावक सिझ्याय ॥

॥ अथ स्वारथ सिझ्याय ॥

सय मुखै जिनवर उपदिसैरे जगजिवन जिनराज। लहि मानव भव दोहिलोरे कीजे उत्तम काजरे ॥ १ प्राणी० ॥ स्वारथीयो सहु कोई आप विगासी जोयरे॥प्राणी० ॥ आवे जावे एकलोरे सुख दुख वेचै एक, वेदनको विहचै नहीर धरि निज चित्तविवेकरे ॥ २ प्राणी० ॥ कूड़ी प्रीति करे घणी रे मुझन ते न सुहाई, रङ्ग पतङ्ग तणो परेरे पिणमै घेरु थाइ ॥ ३ ॥ रे प्राणी० ॥ अनविड़ता लागि आपजारे जहां लागि चाले पिंड। पिड रह्या सहू पारगारे खाटी माया छाड ॥ ४ ॥ रे प्राणी० ॥ अनजानी कीजे नहींरे जन जन साथै प्रीत, गुण जाणी ने कीजीयेरे उत्तमनी ए रीत ॥ ५ ॥ रे प्राणी० ॥ नाना व्यंजन रसवतीरे नव नव करि पकवान। दिन प्रति देही पोखीयेरे नावी साथी निदान ॥ ६ ॥ रे प्रा० एकभि उदरे उपन्यारे सरिस अही हित सिष। ते भाई रहे देखता रे देता लावो विष ॥ ७ ॥ रे प्राणी० ॥ लील करे जे लाड़लारे न लहे उन्हो छाट। दुख भरित पण डिकरा रे वेदन न सकै वांट ॥ ८ ॥ रे प्राणी० ॥ दीठा तनमन उल्लसेरे खिन विरह न समाय। ते कामनि अलगी रह र

जीव एकलो जाय ॥ ९ ॥ रे प्राणी० ॥ एक घड़ि नवि आव
हेरे एक जीव दोय देह । सेण तिके स्वारथ पर्परे झटक दिसा
हेंछेह ॥ १० ॥ रे प्राणी०॥ कुन सुत किनरी कामिनीरे कुन
माता कुन बाप । पुन्य पाप कीधा जीकेरे सहसी आपो
आप ॥ ११ ॥ रे प्राणी० ॥ रङ्ग लिये चिहु दिशि रुलेरे
मारग माहि मजीठ । स्वारथ विन चिहु आगलारे तेने
कानन दीठरे ॥ १२ ॥ रे प्राणी० ॥ तेल लियां तिल नील
नेरे वाम सालिनी सवाद । न रहे उडि वासनारे फुल तनी
मरजाद ॥ १३ ॥ रे प्राणी० ॥ धान लिये तुस धान नारे
वाय विसरी जाय । नीर संरावर नीठ वेरे नेडा कं इन थाय
१४ ॥ रे प्राणी० ॥ माझ्यो निज सुत मारिवारे चुलनि चित
विढाल । राय यशोधर ने दियेरे विसनी नागी निहाल ॥ १५
रे प्राणी० ॥ स्वारथ विन मार्‍यो पितारे सुर प्रिय नाम
कुमार । परदेशी गल नख दियोरे सूरीकता नार ॥ १६
रे प्राणी०॥ इमजे आप स्वारथीरे तिणरी सगत टाल । उप-
गारी स्वारथ परेरे तेहिरला इनकाल ॥ १७ ॥ रे प्राणी०
काइ करे मन रूसनारे काइ करे सन्ताप । भोगव्या विन
भाजे नहिरे पहला अरना पाप ॥ १८ ॥ रे प्राणी० ॥ अव
गुण उपरि गुण करेरे न विसवाइ एकविस। तान्या घलि तार
सीरे जीव घना जगईस ॥ १९ ॥ रे प्राणी० ॥ ए विसा

स्वारथ तणा रे दिसेछे सुविचार। मुनि श्री सार कहे इसां रे कीजे पर उपगार ॥ २० ॥ रे प्राणी० ॥ इति स्वारथ विशि।

॥ अथ शील वत्तीसी ॥

शील रतन यतन करि राखो वरजो विषय विकार जी। शीलवन्त अविचल पद पामे विषयी रुले संसार जी ॥ १ शील०॥ शील रतन जग माहि जस लहि सीझे वंछित काइजी। सुर नर किन्नर असुर विद्याधर प्रणमे वेकर जोडजी ॥ शील०॥२ ॥ कडुआ विषय विषम विष सरखा सेवे जे नर नारी जी। ते पर भवि दुरगति दुख पामे न लहे सोभ लगार जी ॥ शील०॥३ ॥ एकवार नरनारी सङ्गे जीव मरे नव लाख जी। एक भाले पाचइ सांगे सद सिद्ध भव साखी जी ॥ शील०॥४ ॥ करम वशी रमणी देखीने जे चुके गुणवन्त जी। तन मन वयन वली वशी आवे ते पिण साधु महन्त जी ॥ शील०॥५ ॥ आठ रमणी रुपे रम्भासम कनक निनाणु कोडिजी। छोडि जंबु चरण करण धर फवन फेरे तस होडी जी ॥ ६शी० ॥ कुलवालुवो तप जप करतो रहितो ते वन वास जी, श्रेणिक गणिका सगे विलुधो पामे नरका वास जी ॥ ७ शी० ॥ चेलना वचन सुनीने नीसी भरी। श्रेणिक पडिउ संदेह जी। सती सीरोमणि वीर वखानी पामे सवि सुखतहजी ॥ ८ शी० ॥ सुक मालिका

नदि मांहि नाख्यो भूपति निज भरतार जी कुवज पुरुष साथे हत्यारी दुखनि भमे ससार जी ॥ ९ शी० ॥ श्री रह नेमि नेमिजिन बन्धव, राजमति तनु देख जी, च्युक्यो वालि व्रत भङ्गनको भयो राखि राजल रेख जी ॥ १० शी० ॥ अभया राणी दुपण दाख्यो मेटी नचलिउ जेह जी। शूली पिटी थयो सिंहासन सेठ सुदर्शन तेह जी ॥ शी० ११ ॥ लंका-पति विद्या अतुलि बले सुरपति पदवीसार जी। तसु मस्तक रडवडीया धरणी, विरुया विपय विकार जी ॥ १२ शी० ॥ चालनीए जल काढी सुभद्रा चपा वार उघाडि जी, शील प्रभावे महिमा वाध्यु नाख्यो आल उपाडि जी ॥ १३ शी० ॥ हसि वायस जोडा दिखावे जानि इन मुझ वात जी। नयन वसे चुडली मातायें चितवीयो सुत घात जी ॥ १४ शी० ॥ भत्तहरि काउसग्ग वनमाहि जपे पिङ्गला नाम जी। डींवी मिसी गोरख समझावी जोवो विपय विकार जी ॥ १५ शी० ॥ कलह कारक भाखे जगमांहि, वीरति नही पचखान जी। तिन भव शिव गामि नारद, ते तत्र शील प्रमाण जी ॥ १६ शी० ॥ जिन रक्षित सायर विचि वहिउ रयणा रुपै भुलो जी खण्डो खण्ड करि वली दीयो पडतां माड़ि त्रिसूल जी ॥ १७ शी० ॥ जनक सुता वन मांहि एकली मूकावी श्री राम जी, पावक गङ्गा जल सम कीयो राणी अविचल नाम जी

१८ शी० ॥ शील सनाह मंत्री सर रूपई मृलि रूपणि नार जी, एम कुशील पणि दुष लाधा निरय निगोद मझार जी ॥ १९ शी० ॥ नल राजा देखि दवदन्ति पुरव भव ससार जी जिम मन मोडी तिम वलि चाली पामई सुख अपार जी ॥ २० शी० ॥ पुरव परिचित वेश्या नईरि घरि थूलभद्र रह्या चउमासि जी, ब्रह्मचारी चूडामणि मुनिवर न चग्यो नारी पासि जी ॥ २१ शी० ॥ वलकल धारी वासि वन मांहि, कन्द फल फुल आहार जी, ते पणि गणिका केडइ धायो आव्यो नयर मझारि जी ॥ २२ शी० ॥ वारहजार वरस छटकीधा, वेयावच प्रधान जी। नन्दी सेन सजम फल हार्‍यो कीधा नारी निदान जी ॥ २३ शी० ॥ भइतो भीम अतुलि वल भूपिउ, आवीमाता पास जी। शील प्रभावे कुंता वचनईं कादम अमृत ग्रास जी॥२४शी०॥ केसफरसनी आनड कीधी, पालि व्रत चिरकाल जी। ते सभूति वारमु चक्रवर्त्ति जात सप्तम पाताल जी ॥ २५ शी० ॥ वेश्या सगति जैव्रत आदरी, नाचत चतुर सुजान जी। ते आशाढ़ भूति सवेगी पामय केवल नाण जी ॥ २६ शी० ॥ अर्द्ध मण्डित नारी निज छडि, साधु भगत परिणाम जी। ते सव देव नागिला वचने आवे ठामो ठाम जी ॥ २७ शी० ॥ पट राणि वचने नवि सल्टिउ, राजा नयन निहालि जी, तत-

षिण चक्र चुलनें आपे राज काज संभाल जी ॥ २८ ॥ आट कुमार गयां वनवास छण्डि व्रतनां भार जी । जीरण तृण जिमतेहि परिहरि, लाधो भवनो पार जी ॥ २९ शी० ॥ ईम जानिने साधु साधवी श्रावक श्राविका जेहजी, निरमल व्रत पाले मन सुद्धे शीव सुख साधे तेह जी ॥ ३० शी० ॥ युग प्रधान जिन चन्द यतिसर, तास पाटि गण धार जी, जिन सिद्ध सूरि एम पभणे राज समुद्र सुविचार जी ॥ ३१ शी० ॥ इति शील बत्तीसी संपूर्ण ॥

॥ अथ सुमति छत्तीसी ॥

सरस्वति स्वामिणि वीन वुरे । मांगु वचन विलासरे ॥ सुबुद्धि प्राणि ॥ तुम्हे समकित सूधो पालिज्योरे लाल, जिन धर्मतणे आवासरे सुबुद्धि० ॥ १ ॥ तुम्हे कूडो फदा ग्रह मत कररिरे लाल । पडिस्यो दुरगति जाल रे ॥ सु० ॥ वलिय वलिय विसेषे साधु नेरे लाल । तुम्हे रुलिस्यो बहुलो कालरे २ ॥ सु० ॥ देव बुधई अरिहन्त नईरे लाल । मानिज्यो सुधई भावरे सु० ॥ गुनगोरुवा गुन मानिजोरे लाल । मति वागो मन कुभावरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ केवलिनो भाष्यो खरोरे लाल । तुम्हे धरिजो धर्म ध्यानरे ॥ सु० ॥ देखि कुगुरु कुदेव नईरे लाल । तुम्हे मतिकरो बहु मानरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ जिन शाशन मे जिन कह्यारे लाल । आगम पईतालीसरे ॥

सु० ॥ अक्षर एक उथापतांरे लाल। भमिये बिमवा वीसरे सु० ५ ॥ साधु महाव्रत पच छेरे लाल। पांचेई मेरु समान रे ॥ सु०॥ ते सुरा शिव नवि पळेरे लाल। पञ्चम आरे प्रमान रे ॥ सु० ६ ॥ वीतराग ना वचन थीरे लाल। तुम्हे समझो रुडई हेवरे ॥ सु० ॥ धन्य सागु छे आज नारे लाल। इन खोटेई कलि कालरे ॥ सु० ७॥ उतरा ध्येन माहि कह्यो रे अध्ययन दशमा माहि रे ॥ सु० ॥ घनामति जिन शाशने रे लाल। जूजूइवाणि छे ताहिरे ॥ सु० ८ ॥ ते देखि ससइ पडेरे लाल। सशोमूल मिथ्यातरे ॥ सु० ॥ मोह रुलीया मानवीरे लाल। नावे धर्म्मनी वातरे ॥ सु०९ ॥ धर्म्म वडो श्रावक तणारे लाल। व्रत बारे उदारे ॥ सु० ॥ ते जीव दया सुधो पाल तो रे लाल। पडे नहि ससार रे ॥ सु० १० ॥ श्री ठाणाग माहि भण्यारे लाल। श्रावक भेद चाररे ॥ सु० एक श्रावक माता पितारे लाल। केइक सउ अनुहार रे ॥सु० ११ ॥ केईक मध्यम भावसुरे लाल। कई एक भुले भावरे सु० ॥ मर्म्म न जाने धर्म्म नोरे लाल, कुडो आपई दावरे ॥ सु०१२ ॥ भाषाना भेद तीन छेरे लाल। सत्य असत्य ने मिश्ररे ॥ सु० ॥ बोलो बोल विचार सुरे लाल। भलई पालो भाषा तिश्ररे ॥सु०१३॥ जीव दया जुगते करोरे लाल। करो जीव जतन्नरे ॥ सु० ॥ सत्य वचन सहु बोलज्योरे लाल।

कुडो मकरी जो मन्न रे ॥ सु० १४ ॥ दान अदत्त परिहरो रे। गिनज्यो तृण मणि सम्मरे ॥ सु० १५ ॥ परिग्रह व्रत छई पाचमोरे लाल। टालो आरम्भ अनेक रे ॥ सु० ॥ करसण खेति पशु पालवारे लाल। न रहे धर्म्म निटेकोरे ॥ सु० १६ ॥ आश्रव पाच अनुव्रतईरे लाल। टालो चौथे त्रिवरे। सु० ॥ सात शिक्षा व्रत जानईरे लाल। त्रिजो रुडई संयोग सु० १७ ॥ मनवचनई काया करीरे लाल। वरजो पाप विकाररे ॥ सु० ॥ मानव नोभव दोहिलोरे लाल। वलि श्रावक अवतार रे ॥ सु० १८ ॥ गुण एक वीस श्रावक तणोरे लाल तिनसू धरो चित रागरे ॥ सु० ॥ निन्दा मकरो पार किरे लाल, दुरगति नो छई मागरे ॥ सु० १९ ॥ देव निन्दा करतो थकोरे लाल। जीव रुले संसार रे ॥ सु० ॥ गुरु निन्दा नर पातकी रे लाल। वांधई करम नोभार रे ॥ सु० २० ॥ शास्त्र निन्दा कोढी हुवे रे लाल, मरीय चण्डालई जायरे ॥ सु० ॥ नरक वलि निगोदमेरे लाल। तिरियञ्च मरीने थाय रे ॥ सु० २१ ॥ पुढवी कायई ऊपजरे लाल। लह जीव थिर वासरे ॥ सु० ॥ काल असख्यातो तिहारे लाल। ऊत्कृष्टो जीव वासरे ॥ सु० २२ ॥ अप्प काय अगनि मईरे लाल। चउथी वायु विचाररे ॥ सु० ॥ काल असख्यातो कह्योरे लाल। वचन वीतराग ना साररे ॥ सु० २३ ॥ वणस

पति मई जीव डांरे लाल। रहई अनन्तो कालरे ॥ सु० ॥
पंनई थावर भण्यारे लाल, जीव साधारण जालरे ॥ सु०२४
प्रत्येक वणस्सईना कहइरे लाल। जिनवर ज्ञानी देवरे ॥ सु०
फल फुल काष्ट-छल्ल पान नारे लाल। मूल बीज भिन्न
भेरे ॥ सु० २५ ॥ वि त्रि चउरिंद्रि जीव मईरे लाल। रहइ
सख्या तो कालरे ॥ सु० ॥ तिरिजच माहे भवकरईरे लाल
सात आठ भव मालरे ॥ सु०२६ ॥ देव अनेनारकी तणारे
लाल। भवमांहे भमे जीवरे ॥ सु० ॥ उतकृष्टई सागर
भण्यारे लाल। त्रतीस सख्या मदीवरे ॥ सु० २७ ॥ दस
वलि नारकि भवईरे लाल। भव एकेक विचाररे ॥ सु० ॥
शुभ अशुभ करम तणईरे लाल। भमईजीव गति चाररे
सु०२८ ॥ अझ चारि गति दोहिलीरे लाल। दश दृष्टान्ते ज
मरे ॥ सु० ॥ मानव भवि श्रुति नई श्रद्धारे लाल। सजम
वीरज नेमरे ॥ शु० २९ ॥ विसई सारस देवतारे लाल।
तिरजन्च विवेके हीनरे ॥ सु० ॥ नित्य दुखि रहै नारकीर
लाल। धरम मनुष्य मे कीनरे ॥ सु० ३० ॥ च्यार ध्यान
जिनवर कह्यारे लाल। आरति रौद्र निवाररे ॥ सु० ॥
धर्म्म शुकल ध्यान आवतारे लाल। करई करम सहाररे ॥
३१ सु० ॥ काल तीन द्रव्य भण्यारे लाल। आदरो नव
तत्तरे ॥ सु० ॥ छ लेश्या छ काय नीर लाल। जयनाकर

जुगतिरत्तरे ॥ शु० ३२ ॥ आठ करम सभाव थीरे लाल। जीव धरेई आठे मदरे ॥ सु० ॥ वचन दोई वसई पञ्चरे लाल। हारई नर भव रत्नरे ॥ सु० ३३ ॥ नव नीयांणा परिहरोरे । वरजो च्यार कषायरे । सु० ॥ पच प्रमाद विषई तनोरे लाल। ईम भाषे जिन रायरे ॥ सु० ३४ ॥ खेत पनर क्रम भुमिनारे लाल। अढई दीपा माहिरे ॥ सु०॥ जिनवर साधु त्रिहु कालनारे लाल। वन्दु मन उच्छाहरे ॥ ३५ सु० ॥ भणता गुणता भावसुंरे लाल। शुमति छतिसी कर जोडीरे ॥ सु० ॥ यश लाभ गणि ईम भणेरे लाल। तुटे कर्मनी कोडीरे । मु० ३६ ॥ इति सुमति छत्तिसी सपूर्ण ।

॥ अथ थुलभद्र सिज्झाय ॥

कमल नयन कोस्याभणे, पिउजी आयोछे वरसात हो, सावण भादो भलि वरें ॥ प्रि० ॥ नदीया नीर न मात हे ॥ म्हारी उलगडी उलगाणा, कइ थलि भद्रने जी ॥ १ ॥ पर देशी पंथि पावसे ॥ प्रि० ॥ आवे निज२ गेह हो, धन तिन पुरुषारो जीवनो जारी नवल नाम्यासु नेह हो ॥ म्हा० २ ॥ आसु आन्या पुरिये ॥ प्रि० । कानी छाती लाय हो, मृगशिर महिने करो पिया पोम ढोय सुख दाय हो ॥ म्हा० ३ ॥ माह माह नहीं शीत नो ॥ प्रि० ॥ रयण छमासी थाय हो, पलङ्ग पथरणा पामरी पीया विन शीत न जाय हो । म्हा ४

फागुण फाग रग रमे ॥प्रि०॥ सगे निज पति साथ हो, चैत्र वन वाडी फल्या, मोन्या अवचन दाप हो ॥ म्हा०५॥ वैसाख शाषा भरी ॥ प्रि० ॥ कोयल करें टहु कार हो, जेठ तड़का लु वालि खम साना सुख कार हो, ॥ म्हा० ६ ॥ आषाढ मास धड़कीया ॥ प्रि० ॥ मेहा बरस्वण हार हो, बाट जोई वणिता घणी जारा पर देसे भरतार हो ॥ म्हा० ७ ॥ इम ढलकता आविया ॥ प्रि० ॥ थूलि भद्र चतुर चोमास हो, हियड़ानी कुपल हासि, पुगी मननी आस हो ॥ म्हा० ८ दीधी समकित सुखडी ॥ प्रि० ॥ कीधी श्राविका सार हो, सिधी मननी कामना सौभाग्य जयजय कार हो ॥ म्हा० ९ इति थुल भद्र सिज्झाय ।

॥ अथ तरकारी सिज्झाय ॥

ढाल काछे लीनो ॥ श्री फल आवा काकडि ॥ सखिहें रूखुजानी जात । तरबुज खीरा आरिया ॥ स० ॥ कारे लानार भांत ॥ १ ॥ सीम ककोड़ा सुन्दरू ॥ स० ॥ पापडी नीलुआ जात । मेथी सरसव मोकला ॥ स० ॥ चौलाइ विख्यात ॥ २ ॥ सन्दलेगो केला सही ॥ स० ॥ पर वलप्रेम अपार, कदुरी तोरी भली ॥ स० ॥ सेव अनार उदार ॥ ३ ॥ मुग मोठ चोलातणी ॥ स० ॥ फलिया र लीयारे हांय मटर डोडी मुक्ष मोकला । स० । बोर वहुविधि

वग गेह जिन्नरें नार नाके । नीच तिम दोप गोपवि करी आ
णा । राति दिन पारका छिद्रताके ॥ ५ म० ॥ निपट लपट
पणे लंपटी कु तणे । वमन देपि तथा तेह नाचे । दांमलर
लम पामि तथा पातकी । अधम जन सवलमन माझि माचे
६ म० ॥ दपि मज्जन हुवे सेलडी सारिपा । पंड पड करि
घांड् कापे । तेह पणि जेह उत्तम तणे पीलतां । अमृत सम रस
सरस आप ॥ ७ म० ॥ कोडि अवगुण तजी जे गुण ग्रहे,
देश परदेश ते सुजस पावे । देखि परगट पणे करण परि,
तेहना । देवराजान परि सुजस गुण गावे ॥ ८ म० ॥ देव
गुरु आराधि सूधे मनि । पारके पेमि मा मृढकांइ । सकल सुख
कारिणी दुरित भव वारिणी । भावसु ए हित सीप माने ॥
९ मरु० ॥ इति हित सिप्या सिझाय ।

॥ अथ आत्म निन्दा सिझाय ॥

हे आत्मा हे चेतन कुदर्णा कुश्रद्धायां, अकार्य प्रवृति ए रस
गर्भाणें अवोटीर दृष्ठा मामायक दोय पडी मात्रमे तू मतें
चिन्तवनकर क्यारे सम्यक्त मोहनीमे, क्यारे मिश्र मोहणीमें
क्यारे काम रागमें, क्यारे स्नेह रागमे क्यारे दृष्टि रागमें
क्यारे तु कु गुरुमें, क्यारे कुदेवमे, क्यारे कु धर्म में
क्यारे ज्ञान विराधनामे, क्यारे दर्शन विराधनामे
क्यारे चारित्र विराधनामे, क्यारे मनो दण्डमे, क्यारे

घचेन दण्डमे, क्यारे काय दण्डमे, क्यारे हास्यमें, क्यारे रतिमे क्यारे अरतिमे, क्यारे भयमे, क्यारे सोकमे, क्यारे दुगछामे, क्यारे कृष्ण लेश्यामे, क्यारे नील लेश्यामे, क्यारे कपोत लेश्यामे, क्यारें ऋद्धिगारवमें, क्यारे रसगारवमे, क्यारें माया सल्लमे, क्यारे नियाणा सल्लमे, क्यारें मिथ्या दर्शण मे, क्यारें तेरे काठिया दोला आणि फिरेछे, क्यारें तेरे अठारे पाप स्थान दोला आण फिरछे, रे तू आत्मा महा दुष्टी, महा पापिष्ठ दुराचारी अरे तू हीन तिणरा जाया रे तु हीण दृष्टि रे तू अघोर पापरा करणहार, रे तू दुष्ट पापिष्ट जीव प्राये तो थारे अनन्ता नु बन्धियां क्रोध अनन्ता नु बन्धियो मान माया लोभरी चोकडा वापडा थारे खपी नही गुणठाणो। आयो नहीं थारे वीर्य गुण पलट्यो नहीं तृष्णा दाह थारे मिटी नही आकुल व्याकुलना। थारे मिटी नही दरिया वरा वर किल्लोल कल्लोल स्याठे। त तो क्रिया करछे सो सुन्य मन सु करेछे धीर्ने गुणसु करीस सो लपे लागसी सुन्य पणे करी जो क्रिया करे छे सो तो छार पर लीपणो सरीषोछे। ए चेतन वापडा सोस लनेतो पापी भाजते महापापी ते अनन्त काय अभक्ष्य शील व्रत जरदो डापली अमल भाग तमाखू गो सोस लेले भाजिया वापडा थारो कठे छुटनो होसी। हे चेतन तू पुद्गलरे वास्ते कितगी एक व्याकुल आकुलनाई करे

छै अहो म्हारे पारस पत्थर म्हारे नव निधान म्हारे रस कूंपौ, म्हारे रसायण चित्रावेल, म्हारे अमृत गुटको वा देवतानें वसकरूं वा पातस्या हुय जाउं वा राजा हुय जाउ वा सेठ हुय जाउं वा सेनापति हुय जाउ जिम तिम पुद्गल उपार्ज्जन करुंरे वापडा थारे तो ए वातां ऊपजेही ऊपजै दशमें गुण ठाना वालानै ही लोभनै परिहार नही तौरे वापरा थारी तो गरज फठेसुं सरे हे चेतन तूं यू मनमे चिन्तव रह्योछै म्हारो घर म्हारो पिता म्हारे माता म्हारो पुत्र म्हारो कलत्र म्हारे पुद्गल अरे चेतन चौरासी फिरतै लापां घर कीया संसार मे न किनारो तूछे न कोई थारो रे चेतन थारी तो तु उत्पत्ति देख कंई वार पुत्रपणे केईवार मा पणें केइवार पुत्रीपणे केइवार स्त्री पणे अे थारा नाच तूं तो देख। ठगरी बेटी कह्योथो हे माताजी हु इतरा पाप करूंछुं सो कुण भोग वसी तो कै धिकार पडै इण ससार मे कोइ किनरो नही औ मनुष्य जन्म आये कुल श्रावकरो खोलियो केवली भाषित धर्मते पुन्यानु बंधी पुन्यसुं पायौ या घडि वापड़ा ते आजन्म दरिद्री ब्राह्मण कागलाने वायर खोयो तिम ते चिन्तामणि रत्न रुप धर्म्म खोयौ थारी आत्मारी गरज कुंकर सरै अरे चेतन तूं कहे हूं रे तू कुण विष्ठा मांहिलो लट तूं होज हुवो मांन रुपिये गज वाह वल चढ्यो अरे संजलणो मानथो

आह्मी सुन्दरी बाई सिषिपा समझावण वाला जद समझ्या बापडा जिणरे औमानसो थारो काहिन किसौ हवाल हुसी ए चेतन देख तु भरत महाराज जिणारे किती एक राज ऋद्ध सोभाग थौ तो कूं धिक्कार हुवौ माहरै राज नों धिक्का०) चक्रवर्त्ति पदवीने धिक्का०) माहरै विषसुखाने धिक्का०) तौ धनछेजे तीर्थंकर महाराजरौ देश विरत धर्म पालेंछे ध०) सर्व विरत धर्म पालेछे धन्य जे दान देवेछे धन्यछे जे शीयल पालेछे धन्यछे जे तपस्या तपैछे धन्यछे जे भावना भावेंछे के भावना भावतां भरतादि केवल तौ ज्ञान केवल दर्शन पाम्या तौ के तु आबरौ बरौरे जीव मत करे उवेतौ तेसठ सिलाकारा चरमसरीरी चौथा आरेरा जीव तुं पचम कालरौ भरत क्षेत्ररो कीडलौ किती एक बात ए चेतन कर्म अजीव वस्तु, रे चेतन तु जीव वस्तु, रे चेतन जीव सुं जीव तो सदा परचोकरै पिण अजीव सु क्यु करै तु निर्बल कर्म महा सबलरे चेतन कर्म तौ चवदे पूर्व धारी यौने उपापट कीया इग्यारमे गुणठाणेराजीव भवन भावन केवलीजी कमल प्रभाचार्यजी महाविदेहरा मानवियाने डिगायदीया तू पचम काल रे जीव किती एक बात आठकरम आठावनसौ प्रकृति प्रभु किमकर जीत्या जाय सग लगै प्रभु आय हमारी वीनती हे चेतन चारित्रकी फोजमां रहो सद्बोध मुहतैरो अज्ञामे

रहि सदा आगम स्युं परचो राप संतोप गुण ग्रहणकर तृष्णा रूपी दाहने पूठी मार ज्यु थारी आत्मारी गरज सरै धन्यछै साधु मुनिराज पाचे सुमते सुमता तीन गुप्ते गुप्ता छकाय ना पीहर सात महा भयना टाल्न हार आठ मदना जीपक नव विध ब्रह्मचर्य व्रतनी वाडना राखण हार दस विध यति धर्म ना उजवालक इग्यारे अगना भणणहार बारै उपांगना भणणहार कुशी सकल मल मलिन गात्र चारित्र पात्र धन्यछे जे मुनि प्रभु जीनी आज्ञा प्रमाणे धर्म पालै रे चेतन तनै फ टे उदे आवसी रे चेतण थारे उदे कठासु आवे रे वापडा थारे संसारगी वहुलताइ ससाररी थिति घटीनही तिवारे तनै पठासु उदे आवे धन्य छे जिके देस विरती श्रावक जिके प्रभुजीनी आज्ञा प्रमाणे धर्म पालै प्रभात उठि सामायक करे पडिकमणो करै देव दर्शन करे प्रभु जीनी द्वादशागनी वाणी सुणे देव पूजन देव वदन गुरु वन्दन दान तपश्या शील पांसो संझाये देवसी पडिकमणो धन्यछे देश विरती श्रावक प्रभु जिनी आज्ञा प्रमाणे जे षडावश्य करै मनेई कदे उदे आ- वसी रेचतन तु इसा पोटा काम करे थारा खोटा परिणाम देखता तो थारे खोटी गति आवसी सामायक मन शुद्धकरो निन्दादि कथा सव पर हरो पढ़ो गुणो वाचन खपकरे जिम मन सायर लीला तिरो थारी सामायक आछे सामाइक मन

असुद्ध करे निन्दा विकथा बहुली करे तने वाचन पठणकी खप करैछै तेतो श्रुत ज्ञाननो बहुमान नथीयो श्रुतज्ञानजीरो गुणनो नथीयो तारे थारे ज्ञानावरणीरो अन्धकार पड़ल फिर गयो श्रुतज्ञान जीरो आराधन करेछे श्रुतज्ञान जीरो गुण णो न करे तो बहु मान न करे छे ज्यारा ग्यान दर्शन निर्मल न हुवैछै जी काई रे ज्ञानरी प्राप्त हुवे जि कांईरे केवल ज्ञान दर्शनरी प्राप्त हुवे जिकांई जर मुक्ति रूपणी स्त्री पाणी ग्रहण करे कांइ दिवस प्रते दिये सुजाण सोनाखाण्डी लक्ष प्रमाण तेहने पुन्य न हुवे जेतलो सामायक कीधो ततलो पिण चेतन तु इण भरोसे भलेमारे चेतन आ थारी सामायक हुवा नही भाई आसामायकतो उत्तम जीवांरि छै भाई आ सामायक आनन्द कामदेव शङ्ख पक्लीरी पूरण दास सेठ चन्द्रा वतसक राजारी तु इये भरोसै भूलं मा रे चेतन थारी तो सामायक आछे कामकाज घरणा चिन्तवे निन्दा विकथा करे खिज रहे आर्त रौद्र ध्यान मन धरे ते सामायक निष्फल करे सामायकतो आछे भाई। आप परा औसर क्रमोगिणे, कञ्चन पत्थर समवड धरे, साचे थोड़ो गमतो भणे, ते समायक सूधै करै चन्द्रावतसक राजा जे सामायक व्रत पाल्यो तो अरे चेतन स्व आत्मानो भलो चाहे पर आत्मानो भलाचाहे जेपर आत्मासौ बुरो न चाह्यो स्व आत्मानो हीत चाह्यो रे चेतन

मोक्ष सदा जिम गह गहे श्री पुन्य कलश गुर सीस रंग-जे
रग कहे ॥ ९ ॥ इति व्यसन सिझाय ॥

॥ अथ जिन रक्षित जिनपाल चोढालियो ॥

दोहा) अनन्त चोविसी होई गई । वलि अनन्ती जान प्राक्रम जांरा अति घना मिठि जांरी वाणी ॥ १ ॥ पाप अठारे अतिबुरा जे ग्रेह महा अपराध । मीत मिलाई नागिणे सगला अपगुण लाय ॥ २ ॥ घरमे धनछे सामठो । तोहि न पुगी हाम । पछ रहछे प्राणियो, किम पावे शिवपुर ठाम ३ ॥ दुखदाई ए परिग्रहो मोटो माया जाल । दोन्या भाई दुख सह्या, जिन रीषने जिन पाल ॥४ ॥ किन नगरी वसता हंता, किम दुप सह्यो अपार । साव धान थई साभलो, तेहना कहु विचार ॥ ५ ॥ (ढाल) (रेजीव विषयन राचीये, एदेशी ॥ चम्पा नयरी सुहावनी, दीठा हरषित थायोरे । लोक घना सुखीया वसे, सेठ घना तिन माहिरे ॥ धनरा लोभि प्राणियाः ॥ आकनी १॥ सेठ काकदिना डीकरा, दोनु वड़ा वेपारीरे ॥ नांवा ले समुद्र माहिने उतर्या वार इग्यारीरे ॥२धन.॥ लाभ कमावन लोभीया माल अमामो भारीरे ॥ लोभे लागामन माहिलो वारभी वार हुवो त्यारीरे ॥ ३ ध० मात पिताने इम कहे मेतो जाम्या लेवा भारीरे, मात पिता

चलतो कहे भली नहि वारमी वारंगे ॥ धा० ४॥ धन सच्यो छे एकरयो, वो कद लागे लेवेरे सात पीडा लगि नही निठई, अण दुवो दुष कुण देवारे ॥ ध०५ ॥ मा बापा घणो पालीयो तोहीन रह्यो लिगाररे, साद्य ले तिय जोयने सगुद्र चल्या निर धाररे ॥ ध० ६ ॥ अनेक जोजन जाता थका हुईय उलका पातोरे देखिने दरण्या घणा, अब करेलो घातोरे ध० ७ ॥ अकाल गाजे वीजली हि नोजा कापवा लागारे बायरा सोहठी पडी धम्म कीया गर्गारे ॥ ध० ८ ॥ विद्या धर नी डीकरी विद्या वीमर पडावरे गुडे देषी बासग डील्या डरता दर बाहिरे आयारे ॥ ध० ९ ॥ नाव तणा विसतार छे सूत्र ज्ञाता माहिरे, हीन पुनीजा जीवडा डूब रह्या जल माहि रे ॥ ध० १० ॥ हा हा रत्न थ्याया घना एक कपाटो हाथे आयारे बीजा थ्या सो सव डुबीया बेतु भाई तरया जायरे ॥ ध० ११ ॥ रत्न धीप निहा आवीया ध० मन मान्या फल तिहा खायारे नालेर भाजी तेल काडीयो रे चोपट बेठा छायरे ॥ ध० १२ ॥ दोहा ॥ रैणादवी तिन आसंगे रहे जो दीप मझार पाप करी हरषित हुवे सुली दे भय कार ॥१॥ नित नवा सुख भोगवे रहे है विषेम लाग महिल अति रलीयामणा च्यारो कानी बाग ॥ २ ॥ दोय भाई चिन्ता करे पूरव बात विचार आरत ध्यान करता थका, देवी आवी तिन

वार ॥ ३ ॥ खड्ग तेहने हाथमे कीधा कोप करूर आल्यां राती झल फले मुडोखोटी दीसे नूर ॥ ४ ॥ अरे काकन्दी ना डीकरा वचन कहे निरधार थे मोसु सूख भोगवौ नहितो खण्ड करु दोय च्यार ॥ ५ ॥ मान्यो वचन देवी तनो ले चल्ये आवास अशुभ पुद्गल काडीयो भोगवे भोग विलास नित अमृत फल भोगवे नित नित नवला वेस काल किंतो यक नीकल्यो आयो इंद्र आदेश ॥ ७ ॥ (ढाल) बीर जीनन्द समो सन्यो (एदेशी) हाथ जोड़ी ने इम कहे सां-भल मोरी वातरे (वालम मोरा) मुझ वीनती अवधार ज्यैरे लाल। हुं समदर बुहारण जायरे ॥ वा० मो० १ ॥ ज्यो थाने नही ओलगे रे तो जाज्यो पूरब ले वाग । वा० । दो रुत ना फल पावज्यो रे कीज्यो मन रंग रागरे ॥ वा० २ ॥ तेफल खाधां तिण पिछेरे जायसी काम विकाररे काम दीपावण रोह छेरे लाल। मनसा पुरण अहाररे ॥ वा० मो० ३ ॥ रुंप घणा तिण वाग मेरे लाल। सपर घणा बखाणरे वा० डींडका मोरो न कोईलिरे लाल बोलेछे मीठी वाणरे ॥ वा० मु० ४ ॥ कदाच जो नही ओलगेरे तो वाग उत्तर ले जायरे वासर दहे मरुत भोग वोरे लाल आनन्द करो मन मांहिरे ॥ वा० मु० ५ ॥ वलि पछीम नो वाग छे बसन्त ग्रीष्म फल दोयरे वा० कीड़ा कन्यो तुम मन रलीरे थे

दक्षिण वाग मत जायरे ॥ मु॰ वा॰ ६ ॥ तिणमें सरपछ मोटकांरे चड रुद्र काला नेन रे, पछेपछतावो होवे तो भणीरे थे मन माहि लासो एण रे ॥ वा॰ मु॰ ७ ॥ वैरी दुसमन जे हुवे रै तिनरी न रायो कांणरे वा॰ तिण कारण मे पालियारे नाती हणैगा थारा प्रानरे ॥ वा॰ मु॰ ८ ॥ ए तीनोंही वाग मेरे सदा काल गृह कार रे । सुख साता घणी पाव ज्योंरे जोय ज्यौं हमारी वाटरे ॥ वा॰ मु॰ ९ ॥ इणिं शिखावण दें वलीरे' कही ने वारु वार रे । दोनो भाई निकल्यांरे लाल आया वागा माहि रे ॥ वा॰ १० मु॰ ॥ दोहा) दोय भाइ चिन्ता करे पूरव वात विचार किण कारण ईण पालिया चालो दक्षिण वाग ॥ १ ॥ तिणमे दूर गय अतिघणी हाड घणा तिन माहि, सूली पूरष ज देपतां अग ज ढीला थाय २ किण नगरी वसतो हतो क्यों वसि पडीयो आय कुण अपराध ज ते कीयो तो कू सूली दीयो चढाय ॥ ३ । हुं काकदी को वाणियो धन वेचन को जाय नाव डूबी हू नीसन्यो देवी के वसि पडीयो आइ ॥ ४ ॥ ससारें ना सुष भोगवी काल कीतो इक जाय थे इनके वस ही पव्या मोने सूली दीयो चढाय ॥ ५ ॥ जे वछो वचवा तणो, तो वाग पूरब ले जाय, सेलग जक्ष पग झालिज्यो थाने देसी घर पहुचाय ६ ॥ ढाल ॥ अहो वीर तणी देशने॰) एतो डरपांहे अति

म्हणोरे- एतो झलिय न दीसे-नारीरे लाल। आपरी जाणो फालते मानें कुण हिवलै जाय पार रे लाल नारीना नेह निवारिए एतो आव्या पुरव ले बागमे जक्ष आव्यां तिनवार रे लाल के हुने तारु इहा थकी केहने उतारु पाररे लाल ॥ना० १॥ एतो हाथ जोड़ी नें इम कहै म्हेतो दोन्यु दुखीया भाइरे लाल, मयाकरी सुझ उपरे अवला नें-पार उतार रे लाल ॥ ना० २॥ एतो देवी तनो मोह मत आनज्यो.थ्येतारे कांधे वेठो आय रे लाल, मैं तो ज्यो मन, डोलो जानसूं, नीचे नाखि देसो तत कालरे ॥ ना० ३ ॥ एतो धीरज देइ ने चालियो देवी आइ तिणवार रेलाल, हाथमे-खडग डरामणा, मुखवोले मारो मार रेलाल ना० ४ ॥ एतो कटुक वचन कह्या घणा डरप्पा नहिय लिगा रंरे लाल, तव सिणगार-सोले किया धुंधट काढी तिणवार रे लाल ॥ ना० ५ ॥ एतो दीन वचन बोल्या घणा मोने काय मुको निरधाररे लाल, इणि अठवी मे एकली मोने कुण तणो आधाररे लाल ॥ना०६॥ एतो ससार ना सुख भोगवी म्हाने इम दीजे छेहरे लाल प्रीति चितारो पाछली मुझ अबला सामो देखीरे ॥ ना०७ ॥ एतो अवधि ग्यान करि देखियो जिण रखियो चालियो जाणिने लाल भाग्य भला रलियामणा एतो किण विध विचारे नारि लालरे ॥ ना० ८ ॥ एतो जिन पालियां कठोर छे-हिये दया नहि दिल माहिरे लाल एतो

अंतर दुख धरे घणाए आक्रद करय अपार रेलाल ॥ ना०९ पग पुजाने चित वरय देखो थाग जोवण हारे लाल, एतो पुलां तणी वर्षा करय तिहा गंध चूणको मेहरे लाल ॥ ना० १० ॥ एतो रत्न घटा बजाय ने, तिहा वाल्य बोल सनेह रे लाल, एतो गुण गुणा ट करय घना आक्रद करय अप र रे लाल ना० ११ ॥ एतो कत तोने जरा देखती दख्यो थ्याहरो दन्हहार रेलाल, थ्येतो काइ मोसु रुखा थ्यया म्हारे हिवडो फाटो जायरे ॥ ना० १२ ॥ वचन कथन कह्या घणा जिन रिखीयो पायो जाणरे लाल ॥ ना० १३ ॥ एतो वचन विषय रस सो भरयो तिहां जाग्यो मोह विकार रेलाल, मनेडां डाल्यो जक्ष जांणिने नीचे नाख दीयो तिनकाल रे ॥ ना० १४ ॥ एतो आइ तिहा उतावली आक्रंद करय अपार रेलाल क्रोध करीने मारियो एतो दिशी द्रिशा दिया उछालरे ॥ ना० १५ दोहा) जिन रखियो दुखीयो थ्ययो, जुवती राग प्रमाण, चम्पा नगरी पुहन्यो नहि, बीच विछोहा जाण ॥ १॥ वैरागय घेर छोडिने विषय साभा निहाल सिव नगरी पुहच्यो नहिं बिच-में कीधो काल ॥ २ ॥ रयणा देवी तिम कांमणी, सेवे वहू जन जण साथ, विषय रस मन डोल्यो नहीं त्याने देसी पार उतार ॥ (ढाल) घृत नीयम न भाजे जाणी जिन पालज मन मेधारी, एतो कपट मई दिसय नारी पूरब लो नेह नियाणो एतो

काचो सगपणा जांणो जक्ष उपर निरधारी, समुद्र थी पार उतारी जिनपाल ना कारज सारो चंपाने वाग उतारो ॥ १ जिनपाल घर जब आयो सगलो ही विरतंत सुणायो, जिन ऋषिको सोच ज कीयो जाने फाटण लागो हीयो ॥२॥ सुत्रा ना कारज कीना, संसार दुख सोवीना, एतले गुरु चम्पा आया सगला के मन भाया ॥४॥ जिन वांनी सुणी वैराग्यो, घरसुं तेहनो मन भाग्यो मन सिव रमणी सुंलाग्यो संजम लियो वैराग्यो ॥ ५ ॥ इग्यारमे अगज भणीयो सोधर्म देवलोक हुणीयो जप तप करि काया सोपी म्हा विदेह जासी मोक्षे ॥ ६ ॥ इति श्रीजिन राक्षित जिनपाल चोढालीयो सपूर्ण ॥

अथ पंचेंद्रीकी चौपाइ ॥

श्री जिन वदन निवासनी वंदु सारद माय कविजन कुं सानिधि करें कविता पूरो थ्याय ॥ १ ॥ नमुं पंच परमेष्ठि कुं वंछित सुख दातार सेव्या इह परभव मिले ऋद्धि घणे विस्तार ॥ २ ॥ गुरु दरियाव गुण लहर हे नमिये तेहना पाय, मंगल धुरि इत्यादि सब मणमु सीस नमाय ॥ ३ ॥ इकादिन मनमे ऊपना अजब कुतूहल एक पंचेंद्री वर्णन करू हूवा विवाद विशेस ॥ ४ ॥ आप आपणा मुख थकी बहुत बडाइ कीध, मो सब कहुं विस्तार पणे पाछे किण जस लीध।

५ ॥ ढाल १ ॥ मेघ मुनि कांइ डम डोलेंरे ॥ (एदेशी) तिण काले ने तिन समेंरे, इकादिन एक उद्यान । समव सरया तिहां साधुरे, बहु गुण लब्धि निधान (साधुजी) तारण तरण जिहाज, सारें बंछित काज ॥ सा० १ ॥ नहि ममता समता विषे रे राचि रह्या दिनराति कारमी काया जानिने र धरम ध्यान मद्द गात ॥ सा० २ ॥ आगम साधु तणा सुण्यारे आया चौविह सघ, वंदण करिनें आगलेंरे बैठा मन उछरंग ॥ सा० ३ ॥ विद्याधर तिन अवसरे रे क्रीडा करिवा काज आव्या तेहिज वन विषेरे वांद्या श्री मुनिराज ॥ सा० ४ ॥ जिम रक मारग जावतांरे निधान मिल्यां सुखथाय तिम विद्याधर हरख थयारे आनद अग नमाय ॥ सा०५ । श्रावक सकल सघ हित कारणेरे-दे देशना मुनिराज ॥ भव सागर थ्यो तारि वारे कहिये साचि जिहाज ॥ सा० ६ ॥ सुर नर हित कारणे रे पचेद्री व्यारव्यान, इन कुं पुष्ठ करतां थ्यकारे देवे दुक्ष निदान ॥ सा० ७ ॥ अहि निस समरण करता थ्यकारे पालवी जे दिनरात, तौपिन दुख दायक अछेरे नरके निहचे पात ॥ सा० ८ ॥ जिम कोइ कुलटा नारिया रे पतिने बहु दुखदय, तिणथ्यी अधिक ए जाणिज्यो रे मति सदेह करेय ॥ सा० ९ ॥ भणी पहेली ढालमेरे देशना अधिक रसाल कृष्ण मुनी हिव आगलेरे । आरिंगां रुप विसाल ॥ सा० १०

फाचो सगपणा जांणो जक्ष उपर निरधारी, समुद्र थी पार उतारी जिनपाल ना कारज सारो चंपाने बाग उतारो ॥ १ जिनपाल घरे जब आयो सगलो ही विरतत सुणायो, जिन ऋषिको सोच ज कीयो जाने फाटण लागो हीयो ॥२॥ सुत ना कारज कीना, संसार दुख सोवीना, एतले गुरु चम्पा आया सगला के मन भाया ॥४॥ जिन वांनी सुणी वैराग्यो, घरसु तेहनो मन भाग्यो मन सिव रमणी सु लाग्यो सजम लियो वैराग्यो ॥ ५ ॥ इग्यारमे अंगज भणीयो सोधर्म देवलोक छुणीयो जप तप करि काया सोपी म्हा विदेह जासी मोक्षे ॥ ६ ॥ इति श्रीजिन रक्षित जिनपाल चोढालीयो सपूर्ण ॥

अथ पंचेंद्रीकी चौपाइ ॥

श्री जिन वदन निवासनी वंदु सारद माय कविजन कु सांनिधि करें कविता पूरो थ्याय ॥ १ ॥ नमुं पंच परमेष्ठि कु वछित सुख दातार सेव्या इह परभव मिले ऋद्धि घणे विस्तार ॥ २ ॥ गुरु दरियाव गुण लहर हे नमिये तेहना पाय, मंगल धुरि इत्यादि सव प्रणमु सीस नमाय ॥ ३ ॥ इकदिन मनमे ऊपना अजव कुतूहल एक पंचेद्री वर्णन करू हूवा विवाद विशेस ॥ ४ ॥ आप आपणा मुख थकी बहुत बडाइ कीध, सो सब कहु विस्तार पणें पाछे किण जस लीध

५ ॥ ढाल १ ॥ मेघ मुनि कांइ डम डोलेंरे ॥ (एदेशी) तिण काले ने तिन समेरे, इकादिन एक उद्यान । समव सर्या तिहां साधुरे, वहु गुण लवधि निधान (साधुजी) तारण तरण जिहाज, सारें वंछित काज ॥ सा० १ ॥ नहि ममता समता विषे रे राचि रह्या दिनराति कारमी काया जानिने र धरम ध्यांन मइ गात ॥ सा० २ ॥ आगम साधु तणा सुण्यारे आया चौविह सघ, वदण करिनें आगलेरे वैठा मन उछरग ॥ सा० ३ ॥ विद्याधर तिन अवसरे रे क्रीडा करिवा काज आव्या तेहिज वन विषेरे वांद्या श्री मुनिराज ॥ सा० ४ ॥ जिम एक मारग जावतांरे निधान मिल्यां सूखथाय तिम विद्याधर हरख थयारे आनद अग नमाय ॥ सा०५ । श्रावक सकल सघ हित कारणेरे, द्ये देशना मुनिराज ॥ भव सागर थ्यी तारि वारे कहिये साचि जिहाज ॥ सा० ६ ॥ सुर नर हित कारणे रे पचेद्री व्यारव्यान, इन कु पूछ करतां थ्यकारे देवे -दुक्ख निदान ॥ सा० ७ ॥ अहि निस समरण करता थ्यकारे पालवी जे दिनरात, तौपिन दुख दायक अछेरे नरके निह्नचे पात ॥ सा० ८ ॥ जिम कोइ कुलटा नारिया रे पतिने बहु दुखदेय, तिणथ्यी अधिक ए जाणिज्यो रे मति सदह करेय ॥ सा० ९ ॥ भणी पहेली ढालमेरे देशना अधिक रसाल कृष्ण मुनी दिव आगलेरे । आनिका रुप विसाल ॥ सा० १०

(दुहा) इण अवसर देखन पंछ, करि इन्द्रि न की पक्ष विचार बोले तंव विनय वत बहु दक्ष ॥ १ ॥ भगवन हम क्या दुख्हे हम में क्या तक सीर हम विन जगमें को नही हमसे सबको सीर ॥ २ ॥ एकेंद्री आदिक सबे हम सब पें परतक्ष हमत तप जप होतहे मति करो खोटो पक्ष ॥ ३ ॥ जो कोई इद्री हीनहे लोक बतावे खोड, इद्री वीना सोभा नही कोन करे हम होड ४ ॥ (ढाल २) वाडी फुली अतिभली (एदेशी) हमही तें सजम पले (सुणि साधुजी) हमते क्रिया अनेक, साभले साधुजी हमहे सबकु वालही सु० हम विन होयन एक ॥ सा० १ ॥ नर नारि लक्षण कह्या सु० । सामुद्रिक के माहि सा० बतीस लक्षण सुभ कह्या सु० । पचेंद्री के माहि ॥ सा० २ ॥ तीर्थ कर, चक्रवर्ति तणा सु० । एक हजार ने आठ सा० । लक्षण सुभ इद्री तणा सु० कह्या सिद्धांत में पाठ ॥ सा० ३ ॥ पचकी बात माने सहु सु०, पाच कहे ते साच, सा० तीर्थ कर के बदनपे, सु० पांच इद्री रही राच ॥ सा० ४ ॥ नाहक दोस न दीजिये, सु० ना बोलो अवरण वाद सा० निद्या न करिये केहनी सु० तुम छो गुणे अगाध ॥ सा० ५ ॥ नाक बिना सोभा नही सु०, किम जाणे गध भेद सा० कान विना कण साभले सु० जीव अजी वना भेद ॥ सा० ६ ॥ नयन विना जग अंध हे सु० कुण देखे प्रभु रुप, सा० जीभ विना चाखे नही सु०, खट-रसना-

जि सरूप ॥ सा० ७ ॥ कठोर ने कोमल जानिये सु० फरस-ना लक्षण जोय सा० हम विन को जाणे नही सु० एहना जा लक्षण जे होय ॥ सा० ८ ॥ दोइ तीन पाच पांच है फर-सना आठ विचार सा० हम विना निर्णय कुण करे सु० वस्तु जे सार असार। सा०९। साधु कहे तुम पांच हो सु० तुम मांहे कुण सिरदार सा० चरचा तिणसू कीजीये सु० कहिये अर्थ विचार ॥ सा० १० ॥ कृष्ण मुनी उत्तर तणी सु० पभणी बीजी ढाल ॥ सा० ॥ रूपअरूपी कहे साभलो सु० आगल वात रसाल ॥ सा० ११ ॥ (दुहा) नाक तणी पख होइ ने वि-द्या धर तव एक, बोले अति हरपित थइ सांभलि ज्यो सुवि-वेक । १ । ढाल, इम महिमा रोहिणी तणी (एहनीः) नाक कहे जगमे वडी मुझ सम औरन कोइरे, नाक रखण के कारणे जतन करें सहु कोइरे। ना० २। प्रथम वदन पे देखिये नाक सुं न्दर आकार रे, नाक विना अलखामणा रूप न दीसे सार रे। ना० ३। नाक नें कारण खर चिर, द्रव्य नी कोडा कोडी रे, नाक रह्या तो सहु रह्या, कुण करि से मुझ होडीरे। ना० ४ बाहु बल जूध आदर्या, पणि न नम्या चक्र वर्तीरे, देस तज्यो दीख्या महो, नाक सुजस सुणि पत्रीरे। ना० ५। सगर चक्र-वर्त्ति जे थयो छल थी दीक्षा लीधीरे, नाक रखण के कारणे पित नवि मनसा कीधीरे। ना० ६। रावण सीता अर हरी राम-

चंद्र जुद्ध कीनो रे, सीता आणी जोर सुं नाक रखण जस लीनो रे । ना०७ । धीज कियो सीता सती अगनि कुंड मांहि वेठी रे, नाक रखण के कारणे संजम लीनो सेठी रे । ना० ८ । राय दशारण आदऱ्या संजम नाक नें काजेरे, इंद्र हाऱ्यो चरणे नम्यो स्तवने सूर पति साजेरे । ना० ९ । आज्ञा कारी श्रेणिक तणो अभय कुमर बुद्धि धारि रे, तात तूं कारो नवि सह्यो ततखिण संयम धारीरे ॥ ना० १० ॥ नाम कहां लग में कहूं जीव घणा में ताऱ्यारे, नाक तणे परसाद थी दुरगति दुख्य निवाऱ्या रे । ना० ११ । सुगध सकल ही जातीना नाक सकल आश्वादे रे, जिनपति देह सुगध जे, लेवे नाक तने आल्हाद रे । ना० १२ । मुख मंडण ए नाकछे जन मन मोहन हारी रे, कृष्ण मुनी तीजी कही, रूपें इण अधिकारी रे । ना० १३ । (दुहा) बीजो विद्याधर कहै, त्रटकी बोले बोल, क्यौं अभिमान एसा करे, हम आगे तु गोल (ढाल ४) कपूर होवें अति ऊजलो रे (एदेशी) कान कहे सुणि नाक तुरे तुं क्यां करे गुमानं, जो चाकर आगे चलेरे, तौ नांहि भुप समान रे, जगमें कान वड़ो शिरदार (एआकणी) पानी झरें नित्त नाकसें रे वलगम वँह अपार, गुन २ कर वोले सदारे लाज न आवें गमार रे । ज० २ । तेरी छीक सुनें जिकेरे करेन उत्तम काज मुंदें तो हि दुरगंधे मेरे, तो हीन आवें लाजरे । ज० ३ ।

ऊंउ वृषभ नारी तर्णारे, रीछादिक जगमाही जिहां तिहां तो कुं छेदियेरे तौवी लजाती नाहिरे। ज० ४। तीर्थ कर जिनराज नीरे वानी सुने चितलाय जाके प्रसादे जीव कुरे निर्मल दरशण थायरे। ज० ५। कर्म विपाक सुणी करिरे, बीहे भयथी जीव काने सुनि कर आदरेरे धर्म करे ते सदीवरे। ज० ६। झूले कुडल कान मे रे मणि मुक्ता फल सार, झग मग जोति होय रह्यो रे देखे सब संसार रे। ज० ७। राग रागणी सांभले रे, मीठे२ नाद अंग पुरव सहू सांभले रे, कांन तणे परसाद रे। ज० ८॥ कान सुने खट द्रव्य कीरे चरचारे अधिक रसाल कृष्ण मुनी चौथी कही रे, रुपे एहवी ढालेरे। ज० ९। (दुहा) जे मे तारया ते कहू,सांभलिज्यो चित लाय मुझ सर वर कहो कुण करें आवू सहूने दाय (ढाल ५ मी) धरम करो श्रावक तणो (एदेशी) द्वादशांग वार्नी सूनी गणधर गिरुवा कहाया रे त्रिपदी दे जिनराज जी सुनिकर अग रचाया रे, कानन सुनि ध्यान ध्याइ ये (आंकणी) ऋषभ जिणेसर पामियो निर्मल केवल ग्यानरे सुनि भरतेस महोच्छव कियो पीछे चक्र परमान रे। का०। वचन सुन्या नारी तणा ततखिण धन्ना छाडी नारी रे, साल कुमर सुनि नीसन्या पहुत्या घन मझारी रे। का० ३। साधु अनाथ थया इण परेजी श्रेणिक समकित पायारे पदम नाभ जिनवर हूस्ये कान तणे स.

प सायरे। का० ४ ।आज हमारे हाथे चढो चोर स्वर्ण सुर नाम रे वीर वचन थी उवन्या सयम ले गुण धाम रे। का० ५। जे जीवा ए सांभली काने नेमजी नी वांनी रे,द्वारिका दाह थी ते वच्या चारित्र लीया गुण खाणी रे। का० ६। नाग नाग णी कानें सूण्या महा मंत्र नवकार रे पार्श्वनाथ परसाद थी सुख विलसे नाग कुमार रे। का० ७। जंबू कुमर वांनी सुनी चोर नारि प्रति वुझ्यारे, कानन सुनी कानन गए सूरन मिलि स हु पूज्या रे। का० ८। सघ चतुर विधि सहु तन्या नाम कहांलो आखु रे काननके ऊपगार थी शिव सुखना फल चाखेरे। का० ९ कृष्ण मुनि पाचामि कही ढाल इण अधिकार रे रूप ऋषी कहे सांभलो आगे जे विस्तार रे ॥ का० २०॥ (दुहा) आंखि कहे रे कान सुनि, मुझ आगे तु दीन, विद्याधर तीजो कहे हु छू परम प्रवीन। ए ढाल ६। धना कहे निज मातने (परदेशी) आंख कहे रे सुनि तूं कान कहाकरे अहंकार गर वन कीजे रे, तूं मेल सूं नित भुयो रहे लाजे नाहि गमार। ग० १। बात बुरी तें सुणी करी तत खिण तोडे प्रीति ग० तुझ सम दुष्ट न दुसरो रीति से करे अन रीत। ग० २ कान थी बात सूणी करी उपजे क्रोध तत काल। ग० नर नारी भिडि भिडि मरे कान सुनी घे गाल। ग० ३। नर नारी के कान जो पहिले वीध्या जाय ग० वड बड बोल न बोलि-

यें क्यों एतौ गर्र वाय । ग० ४ । वांता सुने जो कानसें साची झुठी थाय ग० आख्या देखी वात जो फेरन तामें कहाय । ग० ५ । इन आखन से देखिये तीर्थंकर को रूप ग० रोमें राय हरखें घणो सुख पावे चिद्रुप । ग० ६ । सुरपति दरसण कारणे कीया नयण हजार ग० गणधर साधु नें देपवा आवे सकल ससार । ग० ७ । जीव दया सुझ थी पले ऊपजे पून्य अपार ग० आखिन के परसाद थी पहुचे भव दधि पार । ग० ८ । देव गुरु मारग देखिये मात तात सुत भ्रात हीरा लाल सहु परखिये साझ अने परभात । ग० ९ । जेमे ताऱ्या ते कहु कहिस्यों सुझ स्याबास ग० कृष्ण मुनि छठी कहि वस्तु जे सार असार (ए ढाल ७ मी) तप सरिसो जग को नहीं (एदेशी) आगम सुत्र सिद्धात जे, और जो ग्रथ अनेक हो। मुनिवर० ॥ भेद ते आंखिथी जाणिये और जो वस्तु विसेष हो मु० (जन मन मोहन आखडी) समव सरण ऋद्धि देखिये नाटिक बत्तिस बद्ध हो । मु० । लक्षण गज घोडा नर तणा दुझ विन कुण देखेज हो ॥ मु० २ ज० ॥ नव निधान माहि अछे सास्वता पूस्तक जेह हा मु० बाची विधि जाणे सहु, चक्री होवे तेह । मु० ३ ज० । इर्या सुमति निहालता मारग चाले साध हो मु० आद्र कुमर वेस्या देखिने तत खिण सजम लाध हो । मु० ४ ज० । प्रत्येक बुद्ध चाऱ्यो भया देखीने अणगार

हो० मु० दरसण वीर जिणंद ने वंदन थइ सुरकार हो। मु ०५ ज० । मान स्थभ देखी करी ततखिण जाय मान हो। मु ०४ पूरव भव देखी करी श्रेयांस दीया दान हो। मु, ६ ज०। अगुली भरथ निहाल ने पाम्यो केवल ज्ञान हो मु० बादर स्व रुप देखी करी सयम ले हनू म न हो। मु० ७ ज० ॥ सूर पति रुप वखाणियो चक्री सनत कुमार हो। मु० मलिन रुप देखी करी लीधा सयम भार हो ॥ मु० ८ ज० ॥ वाघनि खाधु बिदारता दांते दृष्टि निहार, हो। मु० पूरव भव तस सांभर्यो ए मुझनो उप गार हो। मु०९ ज०। नाग कहा लों लीजीये जीव अनेक मे तार्या हो। मु० कृष्ण मुनी सातमि कही रुप जे कारज सार्या हो । मु० १० ज० । (दुहा) विद्याधर चौथो कहे जीभ तणी पख होय मुझ आगलि ने बापडी किसे करम की जोय (एढाल ८ मी बनारसी की) धीज करे सीता सतीरे लाल (एदेशी) जीभ कहे सुणि आ-खडी रे लाल झुठा गर्व मकार हो कजलोटी काजल करि काली रहे रे लाल तौ वि नाहि लजत हो। क० १ जी०। छोठे मुख वडी बातडी रे लाल बोलतां हासी थाय रे क० सरम नही कुलटा भणी रे लाल आपुही गाये जाय रे। क० २ जी० । कायर ज्यौं डरती रहे रे लाल धीरज नाहि निंटोल रे क० बात बात मे रोवती रे लाल बोले गरब ना बोल रे

। क० ३ जी० । जिहा तिहां मटका करे रे लाल, गटका रुप ने देखिने क० पद्मोतर हरी द्रोपदी रे लाल रुप चित्राम नो पेखि रे । क० ४ जी० । रूप अधिक देखी करी रे लाल रावण हरियो सीत रे क० रावण राम हण्यो तबे रे लाल ते करे वहु अन रीत रे । क. ५ जी० । आछो रुप वस्तु देखिने रे लाल तू मनमे ललचाय रे क. दुष्ट न को तुझ सारिखो रे लाल ते कन्या वहूत अन्याय रे । क. ६ जी० । जीभ कहें मो ते सबेरे लाल जीवत हे संसार रे क. षट रस भोगी मे अछुरे लाल पाळु सब परिवार रे । क.७ जी । मो विन आंखिन खुलि सके रे लाल कांन सुने नहि चेन रे क. नाक न सूघें सूगंधि कुंरे लाल मो विन नहि कछु चेन रे । क. ८ जी० । मंत्र जपत हे जीभसु रे लाल आवें सूर नर धाय रे क० चाकर थइ सेवा करेरे लाल जीभ तणे सुपसाय रे क. ९ जी० । जीभहि ले जिन नाम कुंरे लाल जपता लहे गुन माल रे क. कृष्ण मुनी आठमी कही रे लाल रुप क्रुपी ए ढाल रे । क. १० जी० । (दुहा) मीठा बोले कोयली झीणी राति मझार बिरहण मदन जगावती कौन सहें खग धार । १ । सवको लगे सुहामणा केकी नो किंकार आदर पामे पाहुणा जीभ बडा संसार । २ ।(ढाल)आठमी, ईडर आंबा आंबली रे (एदेशी) अंग उपांग भणे जीभ सुरे, और जे

पूरव सार, जीभ हि अर्थ करे भलारे समझे सहु नर नारी (जीभ डली बोले मीठा बोल । जी० १ । वेण अमीरस सारिखारे, जिनपति ने मुनि राज समझावे सब जीवने रे सारे आतम काज । जी० २ । जीभ जगत सब जीतिये रे जीभ हिते सब हार जीभ हिते सब पद मिलेरे गणधर आदि क सार । जी० ३ । जीभ हित सब गाइये रे जीभते पठिये वेद राग रागणी स्वर तत्रि मिलेरे, ताल तणा वहु भेद । जी० ४ जीभ ते जीव खमाइ ये रे लख चौरासी जाण जीभ हि पडि कमणा करेरे आलोयण मन आण । जी० ५ । बल देव वनना जीव नेरे पडि बोध्या दिन राति उपगारी जीभ करे घणारे प्रभु सुमरण परभात । जी० ६ । ढुंडक ने चड पिगल रे शिवा नाम कुमार सोपा आदिक थइरे जपा मन्त्र नवकार जी० ७ । चित्रा स्वारथी व्रत लीया रे परदेशी राजान केशी गुरु प्रति-बोधियारे थयो ते सुख निधान । जी० ८ । राज ग्रह नगरीमे थयारे जम्बु नाम कुमार, कहिने कथा रमणी तने रे प्रति बोध्यो परिवार जी० जीव अनेक तऱ्या अछेरे जीभ तणे सूप साय, कृष्ण मुनी नौमी कही रे, ढाल अधिक सुख दायरे । जी० १० । (दुहा) फरस तणी पत्र होय ने विद्याधर बोलत, रे जीभडली तुं वापडी काहे बहुत क्षसंत । १ । तुं नारी मे नर अछु क्यो गरबावे तीय नारी ने नर सबल है

जो अंगुठा, चारि नारि को पाँय ॥ २ ॥ (ढाल १० मी) हिवे कुमरे इसो मन चिंतवे (एदेशी) हिवे फरस कंद सुनि जीभडी तुझे बोलता लाज न आवे रे, तुतो इक कोने पडी रहें तुझने कहो कुण वतलावे रे ॥ हि० १ ॥ तुतो वचन कहें कर कस बुरे तिण थी थाय बहुत कलेसो रे, क्रोधागनि अति ही ऊछले भिडि २ मरे सकल नर सो रे ॥ हि० २ ॥ दुर्योधन मरि नरक गया । कौरव सहु वस खपाया रे, इण जीभ तणे परसाद थी कहां लग गिणती गिणाय रे ॥ हि० ३ ॥ इस जीभ हि कारण कीजीये आरम्भ अनेक प्रकार रे, खट कायना जीवण दुख दिये एहवो करे पाप अपार रे ॥ हि० ४ ॥ राति दिवस निन्दा करे विकथा करता दिन जावेरे । इस जीभ तणे जे वस पड्या, तिणे पावरा नरक पहुचावे रे ॥ हि० ५ ॥ मुनि कुंडरीक जीभ ने वस पड्या, चारित्र क्रिया करि हीन रे इण जीभडि बहु पापड वस्या, वंसी वस पडि मरे मीन रे हि० ६ ॥ झूटे आगम उपदेस थी भव कोडा कोडी रुलावे रे, हम थावर में जिण दिन रहे तिन दिन कोइ नजर न आवे रे ॥ हि० ७ ॥ तुम नाक कांन जीभ आंखडी काहे मन में गरांय रे । सहु कोइ मिलि शिर नायके लागत हो मेरेही पाय रे ॥ हि० ८ ॥ झुटी २ सहु को कहे साची तो कोईन भाखे रे, इस काया के विन तप तंप शिव फल कहो कुण चाखे रे

हि॰ ९ ॥ मुनि कृष्ण ढाल दशमी कही ए फरस तणे अधि
कार रे । ऋषि रुप कहें सहु सांभलो आगल छे फरस विचार
रे ॥ हि॰ १० ॥ (दुहा) सहे परीसा बीस दो, करे कठिन व्यव
हार तवतो कर्म पपाय के पहुचत हे भव पार । फरसण का
सु दिजिये तीर्थंकर मुनिराय पच सवद तिहा होत हे दान
तणे सूपसाय (२ ढाल) हाजी मेरी वेहनी कहो काई अच
रिज वात (एदेशी) ब्राह्मी सून्दर आदि जे रे सतिया वि
फोडा कोडि । शीले पाली जग सुजस लह्योरे कुण करि सै
मुझ होड । मेरी वहनी फरस बडो संसार । करे बहुला उपगार
रे ॥ आ॰ १ ॥ विजय सेठ सेठानि ये रे कच्छ देस के मांहि
षड्ग धार्‍या शील आदरया रे, पहुच्या मुगति के माहि ॥मे॰
२ ॥ पाडलि पूरमे जे थयो रे नाम सुदर्शन सेठ, सूलि की
सिंघा सणे रे शील सहाइ थया नेट ॥ मे॰ ३ ॥ तप
काया सोखवी रे लेवे निरसा हार, वीर प्रसंस्या सुख थवि
रे धन धन्नो अणगार ॥ मे॰ ४ ॥ सोमल सीस प्रजालि
यो रे दुख सह्या अति जोर पूरव वंध छुटे नहिरे घटि गए
कर्म कठोर ॥ मे॰ ५ ॥ प्रष्णचंद शिर फरस तारे फिरि गए
सुभ परिणाम नरक थकी शिव गति लही रे फरस तणो
थयो नाम ॥ मे॰ ६ ॥ नर नारी व्रत आदरो रे फरस विना
नवि होय फरस गरीब नि वाज हे रे देषो तुम सहु कोय

मे० ७ ॥ काया विन किरिया नहीरे ज्ञान विना क्रिया हीन ज्ञान विना मुक्ति नहीरे चेतो चतुर सुजान ॥ मे० ८ ॥ मुकति गए चलि जायगे रे फरस तणे उपगार कृष्ण मुनि ग्यारमी कहीरे ढाल अधिक सुख दाय ॥ मे० ९ ॥ दोहा) मन विद्या धर बोलियो सुणिरे फरस विचार क्यों अभिमान इसा करे तोमे नही कछु सार ॥ १ ॥ सडन पडन अरु जलन ए, एह तुमारी रीत तुमही ते दुख उपजे तुमही ते अन रीत ॥ २ ॥ च्यार प्रकार आहार जो और सकल ही स्वाद, पिणमे तूं मल करत है एह बडो विरस वाद ॥ ३ ॥ इक अगुल परमाण मे रोग छिनावे थाय, देखत ही पिरजात है बादल जेम विलाय ॥ ४ ॥ जब लग हम इण देह मे तब लग सब को मान हम निकसत तुम जलत हो कहा करत हो तान ॥ ५ ॥ (ढाल १२ मी) कर्म परीक्ष्या रे करण कुमर चल्यो रे (एदेशी) मन राजा मन चक्री मन शिरदार ह रे मन सम नही संसार मनही ते सब जाने जग तनी बातडी रे । जीव विना सहु छार ॥ म० १ ॥ मनही ते करुणा कर पुन्य उपाइये रे मन इन्द्रीन को स्वामी, चेतन रहतां रहतां मानमे रे जीव विन न मिले ठाम ॥ म० २ ॥ हूं शिव गामी केवल धामी मे अछु रे तुम ससार नी मुल, तुमही ते यह चेतन कर्म कमावतो रे, तुम विन रहे सदा शूल ॥ म० ३ ॥

नाके भमरा नादे मिरगला रे रूपे देखी पतंग जीभ स्वादे फरसे हाथी यो गह थया अंग भग ॥ म० ४ ॥ इक २ इन्द्री ने वस पडा जीवडा थाये जीव विणास जे जीव पांचोंही के वस पड्या तिणरी केही आस ॥ म० ५ ॥ पांचौ इन्द्री रे दामी माहरी, ए नारी मे नाह, मुझ थका एही सुरा कुण हो रही जीव विन सुन्न ही थाय ॥ म० ६ ॥ मन विन कुण सुभ भावन भाव स्यं ध्यावे सुक्ल कोण, पांचो ज्ञान ते मन सेरा मे रह्या मुझमें अनंतो ज्ञान ॥ म० ७ ॥ मुनि वर अरणक मनमे लाजियो पडियो मायने पाय धर्म रुचि मन माही विचारता केवल ज्ञान लहाय ॥ म० ८ ॥ ढढण मुनिवर मोदक चुरता पाम्यो निर्मल ज्ञान आनंद श्रावक अवधि ऊपना मन धरता सुभ ध्यान ॥ म० ९ ॥ चंड रुद्र ने नव परणीज ते पाम्यो ज्ञान विमाल मन हीत सुभ भावना अनित्यादि थइ बारे ढाल ॥ म० १० ॥ (दोहा) तब मुनिवर जी बोलियो मन सुनि एक विचार काहे गर्व करत हो तुमहो दुख दातार १ (ढाल १३ मी) सुनि बहनी पिवडो परदेशी : (एदेशी तब बोले मुनि मधुरि वांणी सुनि मन तुं अभि मानीरे तेरी बात सकल हम जानी किम करे टाना टानी रे ॥ त० १ ॥ तंदुल मच्छ तंदुल-सम काया मन बहु पाप उपाया रे पाधरा सातमी नरके जाया मनही के सुप साया रे ॥ त० २ ॥

कालि सुकर अधिक थयो पापी महिष पांचसे कापी रे। श्रेणिक राय कुप के मध्य थापी तिहां पिण मनसा व्यापी रे॥ त॰ ३ तूं खिण २ दौड्या जावे इन्द्री बेठी रहावे रे असुभ नियाणो तुंही करावे मन चञ्चल ही कहाव रे॥ त॰ ४ ॥ इम जांणि कोइ गर बन कीजे ठामे बेठि रहीजे रे। ठामें २ सहु को कहीजे काम सहु थी सीझे रे॥ त॰ ५ ॥ तो पिण अथिरो मनही कहीजे जिण थी सहु सुख लहिये रे, जीव गया बृथा इन्द्री कहीय कांज न एको बहिये रे॥ त॰ ६ ॥ इम साधु सवकुं परचाया सहु को हरख भराया रे वन्दन करि विद्या धर राया सहु कोइ घर आया रे॥ त॰ ७ ॥ एह सवाद इन्द्री ना कीनो बहु गुण रस कर भीनो रे भणतां गुणतां जीव ने चीनो मुकति मारग जिन दीनो रे॥ त॰ ८ ॥ संवत् अठारा तिहो तर कहिये सुकल बेसाख जु लहिये रे, सुर्य वार आठम तिथि सहियें बिजय जोग सुभ पइये रे॥ त॰ ९ ॥ गुजराती लोंका गछ गाजे वरते श्री जय सुरि स्वर राजे रे, तिनके साथ प्रेम मुनि साझे कृष्ण मुनि सुख काजे रे॥ त॰ १० ॥ वंग देस देसामे नवीनो मकसुदा वाद नगीनो रे राज फिरंग तणो तिहां चीनो अमल चेन सुख लीनो रे॥ त॰ ११ ॥ पञ्चन्द्री नो चरित्र रसाल कीनो अधिक बिसाल रे। रुग ऋसी ए तेरमी ढाल थइ परण मंगल माल रे॥ त॰ १२ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ अध्यातम बार खड़ि लिष्यते ॥



दोहा

करम भरम सब छोड कै, धर्म्म ध्यान मन लाव ।
क्रोद्धादिक च्यारौ तजो, तो अविचल सुख पाव ॥ १
काया थिर नहि जानिये, माया अपनी नाही ।
पाया पुन्य प्रभावसु, थित पूरै सब जाहीं ॥ २ ॥
किसकै मात रु तात सुत, भ्रात बहिन परिवार ।
स्वारथ के सब जानिये, धरम उतारै पार ॥ ३ ॥
कीर्त्त जगमे विस्तरे, तीरथ कर निज रूप ।
किरिया व्रत चित धार कै, कीजै ध्यान अनूप ॥ ४ ॥
कुल की लज्जा राखिये, कीजै उत्तम काम ।
जगत भरम सब छोड़ के, जप पर मातम राम ॥ ५
कूस अणी जल बिन्द जूं, तिम जीवन परिमाण ।
खिरत न लागे वार कछु, समझो आप सुजान ॥ ६ ॥
केवल ज्ञान प्रकाश हो, जब पावै शिव धाम ।
लख चौरासी भ्रमना, छुटे पुदगल नाम ॥ ७ ॥
कैसे पावै परम पद, सगत विना सुजान ।
सद गुरुके परसाद सु, पावै अविचल-थान ॥ ८ ॥

काई काहु को नहीं, सबै स्वारथी जान।
तन धन यौवन थीर नहीं, संझा रंग समान ॥ ९ ॥
कौतुक जग का देख के, चेतन भये उदास।
एकाकी रहते सदा, समता सुख है पास ॥ १० ॥
कंचन कामिनी पर हरो, सत्य क्षमा गुण धार।
तौ पावै सुख सास्वता, भव दधि उतरै पार ॥ ११ ॥
कहते सो करते नहीं, झुठे बडे लबार।
भय सागरै मे आयकै, सांचा उतरै पार ॥ १२ ॥
खबर नहीं है आजकी, कल परसो क्या होय।
धर्म काम कीजै तुरत, ज्ञाता जगमे सोय ॥ १३ ॥
खाली आया जगत मे, जाता खाली आप।
हाली समझो चेतना, तौ छुटे सब पाप ॥ १४ ॥
क्षीन होय वसू कर्म जब, तब पावै निरवान।
नांहितो जगमे भरमना, लख चोराशी जान ॥ १५ ॥
खुन शन कीजे काहुसु, सबसू कीजे प्रीत।
सत्य शीयल समता रखो, एह धर्म की रीत ॥ १६ ॥
खिन इक सुखके कारने, खोया जनम तमाम।
एह सुख दुख की खान है, समझ करो निज काम ॥ १७ ॥
खुबी कर जग आयके, पाये नर अवतार।
जनम जनम के पाप सब, छुट जाय निरधार ॥ १८ ॥

घुर आए गत च्यार में, पायो नर अवतार।
अवके चेतै चेतना, तौ पावै भव पार ॥ ४१ ॥
घूमें मत ससार मे, थिर मन कीजै ध्यान।
जगत जालको तोडकै, जीव चलै शिव धान ॥ ४२ ॥
घेरे गा जम आयके, राखन हार न कोइ।
मनुषा देही आइकै, चेतो तो सुख होइ ॥ ४३ ॥
घैन वढि तृक्ष मोहकी, रहन विगारी आप।
दहन करो मद कामको, छुट जाइ सब पाप ॥ ४४ ॥
घोर पापको छोड कै, कीजै पुन्य सुधर्म।
तप जप सजम धारियै, दूर जाइ सब कर्म ॥ ४५ ॥
घोर पुन्य फल लागते, तप तरु वर निर धार।
समता रस चापै सदा, आपा आप विचार ॥ ४६ ॥
घंटा अनहद बाजते, तन मन्दिर मे देख।
आतम देवत स्वास्वता, अपने घटमे पेप ॥ ४७ ॥
घटै पाप तप जापमे, बाढै पुन्य भण्डार।
चेतन चेतो ज्ञान मे, तुरत जाय भव पार ॥ ४८ ॥
नर देहिको पाइकै, मत पोवै गुनवन्त।
धरम ध्यान कीजे सदा, सुमरो श्री भगवन्त ॥ ४९ ॥
नारी नेह निवारिए, सारी कीजे काम।
भारी फरमन कीजिये, तुरत मिलै शिव धाम ॥ ५० ॥
नित उठ प्रभुको समरियै, जग नायक जिन देव।
मन वच काया शुद्ध व्है, कीजै निस दिन सेव ॥ ५१ ॥
नीत न छोड़ो धरम की फर मन लागे फोय।

नुगुरा कुछ जानै नहीं, आगम सास्त्र विचार ।
सु गुरा गुर सेवन करै, जिन सूं उतरे पार ॥ ५३ ॥
नूर पाय नर रूपके, दूर करे अठ कर्म ।
धर्म ध्यान मे नित रहो, छोडो जगके भर्म ॥ ५४ ॥
नेम धरम चित राखिये, समता कर पर नाम ।
सत्य सील संतोष रष, पूरे वंछित काम ॥ ५५ ॥
नैना वही सराहियें, दिव्य नैन जो होइ ।
अन्तर सुरत आपनी, ज्ञान ध्यान सू जोइ ॥ ५६ ॥
नो कन कीजै काहुस, लोक लाज मन धार ।
सव जिव एक समान है, पाप पून्य अवतार ॥ ५७ ॥
नौकर वाली फेरिये, थिर मन ध्यान लगाइ ।
जीव दया चितमे धरे, सकल पाप मिट जाइ ॥ ५८ ॥
नन्दन नाभि नरिन्द के, आदि नाथ भगवान ।
कृपा करो जन दीन पर, सेवक अपना जान ॥ ५९ ॥
नहि पावे गो ज्ञान बिन, अविचल थान सुजान ।
चेतनता सुध कीजिये, तौ पावे भगवान ॥ ६० ॥
चरण कमल गुरदेव के, सेवो मन वच काय ।
जीव दया प्रति पालियै, पाप पङ्क मिटि जाय ॥ ६१ ॥
चाह जाको चाहिये, नहि चाहै नहि चाह ।
पर मातम सू प्रीति कर, आगे होइ निवाह ॥ ६२ ॥
चित परसन नित राखिये, हितकी कहिये बात ।
वित्य खरचो सुभ काममे, पून्य होइ विप्यात ॥ ६३ ॥
चंखिगा जो प्रेम रस, ध्यान अमल लव लाय ।
अनुभव ज्ञान प्रकास व्है, अन्धकार मिट जाय ॥ ६४ ॥

चुप व्है रहियै जगत मे, वहु बोलै दुख होइ।
जैसे शुक पिंजर पडै, काग न राखै कोइ ॥ ६५॥
चूर होइ वसु कर्म जब, तब पावै शिव थान।
सुख अनन्त बिलसै, तिहां शुद्ध चेतना जान ॥ ६६॥
चेतन चेतो आपको, पाप तजो सब दूर।
जाप करो सुध होइके, सुख पावै भर पूर ॥ ६७॥
चैन होइ जब मैन बस, रैन दिवस सुख होइ।
बैन शुद्ध बोलै सदा, उत्तम प्राणी सोइ ॥ ६८॥
चोरी पाप निवारियै, करले उत्तम काम।
जगत जाल मे आयके, भजले आतम राम ॥ ६९॥
चौरासी लक्ष भरम के, पांव नर अवतार।
अबकै चेतो चेतना, तौ पावै भव पार ॥ ७०॥
चंचल मन थिर राखिये, ज्ञान ध्यान मन लाय।
तो पावै सुख सास्वता, आवा गमन मिटाय ॥ ७१॥
चहुं गत भरमे जीवडा, लक्ष चौरासी रूप।
अवकै चेतै चेतना, पावै ज्ञान अनुप ॥ ७२॥
छल नहि कीजे प्राणिया, सरल भाव चित धार।
निहचै पावै परम पद, धरम उतारे पार ॥ ७३॥
छाडो विषय विकार को, पंच इन्द्रीको भोग।
रसना इन्द्री जीतिये, तव है तेरा योग ॥ ७४॥
छिन छिन छीजै आउखो, समझो चेतन राय।
धरम ध्यान कर लीजियै, मानव भवको पाय ॥ ७५॥
छीले दुर मति कन्द को, पोखे समकित मूल।
अविचल फल पावै सदा, सो चेतन अनु कुल ॥ ७६॥

कुवैन रामा पार की, लागे दोष अपार।
अपजस पावे जगतमे, बुरा कहै संसार ॥ ७७ ॥
छुटैगा जब पाप सब, तब तुटेगा कर्म।
छुटे अविचल सुख सदा, कर लेगा जब धर्म ॥ ७८ ॥
छेदे मत किन जीवको, सूक्षम बादर जोइ।
कीजे दया छकाय की, पाप न लागे कोइ ॥ ७९ ॥
छैल सङ्गत तज दीजिये, गैल सन्त के जाय।
मैल न लागे आपकों, जगमे जस अधिकाय ॥ ८० ॥
छोड करमके फन्द को, जगत वन्ध मिट जाय।
सदा रहै आनन्द में, चिन्ता दुर पलाय ॥ ८१ ॥
छप रस पोषे प्राणियां, छोंडे नहीं लगार।
रसना रसके स्वाद मे, पावै दुरक अपार ॥ ८२ ॥
छोडै दुरगति चाल को, दंडै इन्द्री पांच।
मंडै धरम सु सु ध्यान मे, शिव सुख पावे सांच ॥ ८३ ॥
छकाया प्रतिपालियै पंच महाव्रत पाल।
चेतनता सुध कीजीयै, होवे आप निहाल ॥ ८४ ॥
जगमे अपना को नहीं, सबे स्वारथी जान।
पर भव जाता जीवने, कोइ न राखै प्रान ॥ ८५ ॥
जागो आप सुजान नर, लागा प्रभु के ध्यान।
जो सोवैगा चेतना, तो नहीं पावै ज्ञान ॥ ८६ ॥
जिन साहिब को सुमरिये, तिनकै ज्ञान अपार।
राग दोषको परि हरो, तो पावे भव पार ॥ ८७ ॥
जीते इन्द्री पांच जब, पावै पचम ज्ञान।
फेर न जगमे अवतरै, शुद्ध चेतना जान ॥ ८८ ॥

जुग कर जोरै बीनवं, अरज सुनो भगवान।
आवागमन निवारिये साहिब कृपा निधान ॥ ८९॥
जुवा मास सुरा तजो परिहरो गनिका नारी।
सिकार चोरी पर तिया, सातो व्यसन निवार ॥ ९०॥
जेता लवा सौड है, तेता पांउं पसार।
आप अन्दाजे चालियै, कभि न आवे हार ॥ ९१॥
जैनी दया जु पालते, भगती मे शिव भेख।
मुशल मान आकीन मे, तीनों इक चित देख ॥ ९२॥
जो इह तीनों मन धरे, दया भगति आकीन।
तौ पावे सुख सास्वता, चेतन सौ परवीन ॥ ९३॥
जौलौ ज्ञान न ऊपजै, तौलौ काम न होइ।
लक्ष चौरासी भरमना, कैसे छुटे सोइ ॥ ९४॥
जङ्गल मे वासा किया, मन्दिर दीना त्याग।
आसा तिसना ना मिटी, यह झुठा वैराग ॥ ९५॥
जप्प तप्प किरिया करै, नेम धरम चितलाय।
मन अपना वस ना किया, सबी अकारथ जाय ॥ ९६॥
झगडे मत जग आयकै, क्षिमा धरम कर धार।
रगडे करम कठोर को, आवा गमन निवार ॥ ९७॥
झाडै कासव करम को, धर्म ध्यान फल पोख।
चाखे समकित बीज को, तव पावे सुख मोख ॥ ९८॥
झिल मिल जोत विराजते, सो साहिब को पेख।
घटके पटकों खोलके, दिव्य नयन सु देख ॥ ९९॥
झीले समता तोय मे, पावे ज्ञान तरङ्ग।
खिलसे अविचल सुख सदा, सिवसुन्दर के सङ्ग ॥ १००॥

झुरिये मत दुख पायके, सहिये आप विचार।
किया करम नहि छुट है, सुख दुख रहते लार॥ १०१॥
झुठ वचन नहि बोलिये, लागे दोष अपार।
जगमे अपजस विस्तरे, परभव दुख निरधार॥ १०२॥
झेले मारग धरम को, ठेले विसय विकार।
नर भव लाहो लीजिये, भला कहे ससार॥ १०३॥
झीजे एक समान है, झुठा जुठा जान।
साचा साहिब सुमरिये, तो पावे शिव थान॥ १०४॥
झोली कीजे उदरको, हाथ पातरा जान।
दिग अम्बर धारे सदा, सो साधु गुन खान॥ १०५॥
झौड़न कीजे काहुसु, क्रोध प्रीति को हान।
मान विनय गुन नास व्है, कपट लोभ तज जान॥ १०६॥
झखे मत तुं आपको, चिन्ता दिजै टाल।
समता गुनको धारिये, छुट जाय भव जाल॥ १०७॥
झड लागे प्रभु नामके, भागे मिथ्या चाल।
जागे अनुभव ज्ञान मे, चेतन होइ निहाल॥ १०८॥
नमस्कार गुरू देवको, कीजे सीस नमाय।
पावै मारग मोक्ष को, जब गुर होइ सहाइ॥ १०९॥
नागा मुठी बांधके, तु आया निरधार।
अन्त समै नागा चले, दोनो हाथ पसार॥ ११०॥
निस बासर सुमिरन करो हरो पाप घन घोर।
सील क्षमा चित राखिये भागे करम कठोर॥ १११॥
नींव न मीठी होइगो जो सींचै गुड घीव।
जिसका जोइ सुभाव है, कैसे फिरे सदीव॥ ११२॥

नुकता मे तौले गये कनक घूघची सङ्ग
मान गुमान न कीजियै देख २ निज अङ्ग ॥ ११३॥
नूतन वागा पहरते चोया अतर लगाय।
रैण दिना सुखमे रहै सोभी जम घर जाय ॥ ११४॥
नेह जगत का छोडकै, लीजे अविचल गेह।
अबकै चेतो चेतना, पाये मनुषा देह ॥ ११५ ॥
नेह राषो इक धरम नो, वीजनै कर दूर।
जोव दया चित राखियै, सुख उपजै भर पूर॥ ११६ ॥
नो जिय जीव अजीव छै, समझो चतुर सुजान।
तत्वा तत्व विचारकै, सुमरो श्री नवकार ॥ ११७ ॥
नौवत वाजे द्वार मे, हय गय वहु असवार।
धर्म्म ध्यान करते नहीं, सो किम उतरै पार ॥ ११८ ॥
नन्दा भद्रा फुनि जया, रिक्ता पूर्णा जान।
एकम दूज अरु तीज है, चौथ पचमी आन ॥ ११९॥
नहि विद्या नहि दरव है, कैसै सरि है काम।
एक नामको आसरो, जामे लगै न दाम ॥ १२० ॥
टहल करै गुरु देव को, पावै ग्यान अपार।
जगमै सोभा विस्तरै, भलो कहै ससार ॥ १२१ ॥
टाल करम के फद को, पाले आपनो धर्म।
सरम रहै ससार मे, छूट जाय सब भर्म ॥ १२२ ॥
टिकै आप ससार मे, रहे मोह लप टाय।
निकसै प्रभुके नामसुं, आवा गमन मिटाय ॥ १२३ ॥
टीकी प्रभुको दीजियै नीके कीजै ध्यान।
जिन सरुपहि यङ्ग वसे, उपजै केवल ज्ञान ॥ १२४ ॥

टूक धीरज मन राखियै, समता सील,सुभाव ।
मानव भव,मे आयकै, मत चूकै ते दाव ॥ १२५
टूटै जग के जाल जब, छूटै पछी जीव ।
लूटै अविचल सुख सदा, पावै अपने पीव ॥ १२६
टेक नाम की राखियै, छोडो काम विकार ।
धरम,ध्यान कीजै सदा, तौ पावै भव पार ॥ १२७
टैड वैड छांडो सभी, जोडो प्रभुसु प्रीत ।
तोड करम के जालको, लीजै अपनी रीत ॥ १२८
टोना टामन टालकै, पालो अपने धर्म ।
भरम टलै ससार के, छुट जाय सब कर्म ॥ १२९
टौवा उडै वातास मे, गगन पथ की ओर ।
जगभे चेतन खेलते, सुरत लगाये डोर ॥ १३०
टकार ध्वनि बाजत सदा, अन्तर मे लप जीव ।
ज्ञान विना नहि साभले, चेतन आप सदीव ॥ १३१
टप भव सागर पार जा, अद्भुत महिमा देख ।
मिलै जोतमे जोत व्है, रूप रङ्ग नहि रेष ॥ १३२
ठग तेरे अतर बसै, कहै काठिया नाम ।
बचे नाम परताप सू, चोर न पावै दाम ॥ १३३
ठाम ठाम डोले मती करो ध्यान इकठौर ।
तब पावै परमातमा, बात नही है और ॥ १३४
ठिकरी हाटक एक सम, जा जाने सो साध ।
तिनकी कीजे वन्दना, मेटै सकल उपाध ॥ १३५
ठीक रषो मन आपना, चचल चित कर दूर ।
घट मे साहिब निरखियै, सुख उपजै भर पूर ॥ १३६

टुमक२ मग चालते, निरख२ पग धार ।
जीव दया पालै सदा, सो साधु भव पार ॥ १३७
ठूठ वृक्ष सोभे नही. कोइ न पूछे तास ।
सफल फलै सब को भला. करे छांहकी आस ॥ १३८
ठेलै मदन विकार को. झेलै समता शील ।
मेलै दुरं मत पाप सब तौ पावे सिव लील ॥ १३९
ठहर रहे संसार मे निकसन की सुध नाहि ।
भव भव भरमे जीवडा लख चौरासी माहि ॥ १४०
ठोला बहु ते खायगा. जो नहि समझे आप ।
समझ वृक्ष के चेतना छोड दीजीयें पाप ॥ १४१
ठौर २ भटके मती राखो एक की आस ।
शिव सुख विलसै माणिया पावै अविचल वास ॥ १४२
ठंडा पानी देखके मत तरसावै जीव ।
ऊना वारि अचित्त है, पीवै साध सदीव ॥ १४३
ठगनी माया जगत मे. सबकों ठगा नीसंक ।
इन से को इन ऊवरा, क्या राजा क्या रंक ॥ १४४
डरिये दुरजन लोगसु, करिये अपना काम ।
हरिये आठों कर्म को, तौ पावै शिव धाम ॥ १४५
डामा डोल न कीजिये, अपने मन को आप ।
थिरता कर के सुमरिये जब छूटै सब पाप ॥ १४६
डिगे न अपने धरम सुं, सो साधु अनुकूल ।
दया सील समता रषे विनय धरम को मुल ॥ १४७
डील डोल सब पायके, नर भव लाहा लेय ।
सुभ कारज कर लीजिये. बुरा फैल तज देय ॥ १४८

डुले डुलाये से मिलै, ज्यु पखे मे पौन।
उद्यम कीजे प्राणियां, बैठा देगा कौन ॥ १४९
डूबै मत तू जीवडा, भव सागर मे आय।
नाम-नाव चढ पार जा, सुष पावै अधिकाय ॥ १५०
डेरा आद निगोदमे, सब जीवन को जान।
करै कर्म को निर्जरा, पावै मोक्ष निदान ॥ १५१
डैना विन कैसै उडे, पछी जीव सुजान।
शुकल ध्यान के पक्ष कर, लीजै तब शिव थान ॥ १५२
डोरी लागी प्रेमकी, भागी दुरमल काल।
जागा घटमे ज्ञान जब चेतन भए निहाल ॥ १५३
डौल कौन तेरा वना देखो हृदय मझार।
मनुषा देही पायके, मती जमारा हार ॥ १५४
डडे इन्द्री पचजो, छडे मदन विकार।
खडै ममता मोह कौ तौ पावै भव पार ॥ १५५
डग धरियै मग दखके चालियै राह सुचाल।
तब पावै अपना धणी बिलसै अविचल माल ॥ १५६
ढलक पडे जब जीवडा, सुध नहि रहै लगार।
पाप पून्य जे बाधिया, ते पावै निरधार ॥ १५७
ढाल धरम कर लीजियै क्षिमा खडग धर हाथ।
मोह वलीको जीतिये, तौ पावै शिव नाथ ॥ १५८
ढिग नहि जइये दुष्टके नहि कीजे विश्वास।
सङ्गत कीजे साधकी पूरे मनकी आस ॥ १५९
ढील न कीजे धर्म में तुरत पुन्य कर आप।
दुख दोहग दूरे टले, छुट जाय सब पाप ॥ १६०

ढुले जीव तनसुं जबै. कोइ न राखन हार।
मात पिता भाइ सजन जो करते बहु प्यार ॥ १६१
ढुंढेगा पावे सही घटमे देख निहार।
बिन देखे पावे नही. सत्य वचन उर धार ॥ १६२
ढेर दरब ते पायके. किए न उत्तम काम।
घेरें जम जब आयकै. धरे रहै सब दाम ॥ १६३
ढै पडिया जोवन जबै कोइ न पूछै बात।
पूंजी होय तो खाइयै नहि तो दुख विख्यात ॥ १६४
ढोक दीजिये देवको दरसन कर निज रुप।
अन्तर निरखो आपने घटमे देव अनुप ॥ १६५
ढौर छोड बक वाद की गौर करो सब जीव।
दया धरम की जै सदा पावे अपना पीव ॥ १६६
ढङ्ग सीखिये धर्म को छोड कुढङ्ग कुचाल।
सब जनमें सोभा बधे पर भव होइ निहाल ॥ १६७
ढकी बात नहि खोलियै घटै माल अरु तोल।
पड़दे मे परमातमा देखो घट पट खोल ॥ १६८
नरक तिर्यंच देव गति तीनो मे नहि मोख।
मानव भवमे मुकत है जो छुटै सब दोख ॥ १६९
नाता तोडो जगत सु जोडो प्रभुसू हेत।
मोडो मन वच कायको तो पावो शिव खेत ॥ १७०
निर्मल समकित वंत है निर्मल केवल ज्ञान।
निर्मल चेतन होइगो जब पावे सिव थान ॥ १७१
नीच सङ्ग नहि कीजिये ऊंचि सङ्गत बैठ।
देखो आप बिचारके. अपन घटमे पैठ ॥ १७२

नुकसान द्रव्य न कीजिये पूंजि राखिया पास।
करले उद्यम धर्मको, वहुत नफा व्है तास॥ १७३
नूतन तन जीरन भए, मन न भए अब थीर।
किस विध कारज होइगे ज्ञान विना गुन धीर॥ १७४
नेकी जगमें कीजिये, बदी दीजिये छोड।
जगमे सोभा विस्तरे भला कहे लख कोड॥ १७५
नेरी मुक्त सुहावनी, पार ब्रह्मको राज।
पट राणी समता भली करे जीव को काज॥ १७६
नोच जगतके जालको, करम भरम टल जाय।
पचम गति पावै सही, सुध कर मन वच काय॥ १७७
नौकर जिनवर के भए, जो सबके सिर ताज।
अैसे साहिब पायके कौन करे बद काज॥ १७८
नंदीश्वर यात्रा करै सुर विद्याधर आय।
लब्ध वन्त साधु तिहां दरसन को नित जाय॥ १७९
नगन आय संसार मै, नागा जागा आप।
दया धरम कीजे सदा, छुटे जाय सब पाप॥ १८०
तन तेरा नहि प्राणियां, छोड चलेगा प्राण।
जोते पांचे आपको, सो नहि रहे निदान॥ १८१
तात मात परिवार सब, कोइ न आवै काम।
एकाकी ते जाइगा, साथ चले नहि दाम॥ १८२
तिल तिल छीजे आउखा, उमर विहानी जाय।
जो हु समझे आपको, सुख पावै अधिकाय॥ १८३
तीन तत्व को धारिये, दरसन ज्ञान चरित्र।
तो पावै परमातमा, आपा होइ पवित्र॥ १८४

तुरत धरम कर लीजिये, मती लगावो वार।
मनुषा देही पायके, आपा आप विचार ॥ १८५
तुठैगा साहिब जवे, सेवा कर नित मेव।
मन वच काया सुद्ध व्हे, पूजो अपना देव ॥ १८६
तेरा जगमे को नही, मात पिता परिवार।
एकाकी ते जायगा, टको न चाले लार ॥ १८७
ते जान सव आपना, तन धन जोवन पाय।
जांत वार न लागि है, समझो चेतन राय ॥ १८८
तोड करम के जालको, पालो अपना धर्म।
सद गुरुकी सेवा करो, छुट जाय सव भर्म ॥ १८९
तोलो ज्ञान न ऊपजै, न्हि पावे विसराम।
च्यारो गतमे भरमना, लख चोरासी ठाम ॥ १९०
तन्त्र मन्त्र अरु यन्त्र जो, सरेन इनसे काज।
एक नाम चित धारिये, पावे अविचल राज ॥ १९१
तप जप सजम कीजिये, मोह ममता को टार।
सत्य सील सतोष रख तो पावे भव पार ॥ १९२
थकै न मारग धरम को थांभ नाम की डोर।
पहुंचे शिव नगरी तुरत छोडे करम कठोर ॥ १९३
थातो राखिये आपनो दीजे नही पर हाथ।
सुभ कारज मे खरचिये, सो धन तेरे साथ ॥ १९४
थिरता मनमे राख के धरम ध्यान नित पाल।
करम तुझे लागे नही, पावे अविचळ माल ॥ १९५
थीर होइ इक चित्तसुं सुमरन करो सुजान।
तो पावैगा परम पद, पहुचैगा शिव थान ॥ १९६

थुनिये प्रभुके गुननको भाव भगत उर आन ।
तौ पावै सुख सास्वता, समता मनमें ठान ॥ १९७
थुल पत्र व्रत आदरै छांडै विषै विकार ।
शुद्ध चेतना होइ जब तौ पावै भवपार ॥ १९८
थेट जायगा जीव जब, मेट कर्मके जाल ।
क्रिया वरत चितमें धरो पंच महाव्रत पाल ॥ १९९
थैली अपनी खोलकै खरचो दर्व सुधर्म ।
परभव जाता जीवको कोइ न लागै कर्म ॥ २००
थोंडे सुखके कारणे क्यो खोवै अवतार ।
तप जप संयम कीजिये तौ पावै भवपार ॥ २०१
थोंगी धुन धुधु कट वजै तन मृदङ्ग धौकार ।
लख चौरासी जोनिमें जिय नाचै निरधार ॥ २०२
थंभ नही आकासमें धरती नहि आधार ।
ए अनादके भाव है चौदह राज उदार ॥ २०३
थर हर जीव न कीजिये कर निश्चल मन ध्यान ।
करम अष्टको जीतके लीजै केवल ज्ञान ॥ २०४
दरसन ज्ञान चारित्र को अपने उरमे धार ।
समकित पावै प्राणियां. अविचल सुख निरधार ॥ २०५
दान शील तप भावना मुक्ति राह इह च्यार ।
लीजौ चितमें धारके तब उतरे भव पार ॥ २०६
दिन दिन छीजै आउखा अंजुली नीर समाण ।
जो अवकै चेतै नही तौ होगा हैराण ॥ २०७
दीना नाथ अनाथ की सुध लीजै भगवान ।
सेवक अपनो जानके दीजे अविचल थान ॥ २०८

दुरमत अपनी परि हरो. रखियो समता भाव ।
मानव भव ते पायके, मत चुके इह दाव ॥ २०९
दूत पना कीजे नही, लागे दोस अपार ।
अपजस जगमे विस्तरे, घट्ठ भरमे संसार ॥ २१०
देना रखे न काहुको, करज महा दुख देत ।
इह भव परभव बीगडै, लेवै ब्याज समेत ॥ २११
दैव करे सो होयगा, सोच न कीजे कोइ ।
देवी देव मनावते, करम लिखा फल होइ ॥ २१२
दोस न दीजे काहुको, दुख सुख भाग्य प्रमाण ।
आप किया फल पाइये, पाप पुन्य जिय जान ॥ २१३
दौलत थिर नहि काहुको. योवन वी थिर नाहि ।
अन्त चलेगा एकला, समझ देखि मन माहि ॥ २१४
दंभ न कीजे प्राणियां, धंभ बरत चित धार ।
सत्य सील सन्तोष मे, भव दधि उतरे पार ॥ २१५
दश विध धर्मज पाल ते, पंच महाव्रत धार ।
सुमति गुपति मनमे रखे, ले निरदोस अहार ॥ २१६
धरम ध्यान कीजे सदा, दान सील तप भाव ।
अबके तौ चुके माति, नर भव पाये दाव ॥ २१७
धारो अपने चित्तमे, निज सुरतको आप ।
जहां तहां नित भटकके, काहे करत कलाप ॥ २१८
धिग जीवन है तासको, जोनहि कीन्हा धर्म ।
मनुखा भवमें आयकै, क्यो बांधे ते कर्म ॥ २१९
धीरज मनमें राखिये, कीजे नही उताल ।
पावैगा-ते प्राणियां. लेख लिखा सो भाल ॥ २२०

धुनि राखो इक नामकी, अवर बात सब त्याग ।
मनुषा देहि पायके, बुरा फैले सू भाग ॥ २२१
धूम धाम कीजे नहीं, राखो समता भाव ।
तो पावै सुख सास्वता, धरम ध्यान मन लाव ॥ २२
धेनु जगम सरस है, काम धेनु जो होइ ।
मन इच्छा पूरण करे, जिन आगम मे जोइ ॥ २२
धैर्य वन्त हुय जे सदा, सरि है तेरा काज ।
चेतनता सु र होइके, लीजै अविचल राज ॥ २२४
धोवैगा जब पाप सब, उज्जल होगा आप ।
तो पावै परमातमा, छूटै सबी कलाप ॥ २२५
धौरा घरमे बेठके, करते नाना भोग ।
सोभी यम घर जाहिग, देखेगा सब लोग ॥ २२६
धंधे जगके छोडिये, भजिये श्री भगवान ।
राग दोष नहि राखिये, पावै अविचल थान ॥ २२
धन दवलत को पायके, काहि करत गुमान ।
एतो थिर नाहि रहै, सध्या रंग समान ॥ २२८
नही टरै सिर लेपनो, करै जु कोट उपाय ।
होतव सोतो होइगो, सो क्यों मेटा जाय ॥ २२९
नाम एक चित धारिये, दुविधा दीजै छोड ।
तो कारज सब सिद्ध व्है, जगत जालको ताड ॥ २
निकलेगा भव कूपसू. तब पावे सुख चैन ।
फिर नहि जगमे अवतरे, ज्ञानी कहते बैन ॥ २३१
नील फूल चोपे नहीं, लागै दोष अपार ।
जीव दया मति पालिये, तो पावै भव पार ॥ २३२

लुकसा सिद्ध स्वरूप को, सुनियो चतुर सुजान।
पञ्च महाव्रत सेवियै, उपजै केवल ज्ञान॥ २३३
नूतन को जीरन करै, काल कहावै सोइ।
समझ लीजियै प्राणिया, अजीव तत्व मे जोइ॥ २३४
नेत्र अपना खोलकै, दिव्य दिष्ट सूं देख।
घटमें साहिब निरिखियै, ज्ञान ध्यान मे पेख॥ २३५
नैन वैन अरु नाशिका, श्रवण अंग सुख भोग।
इनके लालच फरस है, तिन कौं नांहि है जोग॥ २३६
नो चल मारग पापकै, लागै दोष अपार।
धर्म राह मे जो चलै, पावै सिव भंडार॥ २३७
नौकार मंत्र जप सदा, चौद पूर्व को सार।
एक चित्त सूं जप करै, सो पावै भव पार॥ २३८
नंदीषेण सु साधु को, वंदो सदा त्रिकाल।
मन वच काया शुद्ध है, पंच महाव्रत पाल २३९
नमो अरिहन्त देवको, सिद्ध सूरी उपझाय।
सकल साधको वंदना, पाप सबी मिट जाय॥ २४०
परम जोति परमातमा, परमेश्वर पर धान।
नमस्कार ताको करे, सुद्ध चेतना जान॥ २४१
पाप छोड़ तप जप करे, फलै मनोरथ माल।
दया धरम चित राखियै, शील व्रत को पाल॥ २४२
पिता धर्म माता क्षिमा, भाइ सजम जान।
सांच पूत्र भगनी दया, तिय सतोष वखान॥ २४६
पीवै पानी छाणकै, सो जैनी कुल वन्त।
जीव दया चितमे धरै, सुमरै श्री अरिहन्त॥ २४४

पुन्यवंत जे प्राणिया, विलसै सुख श्री कार ।
पापी दुख पावे सदा, भरमे बहु संसार ॥ २४५
पूजा प्रभुकी कीजियै, द्रव्य भाव दो भेद ।
जिनवर की भगती करो, मन आनो मति खेद ॥ २४६
पेट भरणके कारने, करते कोड़ि उपाय ।
कर्म लेख मेटै नहीं, समझो चेतन राय ॥ २४७
पैसै जाइ समुद्र मे, गिरसे पडियै धाय ।
मुरख मीत न कीजियै, जनम झुरतां जाय ॥ २४८
पोखै मत तु देहको, सोखै तप कर काय ।
तौ पावे सुख सास्वता, आवा गमन मिटाय ॥ २४९
पौन ऊरग पीवे सदा, दुर्बल नही सरीर ।
मुनि रुखा भोजन करे, मनमे राखै धीर ॥२५०
पन्च परम पद सुमरियै, पाले पंचाचार ।
पन्च विषैका परिहरै, पावै सुख निरधार ॥ २५१
पर सङ्गत को छोडके, निज आतम को जान ।
तौ पावै परमातमा, धर्म ध्यान उर आन ॥ २५२
फरस रस घ्राण चक्षुका, श्रवण इन्द्रीका पंच ।
गज झख अली पतङ्ग है, नाद कुरङ्ग त्रियच ॥ २५३
फासु भोजन कीजियै, सचित करो परिहार ।
साधु को इह पंथ है, भक्ष अभक्ष विचार ॥ २५४
फिर फिर गरभा वासमें, लख चौरासी रुप ।
ज्ञान विना भरमे सदा, नहि छुटै भव कुप ॥ २५५
फीके जगसू होइके, सीखे उत्तम चाल ।
जीव दया चितमे धरै, पन्च महाव्रत पाल ॥ २५६

फुरकै नैना दाहिनें, ऊपरको सुख जान।
नेत्र वाम नीचे भला, नरको होइ कल्याण ॥ २५७
फुलै मत संसार में, झूलै करम हिन्डोल।
लख चौरासी पेगमे, जीव सदा डम डोल ॥ २५८
फेरै मनको आपनें, जीतै विषय विकार।
तो पावै सुख आतमा, भव दधि उतरै पार ॥ ५९
फैल बुरा सब छोडके, भले पन्थ मे आव।
मानव भव खोये मती, अबके पाये दाव ॥ २६०
फोकट गरब न कीजिये, नहि विद्या नहि दाम।
छोडि सबसें होइकें, कीजे अपने काम ॥ २६१
फौज जीतिये मोहकी, तब चेतन शुध होइ।
शिव मगमे पग दीजिये, पला न पकडे कोइ ॥ २६२
फन्द करमके तोडकें, जीव चले शिव थान।
फिर भवमें आवै नही, शुद्ध चेतना जान ॥ २६३
फसै न जगमे आयकै, विसय सुखों को पाय।
धरम ध्यान कीजे सदा, तो अविचल सुख थाय ॥ २६
बहुत बोल बोलै नही, बोलै समे विचार।
बोलै यथारथ बोलिये, सबको लागे प्यार ॥ २६५
बालापनमें खेलते, तरुण भए रस रङ्ग।
वृद्ध समे नहि चेतिया, तीनो खोये अङ्ग ॥ २६६
बिन दीये लेवे नही, साध बिराना माल।
दान अदत्ता छोडिये, पंच महाव्रत पाल ॥ २६७
बीते आप सरीरको, सुख दुख जेता होइ।
धरम ध्यान कीजे सदा, शिव सुख पावै सोइ ॥ २६

बुद्धि पायके प्राणियां, कीजे तत्व विचार ।
द्रव्य मिलै तौ दान दे, अङ्ग सार व्रत धार ॥ २६९
बूडै मत संसार मे, जग सागर बिस्तार ।
धर्म नावमे बैठिय, तब उतरे भव पार ॥ २७०
बेर बेर समझावते, समझे नही गमार ।
भव सागर मे आयके, कैसे उतरे पार ॥ २७१
बैठो सङ्गत साधुकी, दूर जागा सब व्याध ।
बरे सङ्ग नहि बैठिये, निस दिन होइ उपाध ॥ २७२
बोलो बात सुहावनी, सब को लागे प्यार ।
खोटी बात न भाषिये, बुरा कहे संसार ॥ २७३
बोरे से दौरे फिरे, ज्ञान बिना इह जीव ।
जिनको समकित ऊपजा, पहुचे मुकत सदीव ॥ २७४
बंदो सीस नवायके, सकल साधके पाय ।
देव धरम गुरु सेविये, सबी पाप मिट जाय ॥ २७५
बरस मध्य इकु वार जो, फर धर्म चित लाय ।
पर भव जाता जीवको, सोई धर्म सहाय ॥ २७६
भविजन भज भगवन्त को, तजिये मोह विकार ।
जीव दया चित मे धरो, तो उतरे भव पार ॥ २७७
भाग्यवन्त ये प्राणिया, पग पग होइ निधान ।
जोजन मे रस कूपिका, मिले पुन्य सु आन ॥ २७८
भिडे न काऊ जीवसों, भाषे नहीं विपरीत ।
सील दया चित राखिये, कीजे सबस प्रीत ॥ २७९
भीतर घटमे देखिये, दिव्य नयन को खोल ।
तो पावै परमातमा, अवर ठौर मत डोल ॥ २८०

भुवन पती रीझे जबै, तौ देवै इक गाम।
तुम त्रिभुवन पति नाथ जी, रीझ देउ शिव धाम ॥ २८१
भूल रहे ससार मे, विषयन सुख लपटाय।
जो नही चेते प्राणिया, सो जग आवै जाय ॥ २८२
भेख धरे जो साधको, तौ ममता मत राख।
जीव दया प्रति पालियै, असत वैन मत भाख ॥ २८३
भै नहीं कीजे प्राणिया, निर्भय कीजै ध्यान।
मन वच काया वस करौ, उपजै केवल ज्ञान ॥ २८४
भोग किए वहु रोग है, जोग किये सुख चैन।
चेतनता शुद्ध होइ कै, ध्यान करै दिन रैण ॥ २८५
भौ सागर मे आयके, बुडे मत ससार।
नाम नाव पर बैठके, उतर जाय भव पार ॥ २८६
भंन्जो आठौ करम को, जग भर मन छूट जाय।
पावै शिव शुख सास्वता, आवा गमन मिटाय ॥ २८७
भरम जगत के छोड़के, धरम ध्यान मन लाव।
छूटे करम अनाद के, तौ अविचल सुख पाव ॥ २८८
मन वस रख नित धरम धर, करम भरम तज दूर।
भजन करत नर परम पद, मिलत मुकत सुख पूर ॥ २८९
माया काया कारिमी, जैसे संझ्या रंग।
जाता देरी ना लगै, छोडो याको सग ॥ २९०
मिलै सुगुरु सांसा मिटै, जगै ज्ञान घट वीच।
भगै करम के फन्द सू, पडै नही भव कीच ॥ २९१
मीत तीन है जीवको, देही अरु परिवार।
तीजे मित्र सू धर्म है, चेतन नित मे धार ॥ २९२

मुनिवर को नित वंदिये, भाव भक्ति उर आन।
मुनि सम जगमे को नही, मुनिजन है गुन खान॥ २९३
मूंठा बाधे आवता, जाता हाथ पसार।
दिया लिया सङ्ग जायगा, पाप पुन्य है लार॥ २९४
मेरे मन पर तांत है, जिन आगम की बात।
अवर बात मन ना बसे, किहां दिवस अरु रात॥ २९५
मै मै के बिल्ला बगे, मै नही छांडे जीव।
ममत मे न जब छूटिये, तब पावे निज पीव॥ २९६
मोक्ष होइ जब जीवडा, तब छुटे सब व्याध।
नहितो जगमे भरमते, आवा गमन उपाध॥ २९७
मौनी बन बोले नहीं, मांगे सान बताय।
पेट भरण के कारणें, करते कोड उपाय॥ २९८
मंगलिक प्रभु नाम है, मत बिसरो गुन खान।
चेतनता शुद्ध होइके, लीजे अविचल थान॥ २९९
मनुषा भवमें आयके, भूले मत गुण वंत।
धरम ध्यान कीजे सदा सुमरो श्री अरिहन्त॥ ३००
यती धर्म दश जानिये, खतादि गुण खान।
पंच महाव्रत पालते, जीव दया चित आन॥ ३०१
याचक गुण लघुता धरे, कामी धरे कलंक।
दुष्ट पिराणा दोष तक, बोले बात निसंक॥ ३०२
यित तित तुम डोले मती, निज घट देख विचार।
पर सगत को छोडके, आपा आप निहार॥ ३०३
यीत भीत सब दूर कर, निरभय सुख शिव वास।
फिर नहि जगमे भरमना, शुद्ध चेतना तास॥ ३०४

युगम जातके जीव हैं. त्रस अरु थावर भेद ।
इन की रछ्छा कीजिये पाप करम को छेद ॥ ३०५
य वे योगी ज्ञान मे. ध्यान करे नित मन ।
घटके पटको खोलके दरसे अपना देव ॥ ३०६
जेष्ठ भ्रातको देखके करे विनय प्रणाम ।
तो सुख पावे जीवडा पूरे वञ्छित काम ॥ ३०७
येसा परव पुन्य है तेसा उपजे ज्ञान ।
सोच न कीजे प्राणिया कीजे निर्मल ध्यान ॥ ३०८
योग बहे सब मुनिवरा क्रिया करे दिन रात ।
निरदूखन भोजन करे जीव करे नहि घात ॥ ३०९
योन सबी फिरी आइके पाये नर अवतार ।
अबके समझो चेतना तो पावे भव पार ॥ ३१०
यन्तर कर देखे सबी मन्तर पढे अनेक ।
तन्तर मे कुछु ना भई राखो नामकी टेक ॥ ३११
यस बाधे जो काम मे, सोई कीजे काम ।
खोटी बात न कीजीये. होवेगा बदनाम ॥ ३१२
रतन तीन मनमे धरो दरसन ज्ञान चारित्र ।
तो समकित सुख उपजे. चेतन होइ पवित्र ॥ ३१३
राग दोष सब परिहरो. समता रख परनाम ।
मोह ममता कीजे नही, तो पावे शिव धाम ॥ ३१४
रिद्ध पाय भले मती; धन खरचो सुभ काम ।
दीजे दान सुपात्रको पावे शिव विसराम ॥ ३१५
रीस न कीजे काहु पर सब जिव एक समान ।
जैसा दुख है आपने, तैसा पर दुख जान ॥ ३१६

रूले जीव गति च्यारमें, लख चौरासी रुप ।
ज्ञान विना भरमे सदा, नहि छुटे भव कूप ॥ २१९
रूप देख निज रूपको, घटमे रुप सरुप ।
अन्तर ध्यान लगाय कै, देखो रुप अनुप ॥
रेखा लिखी ललाट मे, सो नहि मेटे कोइ ।
सोच न कीजे प्राणिया, करम लिखा फल होइ ॥
रैण समे वासा करै, प्रात भये उठ जाय ।
इण विधि किरिया जो करे, सो जन साध कहाय ॥
रोक दाम लाए इहा, नफा करणके हेत ।
सो ते हारे जात है, तनक रहो ए चेत ॥
रौला जगमे मत करे, हौले कहियै वात ।
मीठा बोल सुहावने, भला कहे सब जात ॥
रंचक सुखके कारने, लपट रहे संसार ।
एही सुख दुख होइगा, समझे नही गमार ॥
रस इन्द्री को जीतियै, धरम ध्यान मन लाय ।
लघु भोजन रूखा करे, तप कर सोखै काय ॥
लख चौरसी योनिमे, जिवडा आवे जाय ।
ज्ञान विना भरमे सदा मिले ज्ञान सुख थाय ॥
लाख वार विनती करों सुनियो श्री भगवान ।
अवके किरपा कीजिये दीजे अविचल थान ॥
लिखा लेख ललाट में, सुख दुख जेता होइ ।
तेता फल पावे सही, अधिक न उछा कोइ ॥
लीजै मारग धरमके, कीजे ज्ञान विचार ।
भीजै समकित तोयमे, सुख पावे निरधार ॥

लुलता सब दूरें हरो. रखो सत्य सन्तोख।
एक ध्यान कीजै सदा. तौ पावैगा मोख ॥ ३२९-४०
छुटे धन सब जात है. जो लायाथा साथ।
वाकी रही सु राखियै. धरम मित्रके हाथ ॥
लेकै कुछु नहि जावगे. जो नहि कीन्हा धर्म।
पून्य नफा करकै चले. रहै जगतमे सर्म ॥
लै लागी प्रभु नामकी. बिसर गये सब काम।
आनन्द घटमे ऊपजी पाए शिव बिसराम ॥
लोचन अपने खोलकै. देखो दृष्ट पसार।
छाया अपनी देखियै. उज्वल है सुख कार ॥
लौ राखो इक नामकी. सबी बात दे छोड।
तौ पावै सुख सास्वता. करम बन्धको तोड ॥
लम्पट को आदर नही. करे न को बिसवास।
सील वन्त जो प्राणियां. सब बैठावै पास ॥
लगा रहै वद काममे छोडे नहीं गमार।
अन्त समें सुख ना मिलै. पावै दुख अपार ॥
वजन रहै तेरा जवै. पूरा पावै ज्ञान।
तौल घटे वद काममे. कोइ न देवै मान ॥
वाको दरसन कीजिये जाके रुप न रेख।
निज घटके पट खोलकै दिव्य नयन सूं देख ॥
विष अमृत सम होइगो जो पालेगा सील।
विघन टले सुख उपजै. मिलै सदा शिव लील ॥
बीते दिन सब जात है. आऊ उछा होई।
जो नहि चेतै प्राणियां. जनम जायगा खोइ ॥

श्रुतसे काहे हो रहे, करो ज्ञान घट मांह।
शिव पूर जाता चेतना, कोइ न पकडे बांह ॥ ३४१–५२
वूठा अमृत मेह जब, निज घट आपा जोइ।
चेतनता सुध होयगो, झीलै समकित तोइ ॥
वेद तीन छुटै जबै, तब जीव पावै चैन।
तीन रत्न घट ऊपजे, शिव पूर जावै अैन ॥
वैन बोलियै समझके, दोष न लागै कोइ।
जीव दयाके कारने, चलियै मारग जोइ ॥
वोसराविये पाप सब, निस दिन कीजै ध्यान।
राग दोष नहि राखिये, उपजै केवल ज्ञान ॥
वौरे से दौरे फिरे, लख चौरासी माहि।
ज्ञान विना थिरता नही, फिर आवै फिर जांहि ॥
वंस पाय उत्तम जबै, करता मध्यम काम।
कुलकी लाज गमाय के, होवे जग वदनाम ॥
पसी करन जग दर्व है जिनसूं सब व्है काम।
जो तु चाहे मुकत सुख जप परमातम नाम ॥
शरण आय भगवान के, तजै करण सुख जीव।
तो पावै परमातमा शिव पूर जाय सदीव ॥
शास्त्र अनेकन जो पढे, पन्डित जग विच सोय।
राग दोष छोडै नही, मुकत कहांसे होय ॥
शिव पर अविचल राज है भव्य जीवको होय।
अभव्य जगमे भरमते पार न पावै सोय ॥
शील वन्त यो प्राणीया तिनको राग न दोख।
मगन रहै सतोष मे, तब पावै सुख मोख ॥

लुलता सब दूरैं हरो. रखो सत्य सन्तोख।
एक ध्यान कीजै सदा. तौ पावैगा मोख ॥ ३२१
लुटे धन सब जात है. जो लायाथा साथ।
बाको रही सु राखियै. धरम मित्रके हाथ ॥
लेकै कुछु नहि जावगे. जो नहि कीन्हा धर्म।
पून्य नफा करकै चले. रहै जगतमें सर्म ॥
लै लागी प्रभु नामकी. बिसर गये सब काम।
आनन्द घटमें ऊपजी पाए शिव विसराम ॥
लोचन अपने खोलकै. देखो दृष्ठ पसार।
छाया अपनी देखियै. उज्वल है सुख कार ॥
लौ राखो इक नामकी. सबी बात दे छोड।
तौ पावै सुख सास्वता. करम बन्धको तोड ॥
लम्पट को आदर नहीं. करे न को बिसबास।
सील वन्त जो प्राणियां. सब बैठावै पास ॥
लगा रहै वद काममें. छोडे नहीं गमार।
अन्त समे सुख ना मिलै. पावै दुख अपार ॥
वजन रहै तेरा जवै पूरा पावै ज्ञान।
तौल घटै वद काममे. कोइ न देवै मान ॥
वाको दरसन कीजियै. जाके रुप न रेख।
निज घटके पट खोलकै दिव्य नयन सूं देख ॥
विष अमृत सम होइगो जौ पालेगा सील।
विघन टले सुख उपजै. मिलै सदा शिव लील ॥
बीते दिन सब जात है आऊ उछा होइ।
जो नहि चेतै प्राणियां. जनम जायगा खोइ ॥

बुतसे काहे हो रहे. करो ज्ञान घट मांह।
शिव पूर जातां चेतना. कोइ न पकडै बांह॥ ३४१-५२
बूठा अमृत मेह जब. निज घट आपा जोइ।
चेतनता सुध होयगो. झीलै समकित तोइ॥
वेद तीन छुटै जबै. तब जीव पावै चैन।
तीन रत्न घट ऊपजै. शिव पूर जावै अैन॥
बेन बोलियै समझके. दोष न लागै कोइ।
जीव दयाके कारने. चलियै मारग जोइ॥
बोसराविये पाप सब. निस दिन कीजै ध्यान।
राग दोष नहि राखियै. उपजै केवल ज्ञान॥
दौरे से दौरे फिरै. लख चौरासी माहि।
ज्ञान विना थिरता नही. फिर आवै फिर जांहि॥
वंस पाय उत्तम जवै. करता मध्यम काम।
कुलकी लाज गमाय कै होवे जग वदनाम॥
वसी करन जग दर्व है जिनसुं सब व्है काम।
जो तु चाहे मुकत सुख. जप परमातम नाम॥
शरण आय भगवान के. तजै करण सुख जीव।
तौ पावै परमातमा. शिव पूर जाय सदीव॥
शास्त्र अनेकन जो पढै पन्डित जग चित्त सोध।
राग दोष छोडै नही. मुकत कहांसे होय॥
शिव पूर अविचल राज है. भव्य जीवको होय।
अभव्य जगमे भरमते. पार न पावै सोय॥
शील वन्त यो प्राणीया. तिनको राग न दे.
मगन रहै सतोष मे. तब पावै सुख मोक्ष॥

शुकल ध्यान में मुक्ति है; धर्म ध्यान सुर होइ ।
समता मनमें लायकै, करो ध्यान सब कोइ ॥ ३५३-६४
शूली सम जग जानियै, भूलै सब संसार ।
भव्य जीव जो चेतिया, ते उतरैं भव पार ॥
शेष नाग वसुधा धरै, इम कहते ससार।
भाव अनादि जानियै, तन धन वात आधार ॥
शैली रख इक धरम की, मैल न लागै कोइ ।
निर्मल चेतन होइकै, शिवपूर लीजै जोइ ॥
शोभा पावै धरम मे, पाप कर्म दे छोड़ ।
शिव सुष विलसै आतमा, अष्ट करम को तोड ॥
शोकन कीजे विषय को, पावै दुक्ख अपार ।
धरम ध्यान कर लीजियै, सुख उपजै निर धार ॥
शष वजे बहरा निकथ, वह देखे फल खाइ ।
ज्ञान हीन जो प्राणिया, सदा विवेक न थाइ ॥
शशी कलंक कटक कमल, निरधन है दातार ।
धन वन्त कृपणता धरै, दोष सवन के लार ॥
षट काया प्रति पालते, जीव दयाके काज ।
तिनको दोष न लागि है, पावै अविचल राज ॥
खाना पीना पहरना, जिनको मिलै अ सार ।
पुन्यवन्त नर जानियै, दुख नहि होइ लगार ॥
षिरे करम आठो जवै, तव पावै शिव थान ।
नाहितो जगमे भरमना, लख चौराशी जान ॥
षीजै मत कीण जीवसू, कीजै धर्म सनेह ।
चेतन चेतो आपको, फिर नहि मनुपा देह ॥

खुसी रहै मन मे सदा, दिलगीरी कर दूर ।
समता गुण चित लाइये, सुख पावे भर पूर ॥ ३६५–७६
खूटेगा जब आउषा, तब थिरता नहि हेय ।
जीव चलै तनसु निकल, राखन हार न कोय ॥
खेती उत्तम कीजिये, धर्म भ्रम सुख कार ।
रोपो समकित बीज को, फलै पुण्य निरधार ॥
खैर जान के होइगा, जब सुमरैगा नाम ।
सकल व्याध दूरे टलै, सुफल होइ सब काम ॥
खोटी बात न कीजियै, जिनसै होइ उपाध ।
भलै भलाई ना तजे, ज्यौ दुख पडै अगाध ॥
खौप न कीजै प्राणिया, समता मनमे लाव ।
जो अबके चेते नही, फेरण ऐसा दाव ॥
खण्डन मनको कीजीये, छडो विषय विकार ।
डडो इद्री पाच जब, तब पावै भव पार ॥
खपे करम जब मुक्ति है, जपै नाम चित लाय ।
धुरे फेल कीजै नही, आवा गमन मिटाय ॥
समकित पावै प्राणिया, पहुचे अविचल थान ।
फिर नही जगमे भरमना, छूटै करम निदान ॥
साचा को सब चाहते, झूठा को नहि मान ।
बोल यथारथ बोलिये, चेतन होइ कल्याण ॥
सिद्ध बराबर सुख नही, दुख नहि नरक समान ।
सुद्ध चेतना होइकै, लीजै शिव पूर थान ॥
सीखे वेद पुरान सब, सीखे जोतिक सार ।
एकै दया न सीखिया, गए जनम को हार ॥

सुनके कथा पुरानको, हियमे उपजी ज्ञान ।
राग दोष को छोडकै, सदा करै शुभ ध्यान ॥ ३७७-८८
सूम दरब खरच नहीं, जोड जोड मर जाइ ।
सखी जीव धरमातमा, धन खरचै और खाइ ॥
सेरी सेरी भरमते, काहे चतुर सुजान ।
घटमे देख निहारकै, तब पावै भगवान ॥
सैना सनमुख मोहके, करै जुद्ध जिय साथ ।
ज्ञान कटक समता लियें, जीत भइ जिय नाथ ॥
सोना रुपा देखकै, भुग भुग लये सब जात ।
च्यार दिनाकी चांदनी, फेर अंधारी रात ॥
सौले पासे डालकै, चले जु अवलेस चाल ।
विना समझे हारे सदा, समझै जीते लाल ॥
सयम मारग कठिन है, जो पालै सो सूर ।
सत्य सील समता धरै, करम करै चक चुर ॥
समझो चेतन आपको, सदा करै तप जाप ।
शुभ करनी मनमे धरै, दूर जाय सब पाप ॥
हस हस कर मन बांधियै, नहि छुटेगा रोय ।
समझो समता ज्ञानमे, चेतनता सुख होय ॥
हारे मत जग आयकै, सारे आतम काज ।
टारे राग अरु दोषको, तौ पावै शिव राज ॥
हित कीजै सब जीव सू. वैर भाव तज देय ।
जो तुं आया जगतमे. शुभ करनी कर लेय ॥
हीने सु नहि बोलिये. हीन होइ सब ज्ञान ।
जो तै चाहे आपको. तौ करिये शुभ ध्यान ॥

हुकम बडेको राखिये शीखे वडे की मान ।
कीजे काम विचारके, पाप पून्य पहिचान ॥ ३८९–४००
हूवा मनुखा देहते, पूरव पून्य प्रभाव ।
अबके चेतो चेतना धरम ध्यान मन लाव ॥
हिलेगा भव सिंधु जब, तब उतरेगा पार ।
भेलै कर्म कुचाल को, सुख पावै निरधार ॥
है सुक्षम परमातमा नहि सुझे दृग हीन ।
दिव्य नयन सू देखिये, जो होवे परवीन ॥
होन हार सो होयगा, अन होनी नहि होइ ।
लिखा लेख जो भालका, मेट सके नहि कोइ ॥
हौले हौले साधिये, विद्या अरु अभ्यास ।
मिहनत सुं सब सिद्ध व्है, पूरे मनकी आस ॥
हंसा जब उड जायगा पिंजर रहै निदान ।
तब बसाय कछु ना चले समझो आप सुजान ॥
हलकी बात न बोलिये अपने मुखसू वैन ।
धर्म ध्यान की बारता, सदा कहो दिन रैन ॥
लगन लगी प्रभु नामसू विसर गइ सब काम ।
समता मनमे उपजे पावै शिव विसराम ॥
लाज करो बद फैलसू, लपटो मत संसार ।
अपना जगमें को नहीं झुठा मोह विकार ॥
लिव लगै जिन बातमे सो नहि कहिये बात ।
भली बातमें जस बधै सो कहिये विख्यात ॥
लीला कछु कीजै नहीं लीला दोष विलास ।
लीला जगकी छोडिये, तब पावै शिव वास ॥

लुबध रहे संसारमें कुबध किये सर्व काम।
सुबध ध्यान आवे जबे, तव पावे बिसराम ॥ ४०१-११
लुखा सूखा खायके, निर्मळ पानी पीव।
परकी चुपडी देखिके, मत तरसावे जीव॥
लेखा जो खाउ फरस मत करिये नुकसान।
पूजी रखिये आपनी तौ सुख पावे जान ॥
लेली नारी मोखकी मजनू जीव समान।
चेतन ऐसी प्रीतिकर, तौ पहुंचे शिव थान ॥
लोंचे मूडे केसको, भावे जटा वधार।
ममत मान मेटै नही, नहि पावे भव पार ॥
लौके अनुभव ज्ञात जव, घटमे जोत प्रकाश।
उपजै समकेत वासना, पुरै मनकी आस ॥
लंघे भव सागर विकट, कटक मोहकी जीत।
पहुंचे अविचल थानमे, छोड़ जगतकी रीत ॥
लपटै मत संसार मे, कपट दीजियै छोड।
जो चाहे सुख सास्वता, तौ समता गुन जोड़ ॥
क्षमा खड्ग कर लीजिये, करौ मोहसूं युद्ध।
जीत निसान बजाय के, पहुंचे अविचल शुद्ध ॥
क्षायिक समकितवन्त जो, सो पावे भव पार।
लख चौराशी भरमना, छूट जाय निरधार ॥
क्षितमे आए अवतरे, मनुष रूप है आप।
पाप करम को छोड़के कीजे तप अरु जाप ॥
क्षीर नीर सम प्रीत कर, मिले जोत सू जोत।
सुद्ध चेतना कीजीये, तौ अविचल सुख होत ॥

क्षुधा परीसह जीति कै तब कीजे गुन खान ।
लवध अठा वीस उपजै किरिया व्रत मन आन ॥ ४१३-३४
क्षुद्र पना को छोडकै सरल भाव मन आन ।
क्रोध मान माया तजो, तो सुख उपजे जान ॥
क्षेत्र विदेह सुहावनो जनमे श्री भगवान ।
विहर मान जिनवर तिहा, सो मन धर गुन खान ॥
क्षै होगा जब कर्म सब तब पावै शिव राज ।
फिर नहि जगमे अवतरे छुट जाय सब काज ॥
क्षोभ न कीजे प्राणिया समता मनमे आन ।
धरम ध्यान कर लिजिये पावै अविचल थान ॥
क्षौर कर्म कर लीजियै शुभ नक्षत्र शुभ वार ।
तो सुख पावै आतमा लगे न दोस लगार ॥
क्षेवो मनको आपने सचे समता भाव ।
मनुष जनम को पायकै मत खोवै ते दाव ॥
क्षम है धरम ध्यान कर पावै केवल ज्ञान ।
अविचल सुख विलसै सदा शुद्ध आतमा राम ॥
अकल सरूपी अगम गत परम जोत भगवान ।
इन साहिव के ध्यान धर मेटो ममता मान ॥
आपा आप विचार कै देखो घट पट खोल ।
अन्तरमे परमातमा और ठोर मत डोल ॥
इत आवत उत जात है जनम चवन कई वार ।
नर भवमें जो चेतिया सो उतरे भवपार ॥
ईनते भोत लागे नही धरम समता अरू सील ।
सत्य वचन भाखै सदा, तो पावै शिव लील ॥

उत्तम करनी कीजियै, मध्यम दीजै टाल।
दान सील तप भावना, कीजै मन उजमाल॥ ४२५३६
ऊगे अनुभव ज्ञान जब, निरमल आतम होय।
जग बंधन सब छोडकै, शिव पद पावै सोय॥
एक नाम चित धारियै, दुविधा दीजै त्याग।
तीनो तत्व विचारकै, जोग जतनमे जाग॥
ऐश्वर्य मिलेगा पून्यसुं, पाप सदा दुख देत।
पून्य पाप सुख दुख सकल, मंटै शिव सुख हेत॥
उपजै अनुभव ज्ञान जब, रोपै समकित मूल।
अविचल फल चाखे सदा, सो जिव है अनुकूल॥
ऊवल बात सुहावणी, सबको लागे प्यार।
बुरा बात नहि बोलियै, दुख पावे संसार॥
अंग पवित्र जब होइगा, सत्य सील मन धार।
जिय पवित्र जिनके भये, सो चेतन भवपार॥
अध्यातम बारे खडी, पूरी भई सूजान।
सब सैतालीस अङ्कके, चेतन भाख्यौ ज्ञान॥
अङ्क अङ्क दोहे धरे, बार बार गुन खान।
सब च्यारसै बचीस है, बारखडी के जान॥
संवत ठारे त्रेपने, सूकल तीज गुरु वार।
जेठ मासको ज्ञान यह, चेतन कीयो विचार॥
यामे जो कछु चुक है, ते चकसो अपराध।
पन्डित धरो सुधार के, जो गुण होई अगाध॥
ज्ञान हीन जानो नहीं, मनमै उठी तरङ्ग।
धरम ध्यानके कारणे, चेतन रचे सुचङ्ग॥ संपुर्ण।

ॐ साधुवन्दना ॐ



(ढाल)

नमो अनंत चौवीसी ऋषभ आदि महावीर। आरज खेतर मे घाली धरम नी सीर ॥ १ ॥ महा अतुल वली नर सूर वीर ने धीर। तीरथ वर वरतायो। पहुंता भव जल तीर २ ॥ सिरि मन्दिर परमुख जघन तीर्थ कर वीस। छै अढाई द्वीपमै जयवन्ता जगदीस ॥ ३ ॥ इक सौने सत्तर उत कृष्टा पद वीस। धन मोटा प्रभुजी ज्याने नमाऊं सीस ॥ ४ ॥ केवली दोइ कोडि उताकिष्टा नव कोडि। मुनि सहस दोय कोड उताकिष्टा नवजोडि ॥ ५ ॥ भावै करि वंदु टालै भवनी फोड़ि। विचरै विदिह मे मोटा तपसी घोर ॥ ६ ॥ चौवीसे जिणना सगलाइ गणधार। चौदेसे बावन ते प्रणमुं सुखकार ७ ॥ जिण सासण नायक धन सिरि बीरजिणद। गौतमादिक गणधर वरताया आनन्द ॥ ८ ॥ सिरि ऋषभ देवना भरथादिक सौपूत। वैरागे मन आण्यौ सजम लियौ अदभूत ॥९ केवल उपजायौ कर करणी कर तूत। जिण मारग दीपायौ सगलाई मुकत पहुंत ॥ १० ॥ सिरि भरथेसर जौना पाटोदर हुवा आठ। अदीत दसादिक पहुता शिव पुर पाट ॥ ११ श्री जिन अन्तर ना हुवा पाट असप। मुनि मुक्ति पहुता

टाली करमनी बद्ध ॥ १२ ॥ धन कपिल मुनीसर नमि नमु
अणगार। जिण ततखिण त्यागो सहस रमणि परिवार ॥ १३
मुनिवर हरिकेसी चित्त मुनीसर सार। सुद्ध संयम पाली क
दियौ खेवौ पार ॥ १४ ॥ वलि इखुकार राजा घर कमल
वति नारि। भृगुने जस्सा तेहना दोइ कुमार ॥ १५ ॥ छओं
ऋद्धि छाडीने लीधो संयम भार। इण अलप कालमें प
मोक्ष सुखसार ॥ १६ ॥ वलि संजती राजा हिरण आहें
जाय। मुनिवर गद्धभाली आण्यौ मारग ठाय ॥ १७ ॥ चारि
त लेईन भेट्या गुरां ना पाय। खत्री राज ऋषीसर चरचा की
चित लाय ॥ १८ ॥ भिन्न भिन्न करीने सदह राख्यौ नाहि
दोनो संयम आराधी गया मुकति गढ माहि ॥ १९ ॥ दसमों
चक्रवर्त्ति राज रमणि ऋधि छोडि। मुनि मुकत पहुता कुल
सोभा चाढि ॥ २० ॥ इन सरपणि माहे आठ राम गया
मोक्ष। बलभद्र मुनीसर गया पांचमे देव लोक ॥ २१ ॥
दसारण भद्र राजा बीर वांद्या धरमान। पाछे इन्द्र हटायो
दियौ छ काया ने दान ॥ २२ ॥ कर कडू परमुख चारोंही
पर तेक बुध। मुनि मुकति पहुता जीत्या करम महा जोध
॥ २३ ॥ जिन मोटा मुनिसर भिरगा पूत्र जगीस। मुनिवर
अनाथी जीत्या राग ने रीस ॥ २४ ॥ धन समुद पाल मुनि
राज मती रह नेम। केसीने गोतम पाम्या शिव पुर खेम ॥ २५

धन विजय घोष मुनि जय घोष बलिजाण । श्री गिरिका चारज पहुता छे निरवान ॥ २६ ॥ श्री उत्तरा ध्ययनमे जिनवर कियो बखाण । सुधे मन धारो मनमे धीरज आण ॥ २७ ॥ वलि षभक सन्यासी राख्यो गोतम नेह । श्री वीर समीपे पञ्च महाव्रत लेय ॥ २८ ॥ तप कठिन करीने झुसी अपणी देह गया अच्यु देव लोके चवि लेसी भव छेह ॥ २९ ॥ वलि ऋषभ दत्त मुनि सेठ सुदरसण सार । शिवराज ऋषीसर गाङ्गयो अनगार ॥ ३० ॥ सूध संजम पाली पाम्या केवल सार । च्यारांही मुनिवर पहुता मोक्ष मझार ॥ ३१ ॥ भगवत नी माता धनर सती देवानंदा । वलि सती जयन्ती छोड दिया गिरिफंदा ३२ ॥ सती मुकांति प ती वले वीर ना नंद । महासती सुदरसणा घनी सत्यारा वृंद ॥ ३३ ॥ वलि कातिक सेठै पडिमा वही सौवार । जिण मुहरी ऊपर तापस कियो आहार ॥ ३४ ॥ पाछै चारित लेईने भत्री पाच से भीर । मरि हुवो शकेंदर चवि लेसी भव तीर ॥ ३५ ॥ वलि राय उदाई दियो भाणेजाने राज । पोते चारित लेइने साधो आतम काज ॥ ३६ ॥ गगदत्त मुनि आणद तारण तरण जिहाज । कुसल्ला मुनि रुवो दियो घणाने साज ॥ ३७ ॥ धन सुनक्षत्र मुनिवर सर्वानु भुति अणगार । औरादिक होइने गया देवलोक मझार ॥ ३८ ॥ वलि सुकर्या जामी वल-

जजाल । भीपुरी पडिमा गया मसाण महाकाल ॥ ६५ ॥
देखी सोमल कोप्पो मस्तक बाधी पाल । खेराणा खीरा सिर
ठविया असराल ॥ ६६ ॥ मुनि नजर न खंडी मेटी मन नी झाल
परीसो सहने मुकति गया ततकाल ॥ ६७ ॥ धन जालि
मयालि उवयाला दिक साथ । सभु ने परजुन अनरुद्ध साध
अगाध ॥ ६८ ॥ सच नेम दिढ नेमी करणी कीणी बाध ।
दस मुकति पहुता जिणवर वचन अराध ॥ ६९ ॥ धन अर
जुन माली कियो कदाग्रह दूर । वीर पै व्रत लेइने सतवादी
हुवा सूर ॥ ७० ॥ कर छठ २ पारणै क्षमा कीधी भरपूर ।
छम्मासी माहीं करम किया चकचूर ॥ ७१ ॥ धन कुमर
अईवता दीठा गौतम स्याम । सुणि वीरजीमी वाणी कीधौ
उत्तम काम ॥ ७२ ॥ चारित लेइने पहुच्या शिव पुर ठाम
दुर आद मकाइ अनंत अलख मुनि नाम ॥ ७३ ॥ वलि
किसन रायनी अग्गर महिषी आठ । वलि पुत्र बहु दोइ सन्नि
या पुन्यना ठाठ ॥ ७४ ॥ चारित लेइने पहुची शिव पुर
पाट । शुभ सयम पाली ने करमनौ कियौ उचाट ॥ ७५ ॥
श्रेणिकनी राणी काली आदि दस जाणि । दसौ पुत्र वियोगे
सांभली वीरजीनी वाणि ॥ ७६ ॥ चंदन बालापे सयम
लेवै जाण । तप कर देही झुसी पहुती छै निरवाण ॥ ७७
नंदादिक तेरे श्रेणिक नृपती नारि । सगली चदणापे लीधौ

सयम भारि ॥ ७८ ॥ इक मास सथारे पहुता मुकति मझार
या नव्वे जणानो अन्त गडमे अधिकार ॥ ७९ ॥ श्रेणिक नो
बेटा जाली आदि तेवीस । वीर पे व्रत लेईने पाली विसवा
वीस ॥ ८० ॥ तप कठिन करीने पूरी मनरी जगीस । देव
लोक पहुता मोक्ष जासी तजि रीस ॥ ८१ ॥ काकदी नो
धन्ना तजी वत्तीसो नारि । श्री वीर समीपे लीयो संयम
भारि ॥ ८२ ॥ करि छठ छठ पारणो आविल उचित आहार
श्री वीर वखाण्यो धन धन्नो अणगार ॥ ८३ ॥ इक मास
सथारे स्वारथ सिद्धि पहुत । महा विदेह खेतर मे करसी
भवनो अत ॥८४॥ धन्ना नी रीते हूवा नव्वे सन्त । अणुत्तरो
वाइ मे भाप गया भगवन्त ॥ ८५ ॥ सब्बाऊ पर मुख पांच
पाचसे नारि । तजिके व्रत लीयो पच महाव्रत धारि ॥ ८६
चोखो सुध चारित पाल्यो निरतो चार । देव लोक पहुता
सुख विपाक अधिकार ॥ ८७ ॥ श्रेणिक ना पोता पउमा
दिक हुवा दस । वीर पे व्रत लेईने काढ्यो देहीनो कस्स ॥ ८८
सयम लेइने देव लोकामे वस । महा विदेह खेत्रमे मोक्ष
जासी ले जस ॥ ८९ ॥ वलिभद्र जीरा नन्दन निपडादिक
हुवा वारे । पचासर अन्ते ऊर, त्याग दिया संसार ॥ ९० ॥
श्रीनेम समीपे च्यार महाव्रत लीध । महा विदेह खेतरमे
संयम लेइने सीध ॥ ९१ ॥ धन धन्नो सालि भद्र मुनी सुरा

री जोडि । नार्यां ना चधण तडदे नाख्या तोडि ॥ ९२ ॥ घर कुटंव कवीलो धन कचण री कोडि । मास मास खमण तप टाली भवनी खोडि ॥ ९३ ॥ सुधर माना सिख धन १ जंबु स्वामि । तजि आठ अते उर मात पिता धन धान ॥ ९४ प्रभवादिक ताचा पंहुता शिर पुर ठाम । सूतर पर वरतायौ जगमे राख्यो नाम ॥ ९५ ॥ धन ढढण मुनीसर कृष्ण राय ना नंद । सुद्ध अभिग्रह पाल्यौ टालि दियो भव फद ॥ ९६ वलि पंथक ऋखिनी देही उतारी खाल । परीसो सहने मुकति गया ततकाल ॥ ९७ ॥ वलि पधक रिषिना हुवा पांचसौ सीस । घाणीमे पील्या मुकति गया तजि रीस ॥ ९८ । संभूत विजय सिख भद्रबाहु मुनीराय । चौदे पूरव धारी चद गुपति आण्यौ ठाय ॥ ९९ ॥ वलि आद्र कुमर मुनि थुलभद्र नदिषेण । अरणक अइवता मुनी सरारी श्रेणि ॥ १०० ॥ चौवीसे जिण ना शिख अठाईस लाख । सहस अड तालीस ऊपर सूत्र परंपराय भाख ॥ १ ॥ धन मोरा देवी माता ध्यायौ निरजन ध्यान । गज हौदे पाम्यो निरमल केवल ज्ञान ॥ २ ॥ आदी सुरनी पुत्री ब्राह्मी सुंदरी दोइ । चारित लेईने मुकति गई सुध होइ ॥ ३ ॥ चौवीसे जिणनी वडी सिखणी चौवीस । सती मुकति पहुती पूरी मनरी जगीस ॥ ४ ॥ चौवीसे जिणना सरव साधवी साध । सैतालीस लाख

आठसे सतर हजार ॥ ५ ॥ चेडा नृपनी पुत्री राखी धरम सूं प्रीत । राजमती ने विजयां मृगावती सु निनीत ॥ ६ ॥ पदमा वती मैणरेहा द्रौपदी दमयंती सीता । इत्यादिक सतीयो गई जमारो जीता ॥ ७ ॥ चौवीसे जिणना सरव साधवी साध । गया मोक्ष देव लोके हिरदै धरो अगाध ॥ ८ इण अढाई दीपमे गरडा तपसी वाल । सुध महा व्रत धारी नमो नमो तिरकाल ॥ ९ ॥ उत्तिम जिप वांचे मुहडे जय णा राख । उघडे मुह बोल्या पाप लागे ततकाल ॥ १० ॥ सरव साध साधवि वंदु नित धरि भाव । कहे रिप जैमल जी यौंही तरणको दाव ॥ ११ ॥ इति साधु वंदना संपूर्ण ॥



अथ श्रीकरण कृत गौतम स्वामीनी सिझाय ।

समव सरण सिंहासणे जी वीरजी करे रे वखाण, दसमे उत्तरा ध्ययन माजी दे उपदेश सुजाण । समयमे गोयम म करे प्रमाद, वीर जिणेसर सीखवेजी परिहर मद विषवाद ॥ सम० गो० १ ॥ आंकणी) जिमतरु पंडुर पानडोजी पडता न लागे जीवार, तिम ए मानस जीवडोजी थिर न रहे ससार ॥ स० २ ॥ डाभ अणिजल उसनोजी पिण एक रहै जलबिंद, तिम ए चंचल जीवडोजी न रहे इन्द्र नरींद ॥ स० ३ ॥ सूक्ष्म नि

गोद भमी परीजी रासी चढयो विवहार, लास चौरासी जीवा योनी मेजी लाधो नर भव सार ॥ स० ४॥ सरीर जराये गोज रोजी सिर पर पलीयाजी केस, इन्द्री बलहीणा पडयांजी पग पग पखे कलेस ॥ स० ५ ॥ भव सायर तरवा भणीजी चारीत्र प्रवहण पूर, तप जप संयम आकरांजी मोक्ष नगर छे दूर ॥ स० ६ ॥ इम निसुणि प्रभु देसनाजी गणधर थया सावधान, पाप पडल पाछा पडयांजी पाम्यो केवल ज्ञान. स० ७ ॥ गोतम ना गुण गावताजी घर संपत नी जी कोडि, वाचक श्री करण इम भणेजी प्रणमु बेकर जोडि ॥ स० ८ ॥ इति ॥

॥ अथ शीलका कडा ॥

धरमनां छे अनेक प्रकारक, व्रत मोटा कह्या पांचुही सारक, शील समानो जी को नहीं (सूत्रपुराण कुराण विचारक शील समानो जी को नही) शील सु मांड ज्यो प्रीत अपारक पर रमणी जननी गिणो। आख्या मीचि मत करो अंधारक काले ही परभव पहुचणो। दुख देसी छली कांम विकारक आफरे अब नहीं लागसी, सबलो लज्यो जी समकित सारक शील सघाते जो मिले, रतन जडित सोभे सोवनो हारक तो शिणगार सुहामणो। शील समो नही कोई आधारक ॥१

शील अखंडित सेवज्यो । जेहवो चंचल कुंजर कानक, चेग पडे जिम पाकरे पानक, जेहवी चचल वीजली । अथिर हावे जिसा सध्यानो भाणक । डाभ अणीजल बिन्दुरो । जेहनो योवन सु अभि रामक, खिण खिण जायछे छीजतो । विषय से मत राचज्यो विष समानक, फल किपाक नी उपमा । सुख नहीं छै आ दुखरी खाणक । त्रिपत होइ मुवा नही । इद्र नरेद्र बड बडा राजाणक, आउग्या अठ्ठाही चल्या गया । परभव मे हुयी घणी हेराणक । रमणी के सुख मती राच ज्यों, सूत्र में भाख्यो छै श्री भगवानक ॥ २ शील० ॥ शुध शील पाल्यां फुल फलक न होयक, जिन धर्म साचो करि जाणज्यो, सोय इन पापने मुल थी परिहरो । एम विचार करो मन माहिक । देव देवी तणी पूजनीक होइक, तीन लोक जश होवे घणो । रोगने आपदा तेहने कोइक, मोक्ष गामी हुवे शील सू । अगनि शीतल होवे शील सु जोइके । शील सूं विष अमृत हुवे, शील सु सरप होवे फुलनी मालक । हाथी होवे बकरा सारिखो, शील सु सीह हुवे मृग समानक, आपदा टलै सपद मिलै, कामण दिष्ट नष्ट देवे टालक । समुद्र थाह देवै तेहने, मेरु टीलो हुवै ततकालक वीर जिणेसर इम कहो । ए गुण जाणी शील शुध पालक ॥ ३ शील० ॥ चौथें जी सवर दशमे जी अंगमे अरथ कहु तुमे सुणो मन रङ्गक, अङ्ग सु आलश परिहरो । बारोही परषदा

चरित्र नो न लभै अंतक । ऊरसी देख होवै भय भ्रांतक, सरप ने शीश लेइ सूवे । देहली उलंघ ता दुख धरतक । कांम पडयां गिरवर चडे । सीक लपाय कपिल धुरगक, कथ आणी धरणी धुरा । कांमणी रे संग दुख अनंतक । धरणी नाथ धुजा वीयो खिणमांहे रग विरगज थायक, मुज राजा तणी क्षय कीया नरक सुं नारियां देह बुड्डायक । नीरख जाने वरी पीडता, पाश पड्यां थका कोई छुटतक, थे पहिला आपो संभालज्यो। मत करो रमणी सुं रमवा की खंतक ॥ ९ शील० ॥ नारी अरथे हुवा सबल स्यामक । चडबडा भुपति रह्या छै ठांमक, कट कट मुवा छै अति घणां । कुण २ देश ने नगर कुण ग्राम छै । कहुं छु थोडी सी वानगी, चित्त लगाय सुणो तेहनां नामक, द्रौपदी रे पर सग सु । कृष्ण पाडी पदमोत्तर नीं मामक । रावण सीताने अपहरी । भारत कीयो छै लिछमण रांमक, रुपमणी ने पदमावती कृष्ण जी परणीयां करी संग्रामक । उदाई चंड प्रद्योतने, ते पिण स्वर्ण गुलि कारे काजक, अर्ज्जुन जुद्ध कीया घणां, रगन सुभद्रा परणवे काजक ॥ १० शील० ॥ भैण रेहा तणै कारणे जांणक, मण रथ हणीयां छै बयत्र प्राणक, मरने गयो नरक सातमी । चड प्रद्योतन तेहीज जाणक । मृगा वती रुपज सांभल्यो । फोजां ले आवीयो मांडे मडाणक, कसूंबी नगरी घेरो दीयो, जीवा

री कीयो घणो घम साणक। रोहिणी परणवा कारणे, वसु-
देव राजा कियो जय तानक, वळे राणी पद्मावती कौणिक
वचन कीयो प्रमाणक। दशमाई दु मात मरावीयां, नारिरी-
मूलत रारि जी काणक। एक कोडी असी जी लाखनो, मिनिष
मराय कीयो घम आणक ॥ ११ शील० ॥ कामकला इयाली
पेजी नारक। कुल तणां केहे उडावे जी छारक। उलट रहे
मद सु छकी, ऊंच छाडे करे नीच सू आचारक। निखरियां
वारण सु दुरी, इण जग चित्यनी चोरण हारक छल छिद्र रहे
जोवती, रहे काम कटक में नायका नारक, नयण ना बाण
वर सावती, वहे नित तीपो तरवारक, लख जनाने आगे आगे
लूटीया, अरणकादिक ने आद्र कुमारक। मोटा ऋषिशर ते
हने, सजम धर इणे पोस्यौ धुतारक। नरक देशी जिनवर
कही, नारीनी सगत वरजी वार वारक ॥ १२ ॥ शील० ॥
ओरनो रुप जोवे शिणगारक, ओरसु भोगवे भोग विलासक
वचन सु ओरने रीझवे, ओरसु चित हुवे चित्त मझारक,
आल देवे शिर ओरके, दुष्टरी कोथली कपट भंडारक एन्हह
काजल तणी कूपली। कामणी मूसीयो सकल संसारक,
मधुर वचन विस्वास दे, निस्चत लागे नहीजी काई वारक
स्वारथ दीशे नहीं पूजतो, नारीजो दियसीयो निज भरतारक,
सुरी कता राणी सांभलो, तेहनो नेह जिस्यौ नीपनो छारक।

१३ ॥ शील० ॥ सगलीहो नारि नही चचल होइक, पुरुष भला सहु मत कोइ कहो। इक नार ज्यू नर पिण जांणज्यो, आपणो दोषण जांण ज्यो सोयक।सेवतां विषय दोन्या मुंो शीलसुं शिव पुर दोनाने होयक। नार कुलछणी किम होयें, पुरुष कोई सुलपणो होयक। बाजेहो तालीजी किण विधे, एकण हाते बाजै नही कोयक। पुरुष कोइ पर नारसुं सेवे कुशील जन्म दवै पोयक। पाप उदै हुवा इण भवै, राप लूटे खोसै सूली देवै पायक। पर भव मे दुख होवे घणों, इण समो फांस बधण नही कोइक ॥ १४ ॥ शील० ॥ नारी हुवे केई शीलनी खाणक। वीर जिणद कीया त्यांरा वखाणक कष्ट पड्याजी कायम रही, चंदन बाला वले चेलणा जाणक। राजे मती वली द्रौपदी, सुभद्रा शतीनो शील वखांणक। श्रीमती ने पदमावती, दवदती अजणा शीलनी खांणक। मैन रेहा कमलावती मृगावती शील मे सुध परणामक। सतीयांरा नांम केता कहु जिन धर्म दीपायो राखी कुल कांणक जन्म सफल कर जश लीयो सुध मन पालवे जिनवर आंणक धन धन त्यांहरे विरत णे, शीलरे कारणे भाज दे प्रांणक ॥ १५ ॥ शील० ॥ सुरतरु आगणे ऊगछे सुरक। उपणी रोपे जी आक धत्तूरक कुष्ट करै अङ्ग वासनां, छोडने शील करे भस मूरक। हाथी सटै खर समदे रतन चिंतामण

टालने दूरक। कांच ग्रहो कुमती लहै बिष्टा मे मूंठो घाले गड सूरक। कण सहित कूडो जी छोडने, आंब ने दाडिम छोड धीजूरने,काग नीबोली ग्रहण करे बिषय सेव्यां चोथो ब्रत थक चूरके अकल बिना जीव बापडा, नरक नीगोद मे बह-गया पूरक। शास्वता सुखांनी होवै चाहना, तो पालज्यो शील नारी तजो दूरक ॥ १६ ॥ शील० ॥ इति श्री शील रा कडा सोलै सपूर्णम् ॥



॥ ५ ॥ अथ पत्रक मुनि राजनो चो ढालीया ॥ १ ॥

(ढाल) नमु वीर सासन धणी जी गण धर गोयम स्वामी कथा अनुसारे गाय सु जी, पथक ना गुण ग्राम (क्षमावंत जोय भगवन्त नो जी ज्ञान ॥१॥ अति क्षमा अधिकी करी जी संजम धारी जी जान। शिव मारग ने कारणे जी रहेता धरम ने ध्यान २ क्ष० ॥ त्वचा उतारी देहनी जी रहेता समता जी भाव। जिन धर्म कीयो दीपतो जी, मोटा प मुनिराय ॥ ३ क्ष० ॥ सावत्थी नगरी सोभती जी कनक केतु तिहां भूप राणी मलया सुंदरी जी, पत्रक कुमार अनूप ॥ ४ क्ष० ॥ सगला अंग सुंदरे जी, इद्री नहीं इक हीण, प्रथम वये चढती कलाजी चतुर कला प्रवीण ॥ ५ क्ष० ॥ विजय सेन गुरू आवीया जी, साधु तने परिवार, ज्ञान गुणे करि आगलाजी नरमी

मारग सार ॥ ६ क्ष० ॥ नरनारी बहुते मिली जी, साधुवांद
ण कोड । केइ पाला केइ पालख्या जी वंदे होडा होड ॥७॥
क्ष० ॥ राधक कुमर पिण आवियो जी, बेठो परषदा माहि।
मुनिवर दीधी देसना जी सगलाने चित लाग ॥ ८ ॥
क्ष० ॥ आगार ने अणगार ना जी धर्म तणो दोय भद
समकित सहित व्रत आदरो जी रापो सुगति उमेद ॥
९ क्ष० ॥ डाभ अणी जल विंदुवो जी पाको पीपल
पान अथिर तनधन आउषो जी तजो कपट नेमान ॥
१० ॥ क्ष० ॥ विहडे सुतने बाधवो जी विहडे सज्जन पर्म
कुटब पिण विहडे सहुजी, नवि विहडे जिन धर्म ॥ ११ क्ष०
आयोछे जीव एकलो जी, जातो एकेलो जी जाय । बांध्यां
जीव कर्म जिसा जी, तिमा उदे हुवे आय ॥ १२ क्ष० ॥
पुन्य योगे नर भव लह्यो जी सद गुरु नो सयोग । हिव पछे
रापो मता जी तजो जहर जिम भोग ॥ १३ क्ष० ॥ चारु गत
संसारना जी लग र'हि खाचा जी ताण चलवस्तु सगली कही
जी निश्चलछे निरवाण ॥ १४ क्ष० ॥ ओछछा जीतव ने कारणे
जी स्यु चो कूडी राग, भव भव माहि काढिया जी नटवे
वाला साग ॥ १५ क्ष० ॥ अथिर सुरा ससारना जी काई
अलुझो जाल, वचन सुणी सत गुरु तणा जी चेतो सूरत
सभाल ॥ १६ क्ष० ॥ पच महाव्रत आदरो जी श्रावकना

अंतवार कष्ट पड्या गाल्या रहो जी जिम पामो भव पार ॥ १७ क्ष० ॥ धन धान घर हाटडी जी ममता मकरो जी कोय, काचा सुखने कारणे जी, हारयो जनम मखोय ॥ १८ क्ष० ॥ सग पिण सहु ससारना जी थया अनता जी वार मिल मिल मिलने विछडरी गया जी करमज लागा लार ॥ १९ क्ष० ॥ सगपिण सहु ससारना जी स्वारथ ना छेजी एह जो स्वारथ पूगे नहीं जी तटके तोडे नेह ॥ २० क्ष० ॥ नरक निगोद मे दुख सह्या जी छेदन भेदन अनेक, केता पिण निठा जीवने जी सुरत नहीछे कोय ॥ २१ क्ष० ॥ ठग बाजी मांडी घणी जी चाडी चुगली जी पाय, करम उदे आया थका जी, पडे गला मे आय ॥ २२ क्ष० ॥ इसा दुख सू डरपे नहीं जी चेतो तुम भव्य जीव, ज्ञानादिक आराधने जी तुम द्यो मुगत नि नींव ॥ २३ क्ष० ॥ दिल मे दया विचारने जी, छाडो जी खाचा ताण, आज्ञा सहित किरिया करो जी ए जीवित परमाण ॥ २४ क्ष० ॥ मुगति तो निश्चे मिलै जी, कदा दूरे रहे जाय । देव लोक वासो वसे जी, सुख घणा तेण ठाय ॥ २५ क्ष० ॥ नाणी सुणी साधा तणी जी सुंदर जोड्या बेहू हाथ । वचन तुमारा सग दह्याजी भला किया कृपा नाथ ॥ २६क्ष० ॥ मात पीता ने पूछन जी, लेसू सजम भार घलता मुनिवर इम कहे जी मकरो ढील लिगार ॥

नयणे छुटे नीर सु० विरह व्यापि चिता थइ ए ॥ ७ ॥ राजा साह मोजाय, राणी इम किम रोय सु० सुख माहे दुख किम हुवो ए ॥ ८ ॥ साधुने जावतो देख, राजाने जाग्यो द्वेष सु० एए करम एणे किया ए ॥ ९ ॥ राणी हूति सुख मांहि रेवाडी इण आय सु० तांहि खबर साधु तणी ए ॥ १० ॥ राय विचारी गेर, जाग्या पूरव वैर सु० पाछल भव कावर तणो ए ॥ ११ ॥ माठी विचारी मन माहि, मसाण भुमहे जाय सु० त्वचा उतारो एह नि ए ॥ १२ ॥ राजा नफर बोलाय, वेगा जावो धाय सु० इण साधु ने पकड ल्यो ए ॥ १३ ॥ मत कर जो कांइ काण, ले जाय जो मसाण सु० सगली खाल उतार जो ए ॥ १४ ॥ नफर सुणी इम वाण, करसी धी परमाण सु० अजाग चक राजा जायने ए ॥ १५ ॥ पकड्या मुनि ना हाथ, मसाण भुम ले जाय सु० खाल उतारी देहनी ए ॥ १६ ॥ तिनसु माहरो नही छे दोस, मुनि मनरो कोइ रोस सु० डरप्या ऋपी भसमी करे ए ॥ १७ ॥ मसाण भुमि का माहि, काया दीधी वोसराय सु० चारुं आहार त्यागी दिया ए ॥ १८ ॥ करडो आवि वहि यो काम, न कह्यो अपणो नाम सु० सग पण को दाख्यो नहि ए ॥ १९ राख्या समता भाव, सजम ऊपर चाव सु० मन परित डोल्या नहि ए ॥ २० ॥ तीखा पाछना निधार, मस्तक ऊपर

महार सु० खाल- वेतारि देहनि ए ॥ २१ ॥ पगोज- सुधी- खाल, रहिता सजम माहि भाव सु० नाके सल घाल्यो नहि ए ॥ २२ ॥ रहाज रूडे ध्यान, पाम्यो केवल ज्ञान सु० करम खपावी मुगते गया ए ॥ २३ ॥ केवल महिमा होय, धन २ करे सहु कोय सु० जिन मारग कियो दीप तो ए ॥ २४ ॥ (दोहा) कुंति नगरी ने मधे हुवो ज हाहाकार । देखो राय, मराविया विना गुने अणगार ॥ १ ॥ लोक हुवा सहु आगला, पिण जोर न चाले कोय । मुनि ने मोक्ष सिद्धा वणो पिण वैर न छोडे कोय ॥ २ ॥ किम तुझे पाचसे सुभट वलि राणी ने राय । वैर खबर किण विध पडे, ते सुण जो चितलाय ॥ ३ ॥ (ढाल) धरम हिये धरो (एदेशी) अजे साधु आयो नहि रे, जोवे पाचसे वाट । भोलावण दिवी राय जी रे खिण- खिण करे उचाटो रे, धन मोटा मुनि, नित कीजे गुण ग्रामो रे ॥ ध० ॥ सीझे सगला कामो रे ॥ १ ध० ॥ नगर गली फिरे जोताता रे फिर्‌ा इन दीठो रे सार, सुण्यो साधु मारयो गयो रे तव परमारथ लाधो रे ॥ २ ध० ॥ राजा पडे कुण तुमेरे तव बलता कहे जोर, कनक केतु ना रजपूत- रि, तुम करि बात अजुक्तो रे ॥ ३ ध० ॥ खंधक कुमर दीक्षा लिवी रे म्हे रखवाळा जो ल.र । सो मुनिवर तैं मारियो रे माहस नसरी गरज लिगारी रे ॥ ४ ध० ॥ वचन सुणी

जोय, लाडणू गाम सुखी सदा उछो अधिको हो मिछामि दुकड होय ॥ ८ क० ॥ इति श्री खधक जीनो चौढालीयो सम्पूर्ण ।॥।

फूड़ कपट कर माया मेली नीठ नीठ कर संची । पांव पलक मै परभव पहुंतो, पडी रही सब खरची। सुकृत कर लेरे सुंजी, थारी धरी रहेली पुंजी ॥ सु० १ ॥ फूड़ कपट करनै चतुराई घणीज माया जोडी, आलो दोलो काल झपके प्रात निकसी सीडी ॥ २ सु० ॥ अर्थीकी लेवे ओछी तोले बोले मधूरी बांणी, अडा मारे धडा उठावै कर कर अंतर कांणी ॥ सु० ३ ॥ करमा दान अकारज करनै धन मेल्यो नही खुटै, कदीच काले रावल रोकै तौ पिण इणनै रोवै सु० ४ ॥ निखरो खावे पहरै निखरो सुख भरि नीद न सोवै, नर सुखियो दीठो नही इणसुं तौ पिण इणमे लुभध्यो ॥ ५ सु० ॥ दांन शीयल तप भावना भावो ज्ञान हीयामे धरलै, आनन्द घन कहैं सुन भाई चेतन मुगती रमणी तुं वरलै सु० ॥ थारी धरी रहेली पुंजी ॥ ६ ॥ इति सम्पूर्ण ।॥।

॥ * अथ लावणी * ॥

मन सुनिरे थारी सुफल घड़ी श्रावग की हाथ सू जावे, सुत्र कौन माने सीख पिछे पछितावे । मन सुनिरे तुं परभव की डर राखि प्राण मत लुटे, कुगति से करे तु हेत सुगति से रुठे । मन सुनिरे थारी जोवन आनी छोल छिनक नहि छुटे, इद्री सु लगावो तार कहा किम तुटै । मन सुनिरे थारी हिये वधी विस वेल नही कुमलावे ॥ सु० १ ॥ मन सुनिरे तें सेंठी सीख सुतर की हिये नही आणी, थारो खरो खजानो खाय कु गुरु की वाणी । मन सुनिरे थारी कुमति कलेसण नारि लियां है तोये ताणी, दुर्गति की विछाइ सेज वणी पटराणी । मन सुनिरे तु सूतो कुमत की सेज पार नही पावे ॥ सु० २ ॥ मन सुनिरे पोसाख पापकी पहेर मांन तारे खुवी, थारे गल मद मोत्यांकी माल सीस पर लुवी । मन सुनिरे थारे हे राण हुइ मोहसी हजुरीड संगे, सिर वंध्यो मिथ्याति मोड वात तेरी डुवी । मन सुनिरे थारे हिंस्या हीया को हार जहर क्यों पीवे ॥ सु० ३ ॥ मन सुनिरे सुकृत वात सुपना मे मोही रती न सुझै, मेरु को वणतो को जोव दाझ कुंण वुझे । मन सुनिरे मेरे घर छुटे दुर्गति सी कांम धेनु दूजे, भो रुप दूनिया मे वोहत सुजे क्यो छुजे । मन सुनिरे जिण दास कपट की खांण मान नहि मारे ॥ सपूर्ण ।

॥ अथ सीझाय ॥

नर चतुर सूजान, पर नारीसुं प्रीत कबु नवी कीजीए। रात पडे दिन आथमै, तेहनो जिव भम रारि पर भमे। ले घरनो कारज नवि गमें ॥ १ ॥ पर नारी सुं प्रीतडलि, खीण एक लागे मीठडली, पछै तोडै भंवनी प्रीतडली ॥ २ ए तांने मोहना प्यालया पाय देशी, थारा हाथमें हांडी दे देशी। थारा सस्त्रर बस तर खोस लेशी ॥ ३ ॥ थारा जोवन लेसी लुटीने, थारा धन लेशी सब खोसीनें। पीछे रोसी हीय डो कुटीनें ॥ ४ ॥ जोवन हारी ने काइ करसी, कद हिरो देख तुम हरस्यो। पीछे अव गति माहि जाय पडस्यो ॥ ५ उदेय रत्न कहै सीखड ली, तुम चाखो अनुभव सूखड ली, एथी भाजै भव भव भुखड ली ॥ ६ ॥ इति।

पुनः

परदेशीरो कांइ पतीया रो। प। जब लग तेल दीयामै बाती मंदिर भयो उजीयालो ॥ प॰ १ ॥ बल गयो तेल पीगल गई बाती, मदीर भयो अंधियालो ॥ २ प॰ ॥ गुद गीरी को साठो मीठो, गाठ गाठ रस नास्यो ॥ ३ प॰ ॥ वेलु की भीत चीखर गई छीनमें, मांटी में मील गयो गारो ॥ ४ प॰ उठ गया बनीयो धरी रही हटीया, बीन कुंची लग गयो तालो ॥ ५ प॰ ॥ काया नगरमे हाक पडीछै, चेतन दीनो

नगा रो ॥ ६ प० ॥ पीजर को हसराज जो बोल्यो, अन्त होयगो न्यारो ॥ ७ प० ॥ कर सुध ध्याण प्रभुजीका बानी आवा गमन नीवारो ॥ ८ प० ॥ इति सपूर्ण ॥

॥ अथ स्तवन ॥

भटकत आतम क्या डोलैरे, तुं खोज हीयाके मांहि । आवे न कबहु न जाय हेरे, है तेरो तुझ मांहि ॥ भ० १ ॥ घटमै काशी द्वारका रे, घटमै है सब धाम । घटमै तीरथ व्रत सही रे, घट घट आतम राम ॥ भ० २ ॥ अलख निरजण देव हैरे घटमै ज्योति सरुप । जो खोजै सो पाय हैरे, अक्षय राज अनुप ॥ भ० ३ ॥ इति सपूर्ण ॥

पुनः

सुनरे मनुवा मीत, ऐसी नही करणी रे । मरणो पगल्यां रे हेठ आखर डरणा रे ॥ सु० १ ॥ सुमति रे कुमति नार दोनु थारे घरमें रे । तु ममता सुं मनवाल उवासु चित भरमै रे ॥ सु० २ ॥ कुमति कुबुद्धि नार है चिर ताली रे । थारो करसी जनम खुवार चौरासी मै राली रे ॥ सु० ३ ॥ सुमति सुबुद्धि नार सद मतवाली रे । थारो देसी जनम सुधार चतुर गति टाली रे ॥ सु० ४ ॥ पहिली बोल्या बोल तेकिम चुकु रे । करमु कापुं सीस आगल मुकु रे ॥ सु० ५ ॥ सुर गुण मिसरी

खांड सब जग भावे रे । निरगुण कडुवो नींब कोई न खावे रे ॥ सु० ६ ॥ जाकु पाउ प्रेम सोइ उठ भागे रे । जाका हिरदा कठोर सबदन लागे रे ॥ सु० ७ ॥ पीयो जी पीयाला प्रेम अवसर जावे रे । सन्त उतर गये पार मुनी गुण गावे रे ॥ सु० ८ ॥ इति सपूर्ण ॥

॥ अथ त्रेसठ सलाका पुरुष सिझाय ॥

चरण कमल मन धार, त्रेसठ उत्तम नर अधिकार । पभणिसु श्रुत अनु सारं, जेहनै नाम लीये निसतारं । आपण सफल हुवै अवतार, पामी जै भव पारं ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव अभि नन्दन, सुमति पदम प्रभु नयना नन्दन सप्तम तेम सुपासं, चन्द्र प्रभ सुविधि शीतल जिन, श्रेयांश वासु पूज्य जिन सुरमाणि विमल विमल गुण वासं ॥ १ ॥ अनन्त धर्म श्री शांति जिणेशर कुथु नाथ अरमल्लि सुहंकर । मुनि सुव्रत नमि नेमि पार्श्व वीर ए जिन चौवीश । जग वच्छल जग गुरु जगदीश, प्रणमी जै धरि प्रेमं ॥ २ ॥ (ढाल प्रथम सुपन गज निरख्यौ (एदेशी) प्रथमें भरत नरिंद बीजो सगर सुरिंद, मघवा तीजो उदार चौथो सनत कुमार । पांचम शांति चक्रीश छठो कुथुं गणीश सातमो अर नर नाथ । आठमो सुभुम नाथ, नवमो पदम नरेश, हरिषेण

दशमो कहेस, इग्यारम जय नाथ बारम ब्रह्म दत्त नाथ ॥ ६
एह चक्रीशर बार क्षेत्र भरत शिणगार, मघवा सनत कुमार
पोहता सनत कुमार ॥ ७ ॥ सुभुम अने ब्रह्म दत्त सत्तम
निरय निरत्त, आठ थया शिव गामी ते प्रणमुं शिर नामी
८ ॥ (ढाल ३) मुनिवर आर्य सुहस्ति (एदेशी) पहिलो
त्रिपृष्टि जाण, द्विपृष्टि दूसरो तीजो स्वयभु जाणीये ए ॥ ९
पुरुषोत्तम ए चोथ पचम पर गडो पुरुष सींघ प्रमाणीये ए ।
छट्ठो पुरुष पुडरीक दत्त तिम सातमो, लछमण नामे आठ
मो ए । नवमो कृष्ण नरेश ए नव केशवा प्रह ऊठी ए पिण
नमो ए ॥ १० ॥ तिहा पहिलो वासुदेव नारकी सातमी
आगला पाच छठी गया ए । सातमो पचम नेर चोथी
आठमो नवमो-त्रीजी नेरया ए ॥ ११ ॥ अचल विजय ने भद्र
सु प्रभ सुदर्शन आनन्द नन्दन सुभ मती ए । राम चन्द्र चल
भद्र बलदेव ए नव आठ थया तिहा शिव गती ए ॥ १२ ॥
बल भद्र गयो देव लोक काल उप सप्पणी जास्ये शिव कृष्ण
सासणे ए । अथवा निपुलाक नाम तीर्थंकर हुस्ये चवदमो
इम बहु श्रुत भणे ए ॥ १३ ॥ (ढाल ४) कुमर पदे म० (एदेशी)
अश्व ग्रीवने तारक मेरुक बलि मधु तिसा ए । निशुभ बल
प्रल्हाद रावण जरासिध जसा ए । ए नव प्राति वासुदेव
नरय नरक गति गामीया ए । तो पिण भाव जिणेश केइ

प्रणमु सया ए ॥ १४ ॥ (ढाल ५) सफल संसारनी (एदेशी शांति ने कुंथु अर एह भव एकही, चक्रधर तीर्थं कर दोय पदवी लही । वीर वासुदेव अरिहन्त भव जु जुवा, देह तिण साठ पिण जीव गुण सठि हुवा ॥ १५ ॥ वासुदेव वलि बलदेव केरा पिता, एक हिज थाय नव एण लेखै-छता । तीन चक्रधर तणा मिलीय बारे टल्या, एम त्रेसाठिनां तात इगवन मिल्या ॥ १६ ॥ तीन चक्र व्रत तणी टालि दीजै जिसै, माय सहुनी थई साठ लेखै इसै । एह नर रयणनो ध्यान नित जे धरे, तेह सुर पद लही मोक्ष पदवी वरे ॥ १७ फलश० इम थुण्या तीर्थं कर चक्रीशर वासुदेव बलदेव ए, प्रति वासुदेव सुसेव जेहनी करै सुर नर सेव ए । त्रेसठि शलाका पुरुप उत्तम जगत जय वन्ता सदा, प्रह समै तेहना चरण पङ्कज नमे मुनि बसतो मुदा ॥ १८ ॥ इति संपूर्ण ।



॥ अथ बोलचर्च्या ॥

पहले बोलें कहो स्वामीजी काणो हुवे तिको किसे करमरे उदे, पूरव भवमे बीज फुल घणा विंध्या तिन करमरे उदे ॥ १ दूसरे बो० कहो स्वामीजी खोजो हुवे तिको किसे करम रे उदे, पूरव भवमे घणी कविराजी करी तिस करमरे उदे ॥ २ ॥ तीसरे बोले कहो स्वामीजी कुबडो हुवे तिको किण करमरे

-उदे, पूरव भवमे ब्रहुत एकेंद्री जीवरा चुरण कीया तिस करमरे उदे ॥ ३ ॥ चौथे कहो स्वामीजी बहिरो हुवे तिको किसो करमरे उदे, पूरव भवमे वनास पती कायने हाथे करी छेदन करी तिके करमरे उदे ॥ ४ ॥ पांचमे बोले कहो स्वामीजी गुगो हुवे ते किस करमरे ऊदे, पूरव भवे चतुर विध सघरा औगण वाद बोल्या तिण करमरे उदे ॥ ५ ॥ छठे बोले कहो स्वामीजी गलत कोढ हुवे ते किस करमरे उदे, पूरव भवे सोनो रुपेरा घणा आगर किना तिस करमरे उदे ॥ ६ ॥ सातमे बोले कहो स्वामीजी जस करे अपजस आवे तिको कीन करमरे उदे, पूरव भव सचीत औषदी घणी भेली तिस करमरे उदे ॥ ७ ॥ आठमे बोले कहो स्वामीजी आंख्यां झील मली दीसे तिको कीण करमरे उदे, पूरव भवे पचेंद्री रा रुप घणा ग्रहण कीया तिन करमरे उदे ॥ ८ ॥ नवमे बोले कहो स्वामीजी भगंदर रोग उपजे ते किण करमरे उदे, पूरव भवमे पचेंद्री जीवने हाथे करीणे मारीया तिस करमरे उदे ॥ ९ ॥ दसमे बोले कहो स्वामीजी बावनो हुवे ते कीसे करमरे उदे, पीछला भवमे निमक खारीरा आगर कीया तिस करमरे उदे ॥ १० ॥ इग्यारमे बोले कहो स्वामीजी स्वाम वरण हुवे ते किण करमरे उदे, पीछले भवे वनास पति कायरी जड मूल सु खोदी तिस करमरे उदे ॥ ११ ॥

बारमे बोले कहो स्वामीजी कठ माला रोग हुवे ते किण करमरे उदे, पूरव भवमे मांछला ढेर मारया तिण करमरे उदे ॥ १२ ॥ तेरमे बोले कहो स्वामीजी धनरी वंछा हुवे ओर धन पामे नही तिको किण करमरे उदे, पूरव भवमे अन्तराय जीवांरे दीवी तिण करमरे उदे ॥ १३ ॥ चवदमे बोले कहो स्वामीजी सरीरमे पथरी रोग हुवे ते किण करमरे उदे, पूरव भवमे मैथुन घणा सेव्या तिव्र राग करवे तिण करमरे उदे ॥ १४ ॥ पनरमे बोले कहो स्वामीजी सरीरमें रोग दीसे नही वेदना वहुत होय तो कोणसा करमरें उदे, पूरव भवमे छांपाय धन लीयो दगा बाजी सुं तिस करमरे उदे ॥ १५ ॥ सोलमे बोले कहो स्वामीजी संयोगसुं विजोग हुवे ते कोण करमर उदे, पूरव भवमे माया कपटाइ वहुत सी किवी तिस करमरे उदे ॥ १६ ॥ सतरमे बोले कहो स्वामीजी रुप कुरुप हुवे ते कोण करमरे उदे, पूरव भवमें कोटवालरा भवकीया तिण करमरे उदे ॥ १७ ॥ अठारमे बोले कहो स्वामीजी सरीरमे मोटो रोग उपजे तिको कोण करमरे उदे, पूरव भवमे कुवा तलाव खुदाया तिस करमरे उदे ॥ १८ ॥ कहो स्वामीजी कोई जीव मीठो बोले अगलेने कडुवो लागे तिको कोण करमरे उदे, पूरव भवमे पंचेंद्री को मांस भक्षण कीयो तिस करमरे उदे ॥ १९

कहो स्वामीजी कोइ जीव तपस्या करणे की इच्छा करे लेकिन होवे नही सो कोण कग्मरे उदे, पूरब भवमे तपस्या करतां अन्तराय दीवी तिण करमरे उदे ॥ २० ॥ कहो स्वामी जी कोइ जीवने निद घणी आवे तिको किसे करमरे उदे, पूरब भवमे मदरा घणी पीवे तिस करमरे उदे ॥ २१ ॥ कहो स्वामीजी कोइ जीव सच बोले औरकु परतीत नहीं आवे तिको कोण करमरे उदे, पूरब भवमे झुठो गोहाइ भरी तिण करमरे उदे ॥ २२ ॥ कहो स्वामीजी तरङ्ग लहर आवे सो किसे करमरे उदे, परब भवमे घणी नसेकी जिनसा खाइ तिण करमरे उदे ॥ २३ ॥ इति सम्पूर्णम ॥

॥ ॐ अथ मोहनी का ३० बोल ॐ ॥

तस जीव कुडमे डबोय २ कर मारे तो महा मोहनी कर्म बांधे ॥ १ ॥ तस जीवकु गलो मोस कर मारे तो महा मोहनी । २ । तस जीव कु धुवो देकर मारे तो । महा० ३ मस्तक काटे तो । महा० ४ । मस्तक पर गीलो बांधे आद्र कर धूपमे खडो रख कर मारे तो । महा० ५ । गुगा पगले कुं हांसी करके मारे तो । महा० ६ । पचामे बैठ कर मिथ्या भाषा बोल्ने तो । महा० ७ । जिन पुरष ने वडो करके थाप्यो है उसकी घात चिन्तवे तो । महा० ८ । राजाका खजाना

रोके तो । महा० ९ । बिरमचारि नहि भूठी वात कहे हुंपाल ब्रह्मचारी हुं तो । महा० १० । बाल ब्रह्मचारी नहीं भूठी वात कहे हुं वाल बिरमचारी हु तो । महा० ११ । जिसके गुमास्तो रहे तिण धनी की घात चर्च्छे तिसकी जनाना सेती व्यभचार करे तो । महा० १२ । सर्पणी वर्त्ने कुं न्याय चाकर ठाकुरने मारे तो । महा० १३ । राजा की घात चिते तो । महा० १४ साधुकी घात चिते तो । महा० १५ । परस्पर मे कलह कराये तो । महा० १६ । कोइ पुरष स्त्री धर्म करणने उठ्यो होय उसको डीगाय देवे तो । महा० १७ । अनाचार सेव कर छीपावे तो । महा० १८ । अनाचार सेव कर पराये माथे कुडीआल देवे तो । महा० १९ । चारु तीर्थका अवरण वाद बोले तो । महा० २० । तीर्थकरा की अवरण वाद बोले तो महा० २१ । जिण आचार्य उपाध्याय पास पढ्यो गुणयो होय उसकी निन्दा करे तो । महा० २२ । जिण आचार्य उपा

पर द्वेष भाव रखे तो। महा० २९। कोइ उत्तम भव्य जीव आलोय आत्म निन्दके निसल्य होय सुद्ध मरण कर मरे तो उस की निन्दा विकथा करे तो। महा० ३०॥ इति सम्पूर्णम्॥



हे स्वामी गुरू कुण तत्त्व पदार्थका जांणते गुरु कहीजे। १ जलदी क्या काम कीजे ससार को छेद कीजे। २। मोक्ष वृक्ष नो बीज किसो सुद्ध क्रिया ज्ञान मुक्ति को बीज है। ३। हे स्वामी चोर कुण विषय चोर शील रुप द्रव्यना लुटण वाला ४। हे स्वामी जीवको वेरी कुण प्रमाद पांच वेरी है। ५। संसारमे खांणी क्या गमखाणी चहीये। ६। हे स्वामी मित्र कुण पाप थुं दूर करे ते मित्र कहीये। ७। हे स्वामी वडाई नो मूल क्या कोइके पास कुछ मागणो नहीं। ८। हे स्वामी साच किसो सर्व्व जीव के हितकारी वचन बोलीजे। ९। आंधो कोण खोटा कांम करे। १०। इति सम्पूर्णम्॥



॥ * अथ रयचन्द कृत सिझाय * ॥

आज गइ मन केरी सका (एदेशी) सुण चेतन अब सि-खडि सार्वी, श्री जिन वचने राचिरे, जिनवर भाषी गणधर साखि ते गुरु बचने दाखि रे॥ सु० १॥ नरकादिक गति ए तु भमियो दुखः सदा भारि रे, काल अनन्त इम धर्म

विहूणा अव जो आंख्य उघाडि रे ॥ सु० २ ॥ अली अक्षर उर्घा ते पामी मनुज भव सामग्री रे, आरज क्षेत्र उत्तम कुल जोगे अचर्क् आलस मांडि रे ॥ सु० ३ ॥ सद गुरु वयणे सरधा करतु मोह निद सब छाडि रे, काल अचानक पकडे आवी रहसे बाजि मांडि रे ॥ सु० ४ ॥ लाख वातकी एक बात कहु करचोरे जिन बचने थिरता रे, ते सुभ वीर वचन थी लहीए रवि शशि गिरि थिरता रे ॥ सु० ५ ॥ सम्पूर्ण ॥



॥ ॐ अथ षट दर्शनाष्ट ॐ ॥

दोहा) शिव मति बोध सुवेद मति नैयायक मत-पक्ष मीमांसक मत जैन मत षट दर्शन परतक्ष ॥ १ ॥ (अथ शिव मत यथा) देव रुद्र जोगी सुगुरू आगम शिव मुख भाप, गने काल पर नाति धरम इह शिव मतकी भाप ॥ २ बोध मत यथा) देव बुध गुरू पद्धती जग वस्तु छिन ऊध सुन्य वाद आगम भनै चार्वाक-मत बोध ॥ ३ ॥ (अथ वेद मत यथा) देव ब्रह्म अद्वेत जग गुरू वैरागी भेख, वेद ग्रथ निश्चे धरम मत वेदात विशेख ॥ ४ ॥ (अथ न्याय मत यथा) देव जगत करता पुरुष गुरु सन्यासी होय, न्याय ग्रथ उद्यम धरम नेयायक मत सोइ ॥ ५ ॥ मीमांसक मत यथा) देव अल्ला दरवेस गुरु माने करम

गरंथ, धरम पूर्व कृत फल उदे यह मीमांसक पथ ॥६ ॥ अथ जैन मत) देव तीर्थंकर गुरु जती आगम केवल वेन, धर्म अनन्त नयात्मक जो जानै सो जैन ॥ ७ ॥ ए छ मत छ भेद सुं भए छुटक छ और, प्रति षोडस पांखड सु धशा छ्यानवै और ॥ ८ ॥ इति सम्पुर्ण ॥ १ ॥



॥ ॐ अथ इखुकार राजा भृगु प्रोहित सिझाय ॐ ॥

महिला में बैठी राणी कमलावती, झीणी तो उडे मारग खेह । जोवे तमासो इखुकार नगरमे, कौतिक उपनो मनमे एह ॥ १ ॥ (सांभल हे दासी आज नगरमे बहदो विम घणो) कातो परधान सली डडीया, का केई लुट्या राजा गांव । का कोइ गाडयो धन नीसरयो, गाडा रह्या छै ठामो ठाम ॥ २ सा० आ० ॥ नातो परधान बाइजी डडीया, ना कोइ राजा लुट्या गांव । भगू परोहित धन तज नीसरयो, राजारे धन लेवारो चाव ॥ ३ ॥ (साभल हे राणी हुकम करो तो कोई गाडो इहां धरां) वेटांतो तिणरा संजम लीयो, वरज्यो घणुं ही पिता मात । ते पिण चारित लेवा ऊमह्या, भगू जशा तिणे मोह ललचात ॥ ४ साभल हे० हुक० ॥ इम सुण कमलावती राणी इम कहे, इहां तो कमी नही काय सांभलने राणी माथो धुणीयो, राजारी मगता नही जाय ॥

५ ॥ (सां० दामी राजाने ए वातां जुगती नही) महिला सु राणी कमलावती, आईछे राजारे हजुर । वचन कहे राजाने आकरा, जाणे पोरस चढियो बोले सूर ॥ ६ ॥ (सांभल हो राजा ब्राह्मण छोडी रिद्ध क्यु आदरो) कर जोडी कमला कहे, सांभल कंत सुजाण । ब्राह्मण जे रिद्ध परिहरी, ततो घर मांहे मत आण ॥ ७ सां० राजा० ॥ ए रिद्धसु अपणे कांई घणो हुसी, राजारा मोटा छे भाग । वमियै आहार री वांछा कुण करे, कै कुतरा कै काग ॥ ८ सां० राजा० ॥ वमियो आहार पीछो नर भखे, नही पर संसवा जोग ।भगु प्रोहित रिद्ध तज नीसरयो, थे जाण्यो छे आसी ह्मारे भोग ९ सां० राजा० ॥ संकलपियो धनडो पाछो किमलीयै, सांभल श्री महाराज । दान दियो थे पहिलां हाथसुं, ते पाछो लेतां नावे थाने लाज ॥ १० सा० राजा० ॥ निश्चै तो मरणो राजा इक दिन, छोडीने काम विसेप । बीजो तो जगमे सरणो को नही, तारै जिनजीरो धर्म एक ॥ ११ सां० राजा० ॥ सगलै जगत रो धन भेलो करी, थे घालो भंडारा रै मांहि । तो पिण त्रिसना राजा पापणी, त्रिपत न मनडो थाय ॥ १२ सां० राजा० ॥ साभल ने इखुकार राजा बोलीयो, तुं आपैनी वचन सभाल । का तुंने राणी भोलो बाजीयो, काकोई फांधी मतवाल ॥ १३ ॥ (सा० राणी राजाने करडा वचन

न बोलीये) नांतो राजाजी झोलो वाजीयो, ना कोई कीधी मतवाल । ब्राह्मणरो वमियो धन थे आदरो, वरजण आई हो भुपाल ॥ १४ सां० राजा० ॥ वलतो राजा राणीनें इम कहै, इसडी वैरागण थाय । अजुतो निजरां आवे नही, तु बेठी छे घर मांय ॥ १५ ॥ (सां० राणी राजा कर०) उत्तर वालीतो दीसै नही, इसडी आई छै मतवाल । हुतो घर छोडीने नीसरी, थे पिण छोडो हो भुपाल ॥ १६ ॥ (सां० राजा आज्ञा देवो तो सयम आदरूं) रतन जडतरो राजा पीजरो, तिणमें सूवटो पडियो फद । इण रीते हु थारै राजमे, रहिने पामुं आणंद १७ सां० राजा आ० ॥ सनेह रूपिया तातण तोडने, आरभ धनसु रहस्यां दूर । विरकत थई मोन पणे रह्या, थे पिण होयज्यो सूर ॥ १८ सां० राजा आ० ॥ दवतो लागी हो राजा वन मझे, हिरण सिसा बलै मांय । गिरध पखी ज्युं आमिष देखने, मन माहि हरषित थाय ॥ १९ ॥ (सां० राजा, राग द्वेपरा भागा लग रह्या) मांहो माहि खेधो ईसको, दस प्राण रहित कीधो काल । दुसमण तो मनमे हरष पाम्यो घणो, जाने ते माहरो मिटियो साल ॥ २० सां० राजा रा० इण दिष्टाते लोभी मूरख थका, मुरछ रह्या भोग माहि । पेलाने दुखियो देखी चेतै नही, लागी राग द्वेप री लाय ॥ २१ सां० राजा राग० ॥ मांसरी बोटी पखीरी चांचमां,

नर पासै पखी पडियो आग । आमिप सम भोग छोडने, चारित्र लेस्यां चित्त लाय ॥ २२ ॥ (सां० प्राणी सयम थी सुख पामीये) महल पिलंगादिक अथिर छै, ते पांम्या छै अपणें हाथ । कामभोग मे रकत होय रह्या, ते तज होयसां नाथ ॥ २३ सां० राजा सं० ॥ पाचे इद्रयांरा भोग छोडने, द्रव्य भावै हलका थाय । सहज वाउ पंखिनी परै, विचरस्यां अपणी दाय ॥ २४ सां० प्राणी सं० ॥ गिरध पंखी ज्युं भोग जाणजो, एह काम वधारे ससार । साप ज्युं मोर थकी डरती रहे, ज्युं पापसुं संक स्यां इण वार ॥ २५ सा० प्राणी म० ॥ सोक तजी सतोप सु, लेस्यां सयम भार । ममता तजि समता ग्रहो, करस्या उग्र विहार ॥ २६ सां० प्राणी स० ॥ तन धन जोबन कारमो, चचल वीज समान । खिण खिण त्रुटे आउखो, मूरख करे रे गुमान ॥ २७ सां० प्राणी स० ॥ हस्ती ज्यु बंधण तोडने, आपे वन मुखे जाय । करम बंधण तुटे सयम लियां, सुणो कहु छुं महाराय ॥ २८ सां० प्राणी० इम सुणनें इखुकार राजा चेतियो, छोडीने मोटको राज । कायरने तो ए तजतां दोहिलो, विम्र सहित सारचा काज ॥ २९ सां० प्राणी स० ॥ मोह न राख्यो परिग्रह छोडके, पायों जिन धरम सुजाण । तपस्या सगलांही आदरी, उत्कृष्टो पराक्रम आण ॥ ३० सां० प्राणी स० ॥ सुध संयम पालै सदा

सुमति गुपति दयाल। भमरानी परे करै गोचरी, रिप टालै दोष बयाल ॥ ३१ सां० प्राणी स० ॥ तारण तरण निहाज छै, भव्य जिवने उतारै पार। केवल ज्ञान उपायने, सुख पाम्या श्री कार ॥ ३२ सां० प्राणी स० ॥ मोह निवारी प्राणी समझने, निरमल भावना भाव। छए जणा थोडा कालमें, मुगति बिराज्या जाय ॥ ३३ सां प्राणी स० ॥ राजा सहित राणी कमलावती, भृगु पुरोहित जशा नार। मोहित भृगु ना दोय डीकरा, शिव सुख पाम्या सार ॥ ३४ सां० प्राणी संयमथी सुख पांमांये ॥ इति * सम्पूर्ण * ॥

॥ * अथ नदीपेण मुनिनी सिझाय * ॥

राज ग्रही नगरी नो वासी, श्रेणीक नो सुत सुविलासी हो ॥ मुनिवर वयरागी) नदी पेण देशना सुणी भीनो, नाना करतो व्रत लीनो हो ॥ मु० १ ॥ चारीत्र नित्ये चोखु पाले, सजम रमणी सु माले हो। मु०। एक दिन जिन पाए लागी गोचरी नी आज्ञा मांगी हो ॥ मु० २ ॥ पांगरी यो मुनि घोरवा, क्षुधा वेदनी करम हरवा हो। मु०। उच नीच मध्यम कुल मोटा, अटतो सजम रस लोटा हो ॥ मु० ३ ॥ एक ऊंचो धवल घर देखी, मुनिवर पेठो सुद्ध गवेखी हो। मु०। तिहां जई दीधो धर्म लाभ, वेश्या कहे ईहां अर्थलाभ

हो ॥ मु० ४ ॥ मुनि मन में अभिमानज आंणी, खंड करी नाण्यों तरणुं ताणी हो । मु० । सो वन वृष्टि हुई वार कोडी, वेश्या वनिता कहे कर जोडी हो ॥ मु० ५ ॥ (थारे माथे पचरंगी पाग सोनानो छोगलो मारुजी ॥ (एदशी) थेतो ऊभा र हीने अरज अमारी साभलो ॥ (साधुजी०) थेतो मोहोटा कुल ना जांणी मूकी द्यो आंमलो ॥ सा० ६ ॥ थेतो लेई जाउ सोवन कोड गाडां ओठे भरी ॥ सा० ॥ थारे केसरीये कसबी ने कपडे मोही रे ॥ सा० ॥ थारी सुरत मोहन गारी जगत मां सोही रे ॥ सा० ॥ थारी आंखडीयानी कचाणरो लाग णो ॥ सा० ७ ॥ थारी नवलो जोबन वेस विरह दुख भाज णो ॥ सा० ॥ एतो जंत्र जडित कपाट कुंचीमे कर ग्रही ॥ सा० ॥ मुनि वलवा लागो जाम के आडी ऊभी रही ॥ सा० मेतो डछी अस्त्री नी जात मति कही पाछली ॥ सा० ॥ थेतो सुगुण चतुर सुजांण विचारो आगले ॥ सा० ८ ॥ थेतो भोग पुरन्दर हुं पण सुन्दरी सारीरे ॥ सा० ॥ थेतो पेहरो नवला वेस घरणां जर तारीरे ॥ सा० ॥ माणि सुगता फल सुगट विराजे हेमनां ॥ सा० ॥ अमे सजीये सोल सिणगार के पेरु रस अङ्गनां ॥ सा० ९ ॥ जे होय चतुर सुजांणके कदी यन चुक्से ॥ सा० ॥ एहवो अवसर साहब कदीयन आवसे सा० ॥ इम चिंत चित्य मझार नटी पण वाहलो ॥ सा० ॥

रेहवा गणकाने धांमके थइने नाहलो ॥ सा० १० ॥ (ढाल२) पुरवाली देशी) भोग करम उदय तस आव्यां, सासन देवी इम सभलाव्यो हो । मु० । रही बार वरस तस आवास्यां, सासन देवी इम सभलाव्यो हो । मु० । रही बार वरस तस आवासे, ते समे लो एकण पासे हो ॥ मु० ११ ॥ दस नर दिन प्रते प्रति बुझे, दिन एक मुरख नवि बुझे हो । मु० । बुझ थतां हुइ बहु वेला, भोजन नी थइ अवेला हो ॥ मु० १२ कहे वेश्या उठो स्वामी, एह दशमो न बुझे कांमी हो । मु० वेश्या वनिता कहे धस मसती, आज दशमा तुमे हिज ह सती हो ॥ मु० १३ ॥ एह वयण सुणी ने चाल्यो, फरी सजम सु मन वाल्यो हो । मु० । फरी सजम लीयो उल्हासे वेष लेइ गयो जिन पासे हो ॥ मु० १४ ॥ चारित्र नित चोखु पाली, देव लोके गयो दई ताली हो । मु० । तप जप सजम किरिया माधी, घणा जीवने प्रति बोधि हो ॥ मु० १५ ॥ जय विजय गुरु सीस, तस हरष नमे निस दीस हो । मु० मेरु विजय इम बोले, एहवा गुरु ने कुण तोले हो ॥ मुनि वर वयरागी १६ ॥ * ॥ इति सम्पूर्ण ॥ ~ ॥



जीवडा परिभमे उदास ॥ २१ एक० ॥ परभव थी चवि एकलो आवे वलि जाइ । जनम मरण पुण्य एकलो कोइ सरण न थाइ ॥ २२ एक० ॥ मात पिता सुत कामनी परि जन ने मांहि । असुभ कर्म जीव एकलो लीजै दुरगति साहि २३ एक० ॥ पाप करी धन मेलव्यो अति चचल चित्त । पर भव जातां सब मिली वांटीन ल्यै वित्त ॥ २४ एक० ॥ रोगादिक दुख एकलो वेदें निरधार । वांटी न सकै कोसगौ जाण्यो सयणाचार ॥ २५ एक० ॥ जीव अनाथी नी परै जागो जिन वांण । परमारथ जाण्यौ पखै किम कहीयै अजांण ॥ २६ एक० ॥ (ढाल ५) जीवा थकी एजुवा जुवा धन सयण परियण जोइ । आपणौ साजण तु गिणै एक जिन धर्म हो जिहां थी सुख होइ ॥ २७ ॥ आप स्वारथ जग सहूरे पर कारणरे तु कांइ गमार । पाप करी पोतों भरै रे सुख कारणरे तु धरम सभार ॥ २८ आ० ॥ संध्या समें जिम तरवरे पखीया मिल विलसत । परभात पहुंचै दह दिसै इम परिजन रे तज तुं मनचित ॥ २९ आ० ॥ जिम चरण वेला गौ मिलै गोवालीया ने पास । पाछिले दिन निज घररे वलि पहुचे रे तिम ए घर वास ॥ ३० आ० ॥ पंथीया पथे जिम मिलै संध्या समे इक गाम । जु जुआ जायै प्रह समै तिम सयगो रे सह्जन इक ठाम ॥ ३१ आ०

धन तेहते तजै सुख भणी गिण सरव सङ्ग असार । सवेग रस माहि झीलतां मन रङ्गेरे ल्यै सजम भार ॥ ३२ आ० ॥ ढाल ६) देह असुचि करि पूरीयो हो असुचि करी उतपन्न इम जांणी हो प्राणीया धरम करै ते धन्न ॥ ३३ ॥ सुविचा रीरे प्राणीया निज मन थिर कर जोय । इण संसारे सुख भणी हो धरम पखै कुण होय ॥ ३४ सु० ॥ मस रुधिर नख नैनसा हो मेद चरम वस केश । ए सरुप इण देहने हो किहां इहां सुचि लवलेस ॥ ३५ सु० ॥ श्रोत वहै नव अहि निसै हो पुरप सरीर असार । श्रोत इग्यारै नारिने हो अशुचि तणा भडार ॥ ३६ सु० ॥ नाना व्यजन रसवतां हो जिहां थी विणसी जाय । चोवा चन्दन वलि सव हो जस सङ्गम मल थाय ॥ ३७ सु० ॥ देह अथिर जिनवर कह्या हो माटी भंड समान । एक सुकृत कर सासतो हो जिम सुख लहे प्रधान ॥ ३८ ॥ (ढाल ७) आश्रव कारण ए जग जाणीये परिहर एहना हो सङ्ग । दुरगति जातां एहज साथीया तिन धरम सु धरि रङ्ग ॥ ३९ आ० ॥ पचेइद्री सव जगने नडे विरुया विषय सवाद । एक इद्रीने वसै पामे जीव प्रमाद ॥ ४० आ० नादे मृगलौ रसवसि माछलो रुप्प देखी पतङ्ग । वासे भमरो फरसै हाथीयो पामे रङ्ग विरङ्ग ॥ ४१ आ० ॥ च्यार कषाय निवारो मन थकी भव तरुना ए मूल । फलाकि पाक समारस

जहना दुरगति ने अनुकूल ॥ ४२ आ० ॥ पंचे आश्रव दुख कारण गिणो,जोग क्रिया वली तेह । करम तणी थिति रस कारण वली आश्रव कारण एह ॥ ४३ ॥ (ढाल ८) पच सुमिति निरती धरै रे पाले आदर आणीरे । त्रिण्ह गुपति गुपता सदा जी श्रुत परमारथ जांणी रे ॥ ४४ ॥ संवर भावन भावीये जी मन समाधि धरि प्राणी रे । आगम माहे पइना जी फल हित प्रमुख वखाणी रे ॥ ४५ सं० ॥ खंति प्रमुख दस विव सदा जी साधु धर्म जे धारै जी । ते संवर रस अनुभवै जी जनम मरण भय वारै जी ॥ ४६ स० ॥ करम उदय करि आवीया जी जेह परीसह जीयै जी । गय सुक माल तणी परै जी ते दिन २ अति दीयै जी ॥ ४७ सं० अवर बारह भावना जी मेल सतावन भेदे जी । संवर तत्व विचारता जी अशुभ करम वल भेदै जी ॥ ४८ ॥ (ढाल ९ ध्यान विनय काउसग धरो रे वेया वच सिझाय । पायछित करो सदा रे दस विध धरि मन राय ॥ ४९ ॥ (रे प्राणी धरि मंरग विचार, सदगुरु वचन संभार रे प्राणी) । टेक । तप अन सन अणोदरी रे वृति प्रमांति रस त्याग । काय

किम निज गतमारे पामे निरमल भाव । नवमी निर जर भावना जी मनमे भावन भाव रे ॥ ५२ ॥ (ढाल १०) धन धन गुरु मुख श्रुत सुणी जे पाले गुरु सीखुण । साधे ए सिद्ध तणा घणा सुख मिठा जिम इखुए ॥ ५३ भा० ॥ भावन भावो भावीयो धरम तणी इण रीत ए । भरथ इला पुत्रनी परे ते थाये जग वदी तूए ॥ ५४ भा० ॥ जे निज आतम घस करी इद्री विषय विरूतू ए । मोह तणा दल निरदली सील धरे सुपवितू ए ॥ ५५ भा० ॥ मात पिता सुत कामनी प्रमुख तजी भव पासू ए । जेहने सङ्ग पणो धरे ते धन सुगण निवासू ए ॥ ५६ भा० ॥ तरूण पणे जे तप तपे विषम परी सह जीतु ए । उप सम रस करि पूरीया समिति त्रिमणी अरि मीतू ए ॥ ५७ भा० ॥ इम गुण वन्त तणा सदा जी गुण ग्रहतां गुण होय । फुल तणे परिमल गुणे तेल तणो गुण जोय ॥ ५८ भा० ॥ (ढाल ११) श्री जिन सासन लोक सरुप वखणीये रे चवदह राज प्रमाण । जनम मरन करि वार अनती पारि सीयो रे जाणे ते जग भाण ॥ ५९ भा० ॥ लोक सरूप विचारो आतम हित भणी रे निज मन तु थिर राख । धर्म ध्यान ए श्री मुख जग गुरु उपदिसे रे त्रीजे अङ्ग साख ॥ ६० लो० ॥ भव २ भमतां जीव करम वस आपणे रे मात पिता सुत होय । ते हिज वयर विसेषे सत्रु पणो

भजै रे पंचम अङ्ग जीय ॥ ६१ लो० ॥ बापण भव सुत देखी साधु स कोसलो रे जीवो भवि परिणाम । वयर तणै वसि सुत आमिष भखै रे सारे ते सब काम ॥ ६२ लो० ॥ स्वारथ कारण जीव तणै सहुये सगो रे स्वारथ विण सब दुर । लोक सरुप इसो मन माहि चिन्तवै रे धरि उपसम रस पूर ॥ ६३ लो० ॥ (ढाळ १२) लहि मानव भवि दोहिलो वलि सरीर निरोग । उत्तम कुल उतपति लही देव सुगुरु संयोग ॥ ६४ ॥ (संवेग रस आणीयै रे जाणी श्री गुरु वांण । आलस प्रमुख तणे उदै रे आगम श्रवण दुलंभ । सदहणा पिण दोहिली जिम जल काचै कुंभ ॥ ६५ सं० ॥ कोडी काजै न हारीयै जिम कनकनी कोड । तिम भोगारथ कांइ गमै लाधी धरम नी जोड ॥ ६६ सं० ॥ जिम समुद्र माहि पाडीयो रतन न लाभै तेह । तिम प्रमाद सवि हारीयो धरम दुहेलो एह ॥ ६७ सं० ॥ पाम्यौ धरम अछे इहां वली लहि स्यां केम । तिण करि लाधो रांकथो जिम पामे सुख खेम ६८ स० ॥ सुर नर ऋधि कुसम जिहा शिव सुख फल सम जास । धरम कलप तरु सेवतां पूजे वांछित आस ॥ ६९ स० ढाल १३) इण परि बारह भावन जांणो, आण जिणन्द तणी मन आणी । अह निस जेह धरै मन माहै, ते श्री जिन धरम आराहै ॥ ७० ॥ रस वारधि रस ससि हर वरसै, बीका

नयर नयर मन हरसे । श्री जिन चन्द सूर गुरु राजे, एह विचार सुणो हित काजै ॥ ७१ ॥ प्रमोद माणक गणि सह गुरु सीसे, गणि जय सोम कहै सु जगीसे । आदीसर सुर तरु सुप साये, एह भणतां शिव सुख थाये ॥ ७२ ॥ इति श्री बारह भावना सम्पूर्णम् ॥ ~ ॥ , ॥ ~ ॥

॥ ❀ अथ पचमी बृहद्स्तवन ❀ ॥

प्रणमु श्री गुरु पाय, निरमल न्यान उपाय । पाचमी तप भणु ए, जन्म सफल गिणु ए ॥ १ ॥ चउवीस मो जिन चद केवल न्यान दिणद । त्रिगडे गह गह्यो ए, भवियण नें कह्यो ए ॥ २ ॥ न्यान वडो ससार, न्यान मुगति दातार । न्यान न्यान दीवो कह्यो ए, साचो सरदह्यो ए ॥ ३ ॥ न्यान लोचन सुविलास, लोकालोक प्रकाश । न्यान विना पसु ए, नर जाणें किसु ए ॥ ४ ॥ अधिक आराधक जाण, भगवती सूत्र प्रमाण । न्यानी सर्वतु ए, किरिया देशतु ए ॥ ५ ॥ न्यानी सासो सास, करम करै जे नास । नारकि ने सही ए, कोड वरस कही ए ॥ ६ ॥ न्यान तणो अधिकार, बोल्या सूत्र मझार । किरिया छे सही ए, पिण पाछे कही ए ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो न्यान, हुवे तौ अति परधान । सोनो ने सुरो ए, मह्म दूधे भरचो ए ॥ ८ ॥ महा निशीथ मझार,

पांचमि अक्षर सार । भगवत भाषीयो ए, गणधर साखियो ए ॥ ९ ॥ (ढाल १ पहिली काल हरानी) पांचमि तप विधि सांभलो, जिम पामो भव पारो रे । श्री अरिहंत इम उपदिसै भवियण ने हित कारो रे ॥ पां० १० ॥ मिगसर माह फागुण भला, जेठ असाढ वैसाखो रे । इण षट मासै लीजियै शुभ दिन सद्गुरु साखो रे ॥ पां० ११ ॥ देव जुहारी देहरे गीता रथ गुरु वदीरे । पोथी पुजो न्यान नी, सगति हुवै तो नदीरे ॥ पा० १२ ॥ वे कर जोडी भावसुं, गुरु मुख करो उपवासो रे । पांचमि पडिक्कमणो करै, पढो पाडित गुरु पासो रे ॥ पां० १३ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो तिण दिन आरंभ टालो रे । पाचमि तवन थुई कहो, ब्रह्म चारिज पिण पालो रे ॥ पा० १४ ॥ पांच मास लघु पचमी, जाव जीव उत्कृष्टी रे । पाच वरस पांच मासनी, पांचमि करो शुभ दृष्टी रे ॥ पां० १५ ॥ (ढाल २ उल्लालानी) हिव भवियण रे पानमि ऊजमणो सुणो, घर सारुरे वारु धन खरचो घणो । ए अवसर रे आवतो वलि दोहिलो, पुण्य जोगे रे धन पामता सोहिलो । (उल्लालो) सोहिलो वलीय धन पामतां पिण धर्म काज किहां वली, पचमी दिन गुरु पास आवी कीजीयै काउसग रली । त्रिन न्यान दरसण चरण टीको देइ पुस्तक पूजीयै, थापना पहिली पूज केसर सुगुरु सेवा

कीजीये ॥ १६ ॥ सिद्धां तनीरे पांच परत वींटोगणां । पांच पठारे मुख मल सूत्र प्रमुख तणा । पांच ढोरारे लेखण पींच मजी सणा, प्रास कुंपारे कांबी वारु वरतणा ॥ (उल्लालो वरतणा वारू वलिय कमली पांच झिल मिल अति भली । थापना चारिज पांच ठवणी मुहपती पड पाटली । पट सूत्र पाटी पंच कोयल पंच नव कर वालीयां, इण परे श्रावक करे पांचमि उजमणो उजवालियां ॥ १७ ॥ वलि देहरे रे स्नात्र महोच्छव कीजिये, घर सारुरे दान वली तिहां दीजिये प्रतिमाने रे आगलि ढोवणो ढोइये, पूजानारे जे जे उपगरण जोइये । (उल्लालो) जोइये उप गरण देव पूजा काज कलश भृंगार ए, आरती मङ्गल थाल दीवी धुप धाणी सार ए । घनसार केसर अगर सूकड अंगुलुहणो दीस ए, पच पञ्च सगली वस्तु ढोवो सगति सुं पचवीस ए ॥ १८ ॥ पांचमी तारे साहमी सर्व जीमाडिये, रात्री जोगे रे गीत रसाल गवाडिये । इण करणी रे करता न्यान आराधिये, न्यान दरशण रे उत्तम मारग साधिये । (उल्लालो) साधिये मारग एह करणी न्यान लहीये निरमलो, सुर लोकने नरलोक माहें न्यानवत ते आगलो । अनुक्रमें केवल न्यान पामी शास्वता सुख जे लहे, जे करे पांचमी तप अखंडित वीर जिणवर इम कहे ॥ १९ ॥ कलश ॥ इम पचमी तप-फल प्ररूपक

वर्द्धमान जिणेसरो, मैं थुण्यो श्री अरिहंत भगवंत अतुल बल अलवेसरो। जयवंत श्री जिनचंद सूरिज सकल चंद नमुं-सीयो, वाचना चारिज समय सुंदर भगति भाव प्रसंसीयो ॥ ✿ इति सम्पूर्ण ✿ ॥ ✿ ॥ ✿ ॥

॥ ✿ अथ श्री राजसिंह कुमार की चौपाई ✿ ॥

दोहा) श्री अरिहन्त सिद्ध आचार्य वलि उपाध्याय अण गार। पांचे पद सुभ भाव थी नमतां जय जय कार ॥ १ ॥ चउदह पूरवनी कह्यो सार एक नवकार। एहने जपतां के थया शिव वधुना भरतार ॥ २ ॥ आपद टले सम्पद मिले प्रगटें आनन्द पूर। ईति भीति बहु उप समें दालिद जावें दुर ॥ ३ ॥ त्रिदशाधिप सानिध करें थायें कारज सिद्ध। रोग शोग टलिनें हुवे अष्ट सिद्धि नवनिद्धि ॥ ४ ॥ मन शुद्ध इक लाख जाप थी वांधें श्री जिन गोत। मन्त्र जन्त्र मूली सिरें भवनिधि तारण पोत ॥ ५ ॥ श्री मती पिङ्गल सवलु हुंडक कंवल जीव। इण भव परभव सुख वरचा रट नवकार सदीव ॥ ६ ॥ तिण नवकारो पर कथा श्री मृगाङ्क नृप नन्द राज सिहनी वर्णवुं श्रोताने सुख कन्द ॥ ७ ॥ (ढाल १) धीज करे सीता सती रे लाल (एदेशी) तीजे पुष्कर वर दीपमां रे लाल, भरत क्षेत्र सुख कार। सु विचारी रे बहु

नयरे वहु देशथी रे लाल, सोभित अति श्रीकार ॥ सु० १ श्रोता सांभलज्यो कथारे लाल, त्रिकरण राखी ठाम। निद्रा विकथा परि हरि रे लाल, रसछे अति अभिराम ॥ सु.२ श्रो सिधवट नामे दीपतो रे लाल ग्राम तेहने तीर। पर्वत इक ऊंचो तिणे रे लाल वहे नीझरणे नीर ॥ सु.३ श्रो. ॥ फिर घहु जाती रुषनी रे लाल अंब कर्दंव अनार। जैंबु निंब तमा-लना रे लाल कहता नावे पार ॥ सु.४ श्रो. ॥ बावन चंदन तेहनी रे लाल आवे परिमल वास। तस आक रख्या मधुकरा रे लाल गणरव करें उलास ॥ सु.५ श्रो. ॥ सरवर पाल सु सोभता रे लाल हंसा केरा बाल। चक चकव सारस बका रे लाल सहु तिहां रहें खुस्पाल ॥ सु.६ श्रो. ॥ क्यांही घणो रमणीक छे रे लाल क्यांही अति-भयकार। झंगी दरखत तेहमें रे लाल न चढें दग दिनकार ॥ सु.७ श्रो. ॥ सिंह स्याल सूकर ससा रे लाल रिक्ष रोझ विकराल। फोही फेका रव करें रे ल ल फिरता अजगर व्याल ॥ सु.८ श्रो ॥ चीता चिरकारव करें रे लाल जोरें गुंजे सींह। गज टोला फिरता घणा रे लाल मद झर अति अबीह ॥ सु.९ श्रो ॥ यम मुख सम अति भय करु रे लाल गुफा घणी विस्तार। तम पसरचो चिह्न फेरमे रे लाल देखता भयकार ॥ सु.१० श्रो. ॥ एहवें तिण गिरिनी गुहा रे लाल श्री दमसार मुनीस

गुरु आज्ञा ले आविया रे लाल चौमासें सुजगीस ॥ सु०११ श्रो० ॥ चौमासे रह्यो मुनि फरें रे लाल श्री जिनवर नो आप अप्रमाद गुण संचरे रे लाल तप चौमासी थाप ॥ सु० १२ श्रो० ॥ पांचे सुमतीयें सदा रे लाल सुमता गुपते तीन। आठे प्रवचन मातने रे लाल खोलें रमे सलीन ॥ सु०१३ श्रो फर सिझाय सुभाव थीरे लाल करमां फरें भगाण। एकांते श्रुत वचनथी रे लाल पालें जिनवर आण ॥ सु०१४ श्रो० ॥ निंदें वदे आयने रे लाल विहुं ऊपर समतोल। निरवद्य वांणी वागरे रे लाल तत्व सहित अणमोल ॥ सु०१५ श्रो० ॥ अनु प्रति लोम विहु विधे रे लाल परि सह नवि राति खेद। निंदा विकथा नवि करे रे लाल एको मोक्ष उमेद ॥ सु०१६ श्रो० ॥ हुलास चन्द कहे माहरी रे लाल त्रिकरण भाव त्रिकाल। होज्यो मुनिने वन्दना रे लाल ए कही पहली ढाल ॥ सु०१७ श्रो० ॥ (दोहा) सान्ति सुधा रस झीलता सीतल भुत सु गात। कोटि काम दल जीपता धीर मेरू साक्षात ॥ १ ॥ पञ्च महाव्रत पालता वालता कर्मना वृन्द। दोषण बहु विध टालना आलता ज्ञान सानन्द ॥ २ ॥ अथ मारग वहतां फरें भील भीलनी नार। दीठा मुनि ध्याने रता विहुं मन करे विचार ॥ ३ ॥ ए कुण इहां एकां तपण स्यु साधे छे काज। पञ्च दराग्ण गिरि गुफा निडर पणें महा साज ॥ ४ ॥ एतो

मोवा जोग छे छाडी घर परिवार। स्युं इहां ए कारज करे आलोचि पियु नार ॥ ५ ॥ ततखिण मुनिपे आयने बेठा प्रणमी पाय। मुनि तो ध्यान रते तसु कछुयन पूछी वाय ६ ॥ बेठीके तलिवार विहु गया आपणे ठाम। फिर बीजे दिन मुनि तणा दर्शण कीधा आम ॥ ७ ॥ नित प्रतते विहुं मुनि तणी सेवा सार्से भुर। मन राखे वैराग मे निरखी मुनि नो नुर ॥ ८ ॥ मुनि सेवा फल मोटको छेनि सुणो भवि लोय। हिव आगल सेवा थकी स्यु फल एहने होय ॥ ९ ॥ ढाल २) लहरचो भीजलो (एदेशी) इक दिन काउसग पार तें मुनि आगल बैठा दीठ रे (धन २ मुनिवरु ए आ०)हलुवा करमी जाणने इम बोले वचन समीठ रे ॥ १ ध० ॥ रे भायो एह मनुक्षनो अति दोहिलो छे अवतार रे। एहने फोकट जे गमे वलि बांधे पापना भार रे ॥ २ ध० ॥ ते नर कचन गिरि तजी गहे पीतल सुन्दर जाण रे। काच खण्ड कर ढुं सर्डी गहे तजि मणि रत्नी खांण रे ॥ ३ ध० ॥ कल्पतरु उन्मीलने घर वाहें पेड बबुल रे। बांचे करि कर आवियो किणे खर देइ फूल रे ॥ ४ ध० ॥ मृग मद छाड कु बासने कर गहियें हुस घणेरी रे। आंब तजी गहें आकने अमृत तजि विष गहे फेरि रे ॥ ५ ध० ॥ मूर्खामे मूरख वडो तस आख्यो शास्त्र मझार रे। कुण जैन रतन पामिने कृ [illegible]

तिण जम्बुयें आख्या सात रा॰ क्षेत्र दक्षिण दिशि मेरु थी। भरत क्षेत्र उत्तम जन युत्त रा॰ षट खंडें सोभित अति ॥ २ तिण मध्य खंड पुर एक रा॰ मणि मंदिर नांमें भलो। मणि रत्न तणो आगार रा॰ ओपे षड पुहवी तिलो ॥ ३ ॥ गढ मठ मंदिर घर हाट रा॰ सोहे उल गवाक्षनी। जाणे ते विजय नी पत रा॰ धवलित छवि सित पक्षनी ॥ ४ ॥ चोहटें चोरासी वसेह रा॰ व्यापारि विवहारिया। करे विणज नानाविध वस्तु रा॰ मुख मीठा निर्मल हिया ॥ ५ ॥ वालें चालें धरम नी आंण रा॰ केइ श्रावक व्रत साचवे। थे अटलक भावे दान रा॰ त्रिकरण मुनि जद जाचवें ॥ ६ ॥ पुर स्त्री पिण सील सुजांण रा॰ पति कहणो नवि मेटती। जिन धर्म थकी बहु लीन रा॰ मुनि चरणांबुज भेटती ॥ ७ ॥ विचरे जिण नेगर मझार रा॰ मोटा मुनिवर मालता। जिन राज प्ररुप्यें मार्ग रा॰ निर्दुषण पण चालता ॥ ८ ॥ सुखिया तिहां लोक सदीव रा॰ निज निज कारज सहु करें। तिण पुर भूपति सिर मोड़ रा॰ देखि दुर्जन दूरे हरें ॥ ९ ॥ नृप नाम मृगांक उदार रा॰ कांछ वाच निकलंकियो। प्रजा पालें पुत्र पणेह रा॰ केहने दुख कदि ना दियो ॥ १० ॥ तिण नृप घर नारस नूर रा॰ विजय वती पट रागिणी। नृपथी वहे प्रीत असीव रा॰ कदि न हुवे अलखामणी ॥ ११ ॥ अथ भील

भीलडी नवकार रा० मुनिवर दीध हुतो तिणे । जपता ते
त्रिकरण जाप रा० तीन काल आसत घणे ॥ १२ ॥ करि
आयु पूरण के काल रा० भील नो जीव सुभ भाव थी ।
विजय पद राणी कुप रा० उपनो पुन्य प्रभाव थी ॥ १३ ॥
राणीये गर्भ प्रभाव रा० सिंह नो सुपना देखियो । नृप सुण
हरख्यो मन मांह रा० पुत्र जन्म घर लेखियो ॥ १४ ॥
पालें नित रुडी रीत रा० गर्भ धणे कर जावते । स्थिति
पाके प्रसव्यो पुत्र रा० सुभ वेला दिन फावतें ॥ १५ ॥ हिय
हरख्यो मृगाङ्क राजान रा० सुतनी सुणी वधामणी । वन्न
डाव्या जसना निसान रा० कर उच्छव हुसे घणी ॥ १६ ॥
करवावी रसवती सर्व रा० जीमाव्या पुरजन सहु । सुत
नाम राज सिंह कुमार रा० बतलाव्यो आदर बहु ॥ १७
पच धाय मायें हुलरत रा० वधतो कुमर दिना दिनें । जिम
वधतो सुर तरु छोड रा० अथवा विधु सित पक्ष वनें ॥ १८
पूरव कृत पुन्य प्रभाव रा० एहवा सुखमे अवतर्यो । एह
तीजी ढाल अनूप रा० कहे हुलास हर्षे भर्यो ॥ १९ ॥
दोहा) अनुक्रम सीखी कुमर सहु कला बोहोत्तर सार । शस्त्र
अने वली शास्त्रनी गुप्त न रही लिगार ॥ १ ॥ रुप घणो रलि
यामणो चतुरता भण्डार । सुतनी देश विदेशमे पसरी किर्त्ति
उदार ॥ २ ॥ तिण नृपनो गुण आगलो मति सागर मन्त्रीस

तेहनो पुत सुबुद्धियो सुमति नाम सुजगीस ॥ ३ ॥ तेहने सींह कुमार ने माहो माहि प्रीत । दिन प्रति दिन वधाति अदिक ते विहुने अवदीत ॥ ४ ॥ एक घडिने, आंतरे न रहे वेहु मित्त । षट प्रकार प्रीते कह्यो ते निवहें इक चित्त ॥ ५- प्रस्तावे हिव एकदा ते नृप पुत्र सु जाण । वन क्रीडाये सच रयो चढी चपलके काण ॥ ६ ॥ मित्र सुमति साथे लियो वलि परिकर वहु सङ्ग । पुर दूरे वन खण्डमे फेरे तुरी सरङ्ग ७ ॥ थाके हयने फेरवे खेद उतारण काज । इक सर तीरे आब तल उतर्यो सारे साज ॥ ८ ॥ तिहां किहांथी इक तिण समे पंथी आव्यो एक । नृप कुमार ना सादरे प्रणम्या पाय विवेक ॥ ९ ॥ तांम कुमर ते पथिक ने तेडि, आपण, पास । पूछे आदर अति घणे ते सुणज्यो उल्लास ॥ १० ॥ (ढाल ४ पथी डारे (एदेशी) पथी डारे, कहो तुम आव्या एथ किहां- थी मुझने आखियें पथीडारे । पथी डारे किहां जावो धरि- त्तण कहिये प्रच्छन न राखिये पं० ॥ १ ॥ प० फिर कांइ अचरिज वात दीठ हुवे जो को पुरे प० । प० ते सुण वामन फोड इम कह्ये पंथी चातुरे प० ॥ २ ॥ प० कहिवा मांडी वात सुणिये राजन चित्त थी, कुमरजी रे । कु० नृप सुत माडी कांन निसुणे साथ सुमित्त थी कु० ॥ ३ ॥ कु० बोल्यो बटाउ राय स्वामी पदम पुरी थकी कु० । कु० आव्यो छु

महाराज आगल जावा उछळकी कु० ॥ ४ ॥ कु० जावुं सेत्रुजे जात भक्ति करेवा मुनि तणी कु० । कु० आगल आखु हेव अचिरज अभिनव तुम भणी कु० ॥ ५ ॥ कु० तेण पदम पुर भूप पद्म सेखर नामे भलो कु० । कु० पाले प्रज समुदाय छायो जग जस ऊजलो कु० ॥ ६ ॥ कु० तेहने राणी नाम हसी रुप समी रती कु० । कु० नृप मन लीनो तेह जिम रामे सीता सती कु० ॥ ७ ॥ कु० पहरे नव नव वेस अद्भुत भूषण सुर समा कु० । कु० मृगमद अवर लेप दिन अधिकी उपमा कु० ॥ ८ ॥ कु० ससारिक सुख भोग विलसे नृप राणी सहे कु० । कु० नित नित नवली प्रीत कदे कटुकता नवि वहे कु० ९ ॥ कु० तास उदर नी जात पुत्री इक अति वालही कु० । कु० पुत्राहुत अपार प्योरी नृपने ते सही कु० ॥ १० ॥ कु० रत्नवती जस नाम गुण गण रयण कराडियो कु० । कु० रूपे कामनी नार रतिनो मान विहडियो कु० ॥ ११ ॥ कु० मीट ण मेले तेण सुरियो पिण देखीह जी कु । कु विनयनो थई प्रसन्न दीध कला जगनी सजी कु ॥ १२ ॥ कु अहि लिंगु भमर कुरङ्ग सुक पिक मरालनी कु । कु छवि जिण लीधी छीन अदभुत अङ्गनी घनी कु ॥ १३ ॥ कु सुन्दर स्त्रीनी जेह विद्या ते चौसट भणी कु । कु गुण जल हृदय तडाक आय भर्चो सारद वनी कु ॥ १४ ॥ कु अनुपम कान्ति

उदार जोवन जालम आवियो कु.। कु. कामी नरने रूप जपम करवा धावियो कु.॥ १५ ॥ कु. पितु नव जौवन पेख परणावा इम चिन्तवे कु.। कु. वर वरवा थई जोग वाल्ही वाला एहवे कु.॥ १६ ॥ कु नृप सुत रुडुं कोय क्या हीए जोड लहुं कु.। कु. तो परणावुं सच ए चिन्ता नृपनि घहु कु॥ १७॥ कु. आगल मीठी वात अचरिज कारी छे घणी कु.। कु. चोथी ढाल हुलास ए कही जिम चरितें भणी कु ॥ १८ ॥ (दोहा) एक दिवस नृप कन्यका रत्नवती मन रङ्ग। राज सभायें आविन बेठी तात उछङ्ग ॥ १ ॥ तिण अवसर बहु परि करे नट सुन्दर आकार। भूपतिने मुजरो करी करचो ढोल ढमकार ॥ २ ॥ कहे एता दिन नी हम चिन्तित इच्छा सार। ते सफली थई आज प्रभु … तुम दीदार ॥ ३ ॥ भोगव राज्य तुं पभ नृप प्रजा स… चिरकाल। सुखिया रहज्यो सर्वदा जिहां लग … ४ ॥ जो आज्ञा माहाराज सुख दिवरावे सस…

पम गरे सारे सा, मूर्छना वलि इक्वीस ताल विकटे वसा। आद अन्त मध्य ग्राम त्रिगुण पंचम सरा, तान तनन की चाल विश्राम गहीवरा ॥ २ ॥ मांडे इक दुइ ताल त्रिताल आदे घणी, कोकिल कंठे राह उथले रागणी। खेले नट बहु खेल असेस रसे भरी, देखे नरपति लोक एक दृष्टे करी ॥ ३ गज हय हसना रुप देखावे सुन्दरु, वक्र सभापण लोक हसाइत दित धरु। वलि नटवर इक रुप अनूपम आणियो भील भीलडी जेह प्रतक्ष प्रमाणियो ॥ ४ ॥ फिर फिर बोले वाण साक्षातें भीलडा, धनु सर लीधा हात स्याम रङ्ग डीलड़ा। नृप पुत्रि मति वन्त रुप ते देखतां, मूर्च्छा पांमी अचेत पडी पुडु वीजतां ॥ ५ ॥ रय थय एहवे कांम राय चित चमक्यो, करे सीतल उपचार भरांणो नृप हियो। पामी तांम सचेत पिताने आगले, कर जोडी कहे एह नटेस आव्यो भलें ॥ ६ ॥ जाती समरण ज्ञान उपजीयो तात जी, भील भीलडी रुप देख पाछल भजी। हु पिण पूरव जन्म भीलनी स्त्री हुती, माहरो प्रिय पुलिन्द घणी प्रेमे मति ॥ ७ ॥ ते भवथी हु आय तुमे घर ऊपनी, पूरव पुन्य पसाय सुतापण भूपनी। पिण माहरो भरतार पुलिन्द किहां थयो, तेहनो खरे विचारे निश्चय पाडजो ॥ ८ ॥ तो हिव जे कहे पूरव सुकृत माहरो, ससरो साच सरुप जे

अवगुण वाहरी । तेहने परणिस प्रेम अवर नर ना वरुं, तस वरजी हू और नरा चितना करुं ॥ ९ ॥ धारयो पण इम रत्न वतिये पथी कहे, ततखिण सुण अवदात कुमर मूर्च्छा लहे । उपन्यो जाति समरण कुमर जेहवो, कीधो पाछलुं सुकृत दीठो ते हवो ॥ १० ॥ हुंथो तस भरतार नृपति धूमाहरी नारी हुती एह इणे भव अवतरी । कुमर थयो अनुराग प्रतिज्ञा सांभली, पूरु तेहनो नेम पूरव भव साम्ली ॥ ११ परणु राज कुमारी पूरव नारी खरी, हेव वटाऊ आगल फिर कहे विस्तरी । रत्नवतीनो ते नेम पुरो पुर प्रगटियो, बहुला राज कुमार परणवा चित दियो ॥ १२ ॥ करवा प्रतिज्ञा पूर्ण नृपति सुत आवता, रुपे मन्मथ तोल नयन मन भावता पूछे पूरव बात तेहने नृप सुता, कहो जी आपे पूरव जन्मे कुण हता॥ १३ ॥ वलि पूरव भव सुकृत स्युं कीधा अ

जोर कुमरिना अङ्गमे ॥ १६ ॥ चिंते राजन हेव उपाय स्यु किजिये, परण नथयो नेम वहा विण दिजिय । पांचमी ढाल रसाल हुल्लास हुलास थी, कुमरना सीझी सकारज पुन्य प्रकाश थी ॥ १७ ॥ (दोहा) वहे पथिक ते वन्दवा स्त्री रत्ने सिरदार । तिम तुम पुरषा मे सही दरुप रत्न श्रीकार १ ॥ तरुनी तुमनी जाडण जुगती थाय अतिव । निश्चय तुम तिण परणस्यो निवसो सरी मुझ जीव ॥ २ ॥ कुमरें ताम पथिक प्रतं धीधा ताम पसाय । पावेइ निज अङ्गना वरत्र घणा सुख दाय ॥ ३ ॥ पय प्रणमी पथी चल्यो आगल आपण माग । पाछो कुमर सुसाथ थी घर आव्यो वड भाग ॥ ४ ॥ रत्नवती नृपनी सुता परणेवा मन खन्त । हिवनि सुणो श्रोता जना स्यु थाये औदन्त ॥ ५ ॥ (ढाल ६ माता जीरे देहरे रे, हुतो चुण २ फुलडा चाढु रे माताजी मोगरो रे (एदेशी) तिण वेलो पुरना सहुरे, महाजिन मिलि ने एकठरे । सुरि जन सांभलो रे ॥ एआं० ॥ राय दुवारे आविया रे भेटे वाव सुना छत रे ॥ १ सु० ॥ पोल खडा रही पोलियो रे, मूक्यो नरपति ने पास रे । आज्ञा जो हुवे रावला रे, पय भेटो कदीमी दास रे ॥ २ सु० ॥ राय हुकम माहे जइने सादर प्रणमी ने पाय रे । ढोकी आगल भेटणो रे वस्तु मुजरो सीस नमाय रे ॥ ३ सु० ॥

पूछे नृप सहु तुम भणी रे वरते छे कुसल कल्याण रे । कै कोइ दुख छे कहने रे कहो भाइ करु प्रमाण रे ॥ ४ सु० ॥ तिहु कर जोडी वीनवे रे महाजन नि सुणो महा राय रे । सुखिया छो सहु साथ थी रे प्रभु आप तणे सुपसाय रे ॥ ५ सु० ॥ धन कण कंचन थी अम्हे रे नित वधती वेल अतीव रे । नित नित नवला आंगणे रे उच्छव प्रकटे सुख नीव रे ६ सु० ॥ वस्तु वरा.रे वाधती रे धनना घर अपुट भंडार रे । डर भय घूक दूरे गया रे आपण देखी दिन कार रे ॥ ७ सु० ॥ पिण ए चिन्ता मांहरे रे, प्रभु तुम राय सिंह कुमार रे । पुरनी गलियें संचरे रे, ए अजुगत घात अपार रे ॥ ८ सु० ॥ अम्ह स्त्री रुप कुमारने रे, लुवधि तज कारज सारे र । सेरि सेरिय फिरे रे, प्रभु राज कुमरने लारे रे ॥ ९ सु० ॥ आरड़ता निज वालने रे, धवरावत मूंकी जाय रे । लाज सरम सुध ना रहे रे, इक निरख० कुमरनी चाय रे ॥ १० सु० ॥ कोण तजि सहु साथनी रे,

हिव भेटवी आपण हाथ रे ॥ १३ सु० ॥ रासिये आपण पुत्रने रे, अत्यादर राज कुवार रे । तो अमने सुख ऊपजें रे, हम एह अरज अवधार रे ॥ १४ सु० ॥ सुण महाजन मुख थासती रे, नृप अतिहि मीठी वाण रे । दीध दिलासा सादरें रे, नरपति अवसर नो जाण रे ॥ १५ सु० ॥ सह तुम जन सुखिया वसो रे, कुमर भणी वर जेस रे । राखे सु दरवारमे रे, हिव नगरे नवि आवेस रे ॥ १६ सु० तुम माहरें दृग सारसा रे, तुम रहियें अरह अस थाय रे । तुमने दुहव्या माहरें रे, खिण मात्रे नाहि सराय रे ॥ १७ सु० ॥ अम्ह लायक को चाकरी रे, फिर होय तो मुझने भाखो रे । तुम ममतो एकी पणो रे, मत सकमने कछु राखो रे ॥ १८ सु० ॥ रायें ताम विसर्जीया रे, सह महाजन गेह सिधाव्या रे । हुलास चन्द इन काही इम छट्ठी ढाल सुहाव्या रे ॥ १९ सु० ॥ (दोहा) राये अनुचर ने मुखे कहराव्या समचार । वन्छ कला अभ्यासियें रोज कुवार मझार ॥ १ ॥ नगरें कदे न जाइवो ए माहरी हित शान । मान सीख सुत साहजी जिम अम तुम सुख भाज ॥ २ ॥ जिम नरपति फरमाविया तेहा कुमरने जाय । प्रतिहारें सह वीनव्या कर जोडी सिर नाय ॥ ३ ॥ रहिये राज दुवारमे तुम पितु इम कह वात । नगरीये जाओ नही सो वातें इक

वात ॥ ४ ॥ निसुण पिताना ए वचन, दुहवांणों मन मांह चिन्तवया लागो कुमर कदियें कहणो नांह ॥ ५ ॥ उलंघ्यो में तातनो न करी खांमी लिगार । तोए बन्धन स्यां भणी यतो खरो विचार ॥ ६ ॥ तो हिव इहां रहवो मने युक्त न केते काल । तो परदेशें संचरुं करण परिक्षा भाल ॥ ७ ॥ पिण विण कारण विण गुनें पितु वरज्यो स्यामाट । विलखो मन मुख ऊतरयो मोटो करें उचाट ॥ ८ ॥ तिण अवसर आव्यो तिहां सुमति कुमरनो साज । देखी ओमण दूमणो पूछे आदर क्षास ॥ ९ ॥ अहो मित्र किण कारणे उदासीन छो आज । कृपा करी फरमाविये वात थइ महाराज ॥ १०

(ढाल ७) चढोतो हो रांधू हो मारुजी खीचडो जी, मारा राज अमांहे रहो एतो जि । दर्वेरो भात गाढा मारूजी हो भीज रह्यो जी क्षड मांह । (एदेशी) पूछ्ये कुमरने हो भाईडा सुमतने जी, मोरा मित्र मित्रजी कहें सहु मांडीने वात गाढा मित्रजी हो सांभलोजी, मोरा मित्र मित्रजी अम्ह परदेश वहेस्युं, गाढा मित्रजी हो सङ्ग चलोजी मोरा मित्र ए आ०) मुख अनुचरने हो भा. आकरा जी । मो. मि० कहराव्या यच तात ॥ गा १ ॥ इहां रहो घरमे हो भा कंदमें जी । मो मि० । बाहर पग न दिवाय । गा. ।, इम पद वधें हो भा. मांहरा जी । मो. मि० । किम करि

विहाय ॥ २ गा ॥ अवर तो आज्ञा हो भा. तातनीं जी मो मि.। ए बंधमो न सुहाय । गा । एहीज मोटुं हो भा. सोच छें जी । मो. मि.। विण अवगुण न रहाय ॥ २ गा तो सङ्ग चालो हो भा. मांहरें जी । मो. मि.। जो तुम प्रीत अपार । गा । चालस्यां विहुं हो भा धरती जी । मो. मि.। आजनी रात मझार ॥ ४ गा. ॥ जो वानी मांहरें हो भा खंत छें जी । मो मि.। पदम पुरी सुख कार । गा.। परणवि तिहां छे हो भा मांहरी जी । मो मि.। पूरब भवनी जे नार ॥ ५ गा ॥ आपण करस्यां हो भा. तेहनी जी । मो. मि.। पूर्ण प्रतिज्ञा जे सार । गा । तो हिव आपण भा. चालवु जी । मो. मि.। न करवी जेज लिगार ॥ ३ गा ॥ इण उपरांतें जो भा. नवि चलो जी । मो. मि.। तो रहो सुखिया जी एथ । गा.। अम्हने तो जावुं हो भा निश्चयें जी । मो. मि.। छेंजे पदम पुर तेथ ७ गा ॥ इम सुण बोल्यो हो भा. सुमत जी । मो. मि.। तुम अम एकण तार । गा.। न पडो कदिये हो भा. आंतरुं जी । मो. मि.। ए मुझ मनह विचार ॥ ८ गा. ॥ किमें मूकायें हो भा एकलो जी । मो मि.। इण वखते परदेश गा.। मांहरें तो रहज्यो हो भा बिन दिने जी । मो. मि. तुमथी प्रीति विसेस ॥ ९ गा. ॥ तुं परदेशी हो भा. हुं परे

रे, । मो. मि० । ए बडी बात विरीत । गा. । इम तो भाखि हो भा. जगतसे जी । मो. मि. । स्वारथियां नर प्रीत ॥ १० गा. ॥ काम्राने काया हो भा. एकदी जी । मो. मि. । खिण तवि दूर रहंत. । गा. । ए तुम विरहो हो भा. अध खिणे जी । मो. मि. । मुझ तन केम सहंत ॥ ११ गा. ॥ तुम विण फीकी हो भा. सम्पदा जी । मो. मि. । तुम विन फीको जी नेह । गा. । तुम विण फीकी हो भा. गय तुरी जी । मो. मि. । तुम विण सुनी जी देह ॥ १२ गा ॥ सुख दुख सीरी हो भा. ते खरा जी । मो. मि. । प्रीत ना पालण हार । गा. । काम पड्यां थी हो भा. पांतरें जी । मो. मि. । ते मित्रने मुख छार ॥ १३ गा. ॥ तुम मुझ प्रीति हो भा. अविहड जी । मो. मि. । राखज्यो नित करतार । गा. । चालिस प्राते हो भा. तांहरें जी । मो. मि. न रहुं गेह मझार. ॥ १४ गा. ॥ इम बिहु मित्रें हो भा. चित्त मे जी । मो. मि. । चालिवा थया उजमाल । गा. । हर्ष हुलासे हो भा. एकही जी । मो. मि. । सातम ढाल रसाल. १५ गा. ॥ (दोहा) मित्र २ मिल तिहां थकी, थई तुरङ्ग असवार । कर कृपाण संबल लिया धन मणि रत्न अपार । १ ॥ निर्भय पणते बिहुं जणा, वाटें वहे सरूप । चाल्या पदम पुरी दिसे जोते कुतुक अनूप ॥ २ ॥ नग २ गिरि

वन नव नवा नव २ देश विदेश । नव २ पुर घर नव नवा नव२ नदी निवेस ॥ ३ ॥ नव२ कौतुक निरखता पथें पुलिया जाय । इक दिन संध्याने समें ते वेहु इव भाय ॥ ४ ॥ अटवीयें दिन आथम्यें सूते इक जक्ष वास । रयणे विश्रामो ग्रह्यो सावचेत सु विलास ॥ ५ ॥ सूतो सुमत मन्त्री तनुज बैठो सीह कुमार । हिव इण ठांमे स्युं हुवे विस्मय वात वदार ॥ ६ ॥ (ढाल ८) पनां मारु धड़ी एक कर होजे काय हो । (परदेशी) अब रयणे नृप कुमर जी चतुर नर भारत शब्द अतीव हो । श्रवण सुण्यो इक पुरुष नो च० चिंते प्रमत दीव हो ॥ १ ॥ सडु वचन नो पूरो बल बुद्ध सनूरो नृप कुमर जी च० पुन्य सदा जयकार हो । (ए आ०) एह अरण्ये ए समे च० कुण पाडे ए रीव हो । रखे कोइ आतुर त्रस मल्यो च० होय जो वनचर जीव हो ॥ २ ॥ तो हिव जाइ इं तिणे च० छोडाउं इम चिन्त हो । कर कृपाण ले चढ़ चढि च० चाल्यो कुमर तुरत हो ३ ॥ साद्दने अनुसारें करि च० पहुच्यो तिहां ततकाल हो । दीठो तिहां इक कुमर जी च० राक्षस अति विकराल ॥ ४ ॥ इक नरने इक कापसे च० घाली पीडें भूर हो । ते नर सीद्दाणो थको च० आक्रंदे स्वर पूर हो ॥ ५ च० ॥ छोडावो कोई मुझने च० ए दुख थी नर धीर हो । ताम

कुमर राक्षस भणी च० पूछे अहो वर वीर हो ॥ ६ व० ॥ किस्युं अकारज इण करयुं च० तुमनो तें कहो भेव हो । कोद परो हिव एहने च० मान निहोर सु देव हो ॥ ७ व० ॥ ताम राक्षस कहे कुमरने च० करने सझाइ केय हो । आराध्यो इण मुझ भणी हो च० बहु आमंत्रण देय हो ॥ ८ व० ॥ समरथां हुं परतिष थयु भक्ष मांगु नर एक हो । इण नवि दीधो तो हिवें च० करुं एहनो भक्ष सुविसेष हो ॥ ९ व० ॥ भूखें चूटें काल जो च० करस्युं ए भष आज हो । ए कारण इण झलियो च० अवर नही को काज हो ॥ १० व० ॥ निसुण कुमर मन ऊपनी च० दया घणी तिण ठांम हो । कुमर कहे राक्षस भणी च० कर जोडी ने ओम हो ॥ ११ व० ॥ हुं आव्यो चाली इहां च० नयणे आगल आज हो । विण सार्ये ए मोहरी च० क्षत्री वटने लाज हो ॥ १२ व० ॥ तिण हुं तुझनो पूरवुं च० ए दुष्भर भर पेट हो । एक दिवस मरवो सही च० ए यम घारें नेट हो ॥ १३ व० ॥ तुझने मुज्झ सरीर नो च० धुं आमिष भर पूर हो । एहने आप कृपा करी च० मूको काष थी दूर हो ॥ १४ व० ॥ इम कहि काढ कृपाण ने च० आपण अङ्ग कुमार हो । काटण लागो राक्षसें च० ए कढयुं हाथ तिवार हो ॥ १५ व० ॥ कहें धन धन तुझ तातने च० धन २ ताहरी मात हो । जेहने उदरें

हपनो च॰ सूर वीर तुमे भ्रात हो ॥ १६ च॰ ॥ हुं तुठो तुम साहसें च॰ मांगरे वर देव हो । कुमर कहे वर ए वहू च॰ ए नर मूको देव हो ॥ १७ च॰ ॥ छोड्यो तव तिण जीवतो च॰ कुमर वचन मन मान हो । राक्षस कहे निफल नहीं च॰ दरस देव नो जान हो ॥ १८ च॰ ॥ तिण तुमने देवुं खरो च॰ ए चिन्तामन रत्न हो । मनन चिन्तित सहु पूरस्यें च॰ राख्यां थी बहु यत्न हो ॥ १९ च॰ ॥ कुमरे तव चिन्तामणी च॰ लीधो मन धर कोड हो । देव अदृश्य थयो तदा च॰ ते नरने तिहां छोड हो ॥ २० च॰ ॥ कुमर फिरि ने आवियो च॰ जिहां सूतो निज मित्त हो । हुलास चन्द ए आठमी च॰ ढाल कही धर चित्त हो ॥ २१ च॰ ॥ (दोहा फिर पाछो निज मित्रने आवें ताम जगाड़ । जिम थई सारी चरी तस विधि राखी माड़ ॥ १ ॥ चिन्ता मन चढियो करें ते देषाड्यो तास । अधकार दूरे हरें दिनकर जेम प्रकाश ॥ २ ॥ मनमें हरषि सुमत जी घणो प्रसस्यो मित्र । तांहरें पुन्ये पामस्यां लीला चालिस यत्र ॥ ३ ॥ पाछल पहुर तिहां थकी चाल्या मित्र तुरन्त । वाटे बहु विध वातडी करता जाय पुलन्त ॥ ४ ॥ कुमर कहे रे सहोदर मुझ मन चिन्ता भूअ । पुरूप द्रेषणी छें घणी रत्न वती नृप धूअ ॥ ५ ॥ तेहथी मिलिस्यां किम जइ किम कर

सिद्धि सकाज । ए मोहरें मन सोचनो वडी मित्र सिर ताज ॥ ६ ॥ मन्त्री सुत तव धीरपें सगल तणो आधार । जेहथी सहु आस्या फले समर मन्त्र नवकार ॥ ७ ॥ पंच परमेष्टी नो जपें कुमर जाप दिन रात । जिम सरज्यो तिम थाइस्यें एम करन्ता जात ॥ ८ ॥ (ढाल ९) राजन मोरी निद्रा ले गयो, भोने भव रावि छो हो देगयो । (एदेशी) इक दिन विहुं जण मित्र जी काई पहुता सरवर पाल । आवी बैठा आंबनी जी काई छाहे थाय सुस्याल जी ॥ १ पुन्यें सहु सुख आवी मिलें पुन्ये दुरजन दूरें टलें जी, कोई कुमर नो पुन्य पवित्र ॥ (ए आं०) रायें सिंह सूतो तिहां जी काई निद्रित थयो पथ खेद । वन खण्ड मांह गयो तिसें जी काई सुमति मित्र उमेद ॥ २ पु० ॥ सुन्दर फल खावां भणी जी काई तोडे भूखने लागे । जातो दीठो तेहवें जी काई विद्याधर नभ मागे जी ॥ ३ पु० ॥ तिण विद्याधर जावतें जी काई राज सिंहने ताम । सूतो देखि तरुतलें जी काई मनमें चिंतें आम जी ॥ ४ पु० ॥ स्युंए अभिनव काम छे जी काई अथवा सुरपति एह । रूप अनूपम एह नो जी काई वर्णवतो नहि छेह जी ॥ ५ पु० ॥ चिंत्यो पाछिल सुन्दरी जी काई ओविस हिरणी अंत । देखिस जोए पुरुषने जी काई तो करस्यें सिर कंत जी ॥ ६ पु० ॥

मांहरी गिणतन नां वणे जी कांई पहने आगल लेस । एह थी अनुरागी हुस्ये जी कांई मुझ स्त्री चपल विसेस जी ॥ ७ पु० ॥ मांहरो घर भांजे रखे जी कांई तास विचार न काय । नारी नवि रजे इसो जी कांई करवो प्रथम उपाय जी ॥ ८ पु० ॥ एम विचारी खेचरु जी कांई ततखिण ते घन मांह । जडिका तोडी लावियो जी कांई ढील करी दिग नाह जी ॥ ९ पु० ॥ घसी कुमर ने भालमे जी कांई तिलक करयो तिणवार । पुरुष रुप फिटी करी कांई थाय अनूपम नार जी ॥ १० पु० ॥ आप विमाणे वैसने जी कांई आगल चाल्यो नेह । पाछल थी तिण मारगे जी कांई विद्याधरि आवेह जी ॥ ११ पु० ॥ रुपे अनुपम अप्सरा जी कांई अथवा रतिने तोल । सुती देखि चिन्तवे जी कांई अहो स्त्री रत्न अमोल जी ॥ १२ पु० ॥ जो पति मांहरो पुठ थी जी कांई आरे काम विकार । मुझने छोडी पहने जी कांई करस्ये आपण नार जी ॥ १३ पु० ॥ उपकारिज पहनो करुं जी कांई इम चिन्तव सुविसेष । मूली घस भाले कियो जी कांई तिलक पुरुष नो वेस जी ॥ १४ पु० ॥ थयो कुमर विद्याधरी जी कांई गइ आगल उछरङ्ग । नवमी ढाल सुहामणी जी कांई आणी हुलास अभङ्ग जी ॥ १५ पु (दोहा) विद्याधर विद्याधरी मिने परस्पर खोट । बांधी

सुमतें ते सहु दीठी रह्यो तरु उट ॥ १ ॥ आव्यो कुमर कने तदा जाग्रत करी कहन्त । भाई खेचर खेचरी इण परें करयो उदन्त ॥ २ ॥ मूली ए विहुं इहां थकी आंणी गुण साक्षात । देख्यो छे निज नयण मे नाही पटंतर भ्रात ॥ ३ ते विहुं आगल चालिया केते दिने पुलंत । जेह दिसे चाल्या हुता ते पुर पदम पहुंत ॥ ४ ॥ (ढाल १०) पक्षी गुण रसियो, जेह सुगुण नर नार तेहने मन वसियो (एदेशी) तेण पदम ढूकडा रे, सुरिजन, वन मांहि एकन्त । पंथी गुण रसियो, रत्नवति नृप वाल तेहने चित वसियो ॥ (ए आ० एक प्रसाद मनोहरू रे सु जक्ष तणो सोहन्त ॥ १ पं० ॥ तिण प्रासाद पखें घने रे सु ते विहु मित आल्हाद । पं० । रहें रयण निद्रा समें रे सु. सोवें तिण प्रासाद ॥ २ पं ॥ चिंतामण सुपसाय थी रे सु. पूरे मनती आस । प. । भोजन आणें भावतो रे सु नयर जईने पास ॥ ३ पं० ॥ दिन नीगमतें एकदा रे सु. रत्नवती नृप वाल । पं. । बहु स्त्री वृन्दे परवरी रे सु आवी प्रसादें चाल ॥ ४ पं ॥ उतरी तांम सुखास थी रे सु. रत्नवती बहु भांम । पं । आवे जक्ष नि देहरें रे सु. सखियां साथे जांम ॥ पं. ५ ॥ पुरुष भणी परहो करें रे सु० अवसर पांम अनूप । पं० । इण विहुं जडी प्रभाव थी रे सु. कीधो नारी नो रूप ॥ ६ पं ॥ जिहां बैठी

प्रासादमे रे सु० रत्नवती तिण ठांम । पं०। ए पिण एकण कोणमे रे सु० ऊभी देव सिर नांम ॥ ७ पं० ॥ पाछी वलति नृप सुता रे सु० दीठी स्त्री ए दोय । पं० । अण ओलषिता आदरे रे सु० पास बुलावि सोय ॥ ८ पं० ॥ पूछे तेहने नृप सुता रे सु० अहो बाई तज गुझ । पं० । किण नयरी थीं आविया रे सु० तुमे विहु दाखो मुझ ॥ ९ प० ॥ सुमति सखि बोली तिसें रे सु० सुणो नृप धूआ भेव । पं० । मांहरी सखि हुं विहुं जण्यां रे सु० करवा दरसण देव ॥ १० प० ॥ मणि मन्दिर पुर मांहरो रे सु० त्यां थी आवी हेव । पं० । केतला दिन रहिने इहां रे सु० करस्युं देवनी सेव ॥ ११ प० ॥ वलति रत्नवती कहे रे सु० तुझ मुख देखी नेण । पं० । हुलसें छें मांहरी हियो रे सु० मीठा तुम विहु वेण ॥ १२ प० ॥ मुझने पावन कीजीये रे सु० चालो अम्ह घर नेह । प० । रहियें अम्हने प्राहूणी रे सजनी भावें भक्ति करेह ॥ १३ प० ॥ सुमति सखि हस बोलती रे सु० अम्ह उतरी इक ठाय । पं० । रहस्यां मिलस्यां तुम थकी रे सु० राज दुवारे आय ॥ १४ प० ॥ स्यु छे हिवणां आपणे रे सु० घर चालण अटकाव । पं० । तुमनो अम्हनो नेह ए रे सु० चाहि जे मन चाव ॥ १५ प० ॥ पलो झाल ऊभी रही रे सु० रत्नवती कहे वेन । पं० । तुम नयि निरखें

अंध खिणे रे सू० मुझने नवि रहे चेन ॥ १६ पं० ॥ हिव हट
नाट दूरे तजी रे सू० चालो अमचें गेह । पं० । दसमी ढाल
झुलास थी रे सू० वांध्यो अभिनव नेह ॥ १७ प० ॥ (दोहा
रत्नवतीयें विहुं भणी आंणी आपण धांम । राखें आदर
अति घणे भक्त युक्त वड मांम ॥ १ ॥ करे इक अत्यानन्द
थी हास्य विनोद अनेक । प्रश्नोत्तर भाषे करे मनमे धरि
विवेक ॥ २ ॥ धर्म कथा मांडवली ज्ञान घणो ए सार ।
चौदे पूरव नो जपें सार मन्त्र नवकार ॥ ३ ॥ दया धरम
दिल राखिये मति रूडीनी टेक । एम करे तीने जणी ज्ञान कथा
सुविवेक ॥ ४ ॥ गाथा छन्द प्रहेलिका दूहा अनुपम जांह
कहतीं हर्ष प्रमोद में सुखथी निगमे दीह ॥ ५ ॥ (ढाल ११
सोई सयांणो अवसर साधे (एदेशी) इक दिन पूछे रत्न-
वतीनें, इम कुमर स्त्री खेल मतीने । अहो सजनी तें कठिन
पण धारयो, पूरव भवनो वर संभारयो ॥ १ ॥ भीलनो
जीव अजे नवि प्रकट्यो, तोहरे तनतो जोवन उलट्यो ।
वर पाखे सोभे नवि नारी, तिण तुं कर हुं कहुं जे विचारी
२ ॥ नर वरवा स्वयंवर मंडाविये, एह प्रतिज्ञा सहु छंडाविये
देश नयर पुर राय बोलावो, सुन्दर देखि वरो चित चावो
३ ॥ इम सुण रत्नवती तव बोली एस्युं आखे सहियर
भोली । इम नवरु हुं केहने भरता, वरस्यु मुझ पण पूरण

करता ॥ ४ ॥ पूरब भवनी वात कहेसी, वलि सुकृत नो सार लहेसी । धर्म किधो जे पूरब भवमे, कहस्ये करज्यु जिम ते जन तवमे ॥ ५ ॥ परणिस मनने कोड घणेरें, एमें रति न पडण द्यु फेरे । कुमर सखि हंस बोली एमो, तोहुं सुण पूरु तुझ नेमो ॥ ६ ॥ पूरब भवना वीतक जेही, विधिय थया इं आखु तेही । हरषी रत्नवती तव भाषे, नकर जेज त्यु अंतर राखें ॥ ७ ॥ कुमर नारि कहे पुष्कर दीपे, सुण इक सिद्ध वट ग्राम समीपे । गिरि तिण पर तुम स्त्री भरतारो, रहता भील तणो जम वारो ॥ ८ ॥ इक दिन मुनि कीधो चैामासो तुम पिण विहुं जाता तिण पासो । सेवा करतां चित्त सदाइ, तब मुनि तुम विहुने सुखदाइ ॥ ९ ॥ सीखव्यो मंत्र नवकार उदारो, तुमनो सुधरयो ते जम द्वारो । इण भव सुभ पुन्ये नृप पुत्री, आय थइ वडभाग उछत्री ॥ १० ए जन्मान्तर वात तुमारी, भाखी जिण वीती सारी । सांभल रत्नवती चित चमकी, मच्छन भेद कहें एस्यां थकी ११ ॥ रखे होवें पूरब भरतारो, पिण पाम्यो नारी जम वारो । कुमरी चन्द्रलेखा सखि सांमो, जोइ भाखे मुसकी आंमो ॥ १२ ॥ सजनि प्रतिज्ञा आज अमारी, पूरवि छे प्राहुणडी सारी । नर छे अथवा नार ए होइ, निश्चय न थयो मुझने कोइ ॥ १३ ॥ चन्द्रलेखा कहे ए प्रियु थारो,

छे निश्चे किण कारण नारो । रूप करयो छें सखि अवधारो चौडें करिस इहां आपण सारो ॥ १४ ॥ ए छे पूरब भवनो प्यारो, एहमे न धर सन्देह लिगारो । उपनो हर्ष एकादश ढाले, हुलास चन्द भाखी सुविसाले ॥ १५ ॥ (दोहा) चन्द्रलेखा वलि रत्नवती कर जोडीने एम । घणे निहोरें वीनवे कुमर स्त्री प्रते एम ॥ १ ॥ मया करीने हिव करो प्रकट मुलगो रूप । जेम सोच सहु नो मिटे प्रगटे पुन्य अनूप ॥ २ ॥ औषधिने जोगे विहु थया पुरुषने वेस । अद्भुत रूप सुशोभतो चकित थइ सहु देश ॥ ३ ॥ दोडी दीध वधामणी नरपत भणी उदार । बाई ना चिन्ता फल्या भली करी करतार ॥ ४ ॥ ततखिण ते विहुं आविने नृप ने करयो जुहार । नृप पिण देखी एहने हरषित थयो अपार ॥५॥ भूप भणे हिव दाखिये आपण दो कुल वंस । सुमति मित्र तब वीनवें सुणो धरा अवतंस ॥ ६ ॥ (ढाल १२) माली थारा बागमें दोय नारंगी पाकी रे लोय । अहो दोय ना० (एदेशी) मणि मन्दिर पुर सुन्दरु अलका सम रायो रे लोय, अहो अ० । नाम मृगाङ्क मनोहरु प्रजने सुखदायो रो लोय ॥ अहो प्र० १ ॥ तेहनो पुत्र ए छे सही राय सिंह कुमारो रे लोय । अहो रा० । एक वटाउ मुख सुण्यो तुम सुता विचारो रे लोय ॥ अहो सु० २ ॥ जाति समरण उपने

चरि सगली दीठी रे लोय। अहो च०। परणेवा माननी लागी अति मीठी रे लोय ॥ अहो ला० ३ ॥ अम्ह विहु तिहा थी चालिने इहा आव्या सीधारे लोय। अहो इ०॥ तुम पुत्रीना कुमर जी पण पूरण कीधा रे लोय ॥ अहो प० ४ ॥ भूपतिने मन ऊपनो आनन्द घणेरो हो लोय। अहो आ०। व्याव करे बानी हिव छे किस्यु अवेरो रे लोय ॥ ५ अहो छे० ॥ राय महोच्छव मांडिया साजन हरषाव्या रे लोय। अहो सा०। तेडाव्या तिथि पत्रिका धारी मन भाव्या रे लोय ॥ अहो धा० ६ ॥ साहो शुद्ध सुधावियो अतिहि अति नेडो हो लोय। अहो अ०। कुंकुम पत्री देइने सहु साजन तेडो रे लोय ॥ अहो स० ७ ॥ पुरना घधावा सहु तणां नरपत घर आवें रे लोय। अहो न०। नाचे मिलने गोरडी कोकिल स्वर गावें रे लोय ॥ अहो को० ८ ॥ वर बोला जीमावता वीदणी वलि बरने रे लोय। अहो वी०। आरिम कारिम आपण विहु ठामे करने रे लोय ॥ अहो वि० ९ ॥ लगन दिवस उच्छव करि परणाव्या कोडे रे लोय। अहो प०। सहु कहे दुक्षम ऊपजो ए सरिखे जोडे रे लोय अहो ए० १० ॥ धन कण कंचन द्राय जो बहु राजा दीधो रे लोय। अहो ब०। हय गज रथ पायक दई जगमे जस कीधो रे लोय ॥ अहो ज० ११ ॥ दासी दास घणी घणी

हो तुम पग मोजडी जी । तुम मुझ सिरनो मोड हो मी० नयण न कीजें हो राता रोसडा जी ॥ ४ ॥ मैं अनुमानें आज हो मी० जाणुं जे एता हो दीहे रह्या भरया जी । मेंई तो मन आप हो मी० इण दिन मनमे हो अन्तर घणु परया जी ॥ ५ ॥ नहि कहुं सुख खिण एक हो मी० इण पर स्वामी हो तुमने इसणे जी । मुझ ने बतावो भेद हो मी० हम तो प्यारा हो माहरें नावि दणे जी ॥ ६ ॥ अथवा रूप माहरें तात हो मी० कहो वो बातें हो दुवें जो दुहव्या जी । कछु हुवे राखी पाड हो मी० का किण अनुचर हो कहवा बबल्या जी ॥ ७ ॥ किण दासी दास निटोल हो मी० आणन मानी हो ते पिण दाखवो जी । हुं तो तुम पगनी खेह हो मी० मुसर्थी छिपाविवो किम प्रिउ राखवो जी ॥ ८ ॥ तव बोल्या हरखे कुमार हो० नार नगीनी, सुणस सलूणी हो वसी वातडी जी । तुमनी वसी हृदय मझार हो ना० दोषन हुंता हो किम कहुं ओभडी जी ॥ ९ ॥ तु माहरें प्राण समान हो ना० कथन मे चाळे हो सुकुली सुन्दरी जी । नवि दुणे लेण खोड हो ना० सुसरें राखी हो कुमया ठाकरी जी ॥ १० ॥ दासी दास अनुचर कुण तोल हो ना० मुझ आज्ञाये हो बाहर पग दिये जी । पिण पितु सेवानी चिंत हो ना० पर घ जाणी हो गेह जाई जिवें जी ॥ ११ ॥ तज तात मनो ...

वृद्ध हो मा० आवी भरोसो हो केतो आणवो जी । नवि सासती तेहनी सेव हो मा० फोकट सुत पण हो मांहरो जाणवो जी ॥ १२ ॥ सुण रतनवती कहै एम हो भी० भीयु मन साचो हो चिन्ता तुं मने जी । हुं पिण चालुं साथ हो भी० धन दिन गिणस्युं हो सासु मणमने जी ॥ १३ ॥ परभाते वीनवी आप हो भी० मुझ पितु पासें हो सीखज मांगवी जी हुं पिण मांहरी मात हो भी० सम झाविने हो सीख लेस्युं हवी जी ॥ १४ ॥ इम दम्पती कर आलोच हो भी० बेहुं सवेरे हो ऊठ्या सेज थी जी । ए तेरमी ढाल रसाल हो भी० हर्षे हुलासें हो पभणी हेज थी जी ॥ १५ ॥ (दोहा) पद्म सेखर नृपने कुमर प्राते करि जुहार । अरज करें कर जोडीने हिव महाराजा सार ॥ १ ॥ सीख दिरावो मुझ भणी कृपा करी भूपाल । आवुं देशे अम पुरें मणि मन्दिरे विसाल ॥ २ ॥ घणे काल आपण घरे सुखियां रह्यो सदीव हिव मेखविये मुझ भणी धरने प्रीति अतीव ॥ ३ ॥ वृद्ध अवस्था बापजी अछें अमारे गेह । तेहनी सेवा साझ स्युं भक्ति धरि बहु नेह ॥ ४ ॥ वीनवतां सुसरा भणी इम राज सिंह कुमार । एहवे नृपने आगलें आय कहै प्रतिहार ॥ ५ ढाल १४) नान्द नाहलो रे (परदेशी) स्वामी माझे मन्दिर झकी रे ढमो मेसक आपके । रानन सोभको रे (ए आ०)

मोलें, कागद ते कने रे कुमर नोमनो थायकें ॥ रा० १ ॥ जो आज्ञा हुवें रावली रे आइ आयुं तस मोहिक । रा० । राय कहें मुझ आगन्यां रे आवाद्यो उछाहिक ॥ रा० २ ॥ नृप हुकमे प्रेक्षक तदारे आव्यो नृप दरबारक । रा० । कर मुजरो हाथें दियो दियो रे कुमरने लेख उदारक ॥ रा० ३ खोहयो कागद कुमरजी रे वांची नृपने दीधक । रा० । रायें पिण ते वांचने रे कहे सहु मोह प्रसीधक ॥ रा० ४ ॥ तात तुमारें तुम भणी रे लिखिया ए समाचारक । रा० । वच्छ इहां आवा तणी रे न करो जेज लिगारक ॥ रा० ५ ॥ अम गरढा पण रूपणी रे दिक्षा लेवा खन्तक । रा० । सो वातांना एकही रे इहां आवा उदन्तक ॥ रा० ६ ॥ जिम आंधाने लाकडी रे तिम माहरें सुत एकक । रा० । मांहरो पत्र ए देखतां रे पुलजे पन्थ विवेकक ॥ रा० ७ ॥ उतावल अतिहि लिखि रे घणी करी मन्न हारक । रा० । मुख वांणी संभला विपारे प्रेक्षक पिण समाचारक ॥ रा० ८ ॥ खबर नही थी मुझ प्रतें रे एतादिन भो पूतक । रा० । जन मुख रहतो सासरें रे निसुणी मेल्यो दूतक ॥ रा० ९ ॥ हिव अध खिण रहजे मती अहो पुत्र सिरदारक । रा० । ए पत्रे लिखिया अछे रे व्याति कर बहु विस्तारक ॥ रा० १० ॥ वांची प्रवस पुरी धणी रे चिंते जमाइ येहक । रा० । मोकलचो आपस

घरें रे हठ तज घणें सनेहक ॥ रा० ११ ॥ नृप जइने अंते उरें रे राणी ने आक्षाक त । रा० । राय सिंह जामात ने रे तेड़ो मेल्यो तातक ॥ रा० १२ ॥ हिव कुमरी मुकला विये रे वस्त्राभरण अमामक । रा० । दे धन कञ्चन दाय जो रे ढील तणो नवि कामक ॥ रा० १३ ॥ परदेशी माहुणा रे मोह करे वो कुडक । रा० । जावे नेह तजी नयो रे पखीनो पर कडक ॥ रा० १४ ॥ पुत्री रत्नवती घणी रे वाली अध खिण मातक । रा० । विरह खमता दोहिलो रे पिण पर तणी विसातक ॥ रा० १५ ॥ राये राणी चितवी रे दीध घणुं धन सारक । रा० । दासी दासना जोड़ला रे दीध घणी मनु हारक ॥ रा० १६ ॥ हय गज रथ साथे घणां रे पायक पड़ा झुझारक । रा० । ढाल कही ए चौदमी रे आंण हुलास अपारक ॥ रा० १७ ॥ (दोहा) कीधो सासूयें तदा कुंकुम तिलक निलाड । गद गद स्वर कुमरने सासू सुसर सलाड १ ॥ अहो जमाई माहुणा तुम्ह सरिषा अम फेर । पर आविस गिणस्युं जदा धन्य दिवस ते फेर ॥ २ ॥ लाडक वाही अम सुता चाली तुमचें साथ । पिण एहनी छे कुमर जी लाज तुमारे हाथ ॥ ३ ॥ वहिला मिलज्यो वालहा अम्ह उपर कर दाय । तुम विण अमने वरस दिन रैण छमासी जाय ॥ ४ ॥ पत्र लिखिने पाठवो विसर मजाज्यो आप ।

अमती लीधें रावरो जपस्यो निस दिन जाप ॥ ५ ॥ कोम काज बम जोग जे हाथ ते संका छोड । लिखि ज्यो वस्तु मंगाव ज्यो जदनो होवें कोड ॥ ६ ॥ हिव पुत्रीने मा तणी वर्जणें वेसार । इम सिक्षा मण उचरे नयणे आंसु धार ॥ ७ ढाळ १५) सात सहीरे मुलरे पणि हारी हे पोणीड़े गईरे तलाव (परदेशी) पुत्री ममुदित मन करि सुकुमारी हे अपे जे जिनवर जाप । देव गुरु धम उपरें सु० फंदयन धरजे जी पाप ॥ १ ॥ प्रीतम आज्ञा चाल जे सु० वचनन लोप लिगार । सासु सुसरा नी सदा सु० कर जे भक्ति अपार ॥ २ ॥ लडजे विडजे नहि कदा सु० कै इथी कडुकन बोल । बोलिस मी गुण तेहथी सु० थाय मनुष्य नो मोल ॥ ३ ॥ दान सुपातर नु दिये सु० शुद्ध साधु माति लाभ । हाथ दलालि राख जे सु० तेह थी पथस्ये जी आभ ॥ ४ ॥ सहु थी सुण मीठो बोलवें सु० पाप थी रहजे जी भीत । चाल जे कुलवट आपणे सु० निज घर जेहनी जो नीत ॥ ५ ॥ घणु हुं तुझ भणी सु० सी कहुं वात अमर्व । ते विण चतुर अछे भणी सु० लहतो अवसर सर्व ॥ ६ ॥ सजनी सहु आवी मिली सु० बाला पणनी प्रीत । रत्नवती तव सांचवें सु० रुदन करि अगरीत ॥ ७ ॥ समेडण साथे घणु सु० नमर घणो सहु साथ । पुर बाहिर पहुचाविने सु० घर

आव्यो नर नाय ॥ ८ ॥ कुमर तिहां थी चालियो सु० करतो अभङ्ग प्रयाण। वाटे केता नृप पुरे सु० वर तातो निज आण ॥ ९ ॥ केते दिवसे आवियो सु० आपन नयर नजीक। मेसक मेलो पाठवी सु० तातने आवाशी ठीक॥ १०॥ राय मृगाङ्कें साँभली (सुविचारी रे) पुत्र वधाई जी सार अङ्ग उपङ्ग सहु उलस्या सु० जिम कदंब जल धार ॥ ११ ॥ चौरङ्गी सेना सझी सु० आव्यो साहमो भूर। कुमर पिताने आपने सु० पाय पड्यो धर चुंर ॥ १२ ॥ हृदय आलङ्गीने मिल्यो सु० पुत्र पिता ससनेह। आज भलो दिन ऊगीयो सु० मोती वुठा मेह ॥ १३ ॥ महोच्छव अतिहि आविया सु० राज दुवार मझार। ढाल पनरमी एकही सु० हुलास चन्द उदार ॥ १४ ॥ (दोहा) राज लोक हरषित हुवा कुमर तणा मुख देख। राये सुतने सूंपिया राज काज सुविशेष ॥ १ ॥ आपण त्रितमे चिंतव्यो सुतने दीजें राज। हुं गुरुने सजम ग्रही सारु आतम काज ॥ २ ॥ पुन्य पन्त मो चिंतव्यो कदेन निरफळ थाय। तज़ाखिण तांम वधामणी वन पालक द्ये आय ॥ ३ ॥ स्वामी आपण वन मझे सयुत बहु मुनि राय। श्री गुण सागर केवली समव सर्या छे आप ॥ ४ ॥ नरपत तांम वधामणी दीधी तास अपार। बहु परिवारे परवरयो वंदण गुरु दीदार ॥ ५ ॥ सांझ अभी

गम साचवी तीन प्रदक्षिण देय । वार वार कर वन्दना बैठी निज ठामेय ॥ ६ ॥ (ढाल १६) भमर थे जागो जी मुखड़े पर धरयो रुमाल (पदेशी) श्री गुरू इण पर उपदिसे जी कांई भविजन ने हित हेत । श्री जिन धर्म समाचरो जी कांई भव सागर नो सेत ॥ १ ॥ चतुर थे चेतो जी इम सद्गुरु भाषे मर्म । मुगत सुख हेतो जी तुम धरो अरिहन्त धर्म ए आ०) द्वि विध प्रकारे दाखियो जी कांई आगारिक अणगार । द्वादश व्रत आगार ना जी कांई भाष्या सूत्र मझार २ च मु० ॥ देश पणे गुण वास थी जी कांई भाग कह्या व्रत बार । सर्व थकी मुनि राजना जी कांई पंच महाव्रत सार ॥ ३ च. मु० ॥ पहले व्रत श्रावक तजे जी कांई देश थी मोटो जीव । हणवुं नहीं आकोटि नेजी कांई बीजे असत्य सदीव ॥ ४ च. मु० ॥ मोटो ने वदे तीजे जी कांई अदत्त कुसील नो त्याग । चौथे पंचम धन तणो जी कांई नियम छठ्ठे दिसि भाग ॥ ५ च. मु० ॥ सातम मित छाषी

भाव थी जी कांइ ए द्वादश व्रत मांन ॥ ८ च मु० ॥ कर्मादान तजे वलि जी कांइ पांच सलेपण प्रेम । चौदे नेम चितारता जी कांइ समकित सेठी नेम ॥ ९ च मु० ॥ मुनिना सर्व थकी कह्यु जी कांइ त्याग मनो वच काय । त्रिकरण त्रिण योगें करि जी कांइ निसुणो भवि समुदाय ॥ १० च मु० पहले त्रिकरण थी तजे जी कांइ सहु प्राणि नी घात । दूजे सर्व थी नां वदे जी काइ मृषा झुठ अवदात ॥ ११ च मु० तीजे अदत्ता दान नो जी कांइ नियम त्री जागें तेह । चौथे मैथुन वर्जता जी कांइ सर्व थकी धर छेह ॥ १२ च मु० ॥ पांचम त्रिविध प्रकार नै कांइ परिग्रह नो पच खाण । ए पांचे व्रत साधु ना जी कांइ पांच मेरु सम जाण ॥ १३ च. मु० ॥ ए विहु माहे जे जना जी कांइ धारे एको धर्म । पामे शिव सुख सास्वता जी कांइ दूरा करिने कर्म ॥ १४ च मु० पण आदरवे करी जी कांइ फल थाये मन कन्त । उत्कृष्टो पनरें भवें जी कांइ पामे भवनो अन्त ॥ १५ च मु० ॥ श्रावक व्रत पाल्यां थकी जी काइ थाये मोटो लाभ । थोडु सेश भवो दधि जी कांइ रहे जिम जल अग डाभ ॥ १६ च मु० ॥ भिन२ भाखे केवली जी कांइ भवि ने इम उपदेश । राजादिक सहु सांभलें जी काइ धरिने मन सु निसेप १७ च मु० ॥ ढाल सोलमी ए कही जी कांइ हुल्लास चन्द

सुख कार । गुरुनी वाणी सांभले जी कोइ ते जग धन नर नार ॥ १८ च. मु० ॥ (दोहा) फिर गुरु कहे रे भविजना निसुणो सुझ मुख वैण । मोह नीद थी जागवो खोली अतर नैण ॥ १ ॥ मनुष्य जमारे आविया पांचू इन्द्री पूर्ण । काय निरोगी पांमिया एह अवस्था तूर्ण ॥ २ ॥ घर सम्पद पांमी घणी एता मिल्या संजोग । पिण ए गुरुने नवि मिल्या साचा गुरु जन लोग ॥ ३ ॥ कु गुरु कु देवने वस पड्या मनुष्य जमारो फोक । नीगमता ते वापडा दुख पांमे परलोक ॥ ४ ॥ मोह मिथ्यातनी नीदमे सूता नर अविवेक । गुरु ना वचन न सरदहे तजे न आपण टेक ॥ ५ ॥ साहमा मूरख वापडा उलटी बोले बांण । जैन धरम मे चालिया गोला घणा पिछाण ॥ ६ ॥ जैन अैन जाणे नही खेधे पड्या कहाय । मिथ्या मत वातें करि ये ज्ञान दीप बुझाय ॥ ७ दीप बुझावणी या जगे हिवणा लोक हजार । सातें भांते आखिये गुरु कहे सुणो विचार ॥ ८ ॥ (ढाल १७) आभल रे सीता पत आयो (एदेशी) इक नर कहे ससार चाले छै जिण मारग अम चालां रे । थांहरो कहण कदे नवि माना मांने रूडो दीखें ज्युं माला रे ॥ १ ॥ इम सत गुरु भविने समझावें, (ए आ०) ताहरो कांय भरोसो जैन नो विषमें मारग नाखो रे । तुम ए ताहरो धर्म निवाहो अम आगल

मत दाखो रे ॥ २ इ० ॥ ए पहली सिद्धांते आखी, दीप बुझावण ज्ञानो रे । बीजे जे नर बाल अज्ञानी, बोले वांकी वांनी रे ॥ ३ इ० ॥ थे जिन धर्म करो छो तिण थी, मांरे आगल जास्यो रें । अम्ह पाछेही पडिया रहस्या, पिण रखे तिहां सीदास्यो रे ॥ ४ इ० ॥ तीजे मूरख जिन धरमी नं वचन कहे मुख आयो रे । था धरम्याने पालखी आविस, अम्ह तस पकडिस पायो रे ॥ ५ इ० ॥ चौथी ज्ञान बुझामण करता, कहो तुम धरमी एता रे । स्वर्ग गया पिण कदेइन दीठा, तुमने कागल देता रे ॥ ६ इ० ॥ नवि कोइ जगमे दीसे आतो, नवि कोइ दीसे जातो रे । स्वर्ग मर्त्य पाताल तणी सहु, गोल गाल सी वातो रे ॥ ७ इ० ॥ पाचमी दीप बुझावण कहता, इम इक नर अज्ञानी रे । गोद तणो पट कीने मूरख, पेटनी आसा ठानी रे ॥ ८ इ० ॥ औ भव धन सम्पद थी मीठो, तो आगलो भव किण दीठो रे । कुण जांणे परलोक अछेवा, नहीं छे निश्चय नीठो रे ॥ ९ इ० ॥ छठी बुझावणि ज्ञान दिवानो, सुधू तेहन जोवे रे । कर्मानो अपचो नवि जाणे, कहे राम करें जो होवे रे ॥ १० इ० ॥ हर इच्छा इस्वर की माया, अपरपार अलेखा रे । यवन कहे जो खुदा करेगा, क्या वंदेका लेखा रे ॥ ११ इ० ॥ पिण अज्ञानी एम न जांणे, कोण राग रहमाना रे । एकण कर्म

आवी रोग । विषम देख: नृप चिन्तव्यो करु धर्म उद्योग ७ रा० ॥ ए तन काचा कुंभसो विनसत नहि वेर । सडण पडण विध्वंसना एहनो धर्म न फेर ॥ ८ रा० ॥ चिन्तव ततखिण निज पदे निज पुत्रने पाट । प्रताप सिहने थापियो टाल्युं सयल उचाट ॥ ९ रा० ॥ आपण पे आलोयणा करि च्यार अहार । पचख्या लाख चौरासी थी खमावे वारंवार १० रा० ॥ भावे सुधी भावना भाव चारित्र लीन । सर्व थकी सावज तज्या वैरागे पीन ॥ ११ रा० ॥ ध्यान धरते नवकार नो भावे अत्यंत । पाचम देव लोके गया आयुने अत ॥ १२ रा० ॥ दश सागरने आउखे सुरना सुख भोग । विलसे विविध प्रकारना नवकार सजोग ॥ १३ रा० ॥ रत्नवती नवकार नो जप जाप तिनेह । देव लोक पद देवने उपनी सुख अछेह ॥ १४ रा० ॥ तिहां थी ए बेहु जणा नर पदवी पाय । सुधू संयम पालता केवल ज्ञान उपाय ॥ १५

कोसीसे नव घाटतो। वयर विवर्जित जन्तुगण, माती हारिज आठतो ॥ सुर नर किन्नर असुर वर, इन्द्र इन्द्राणी रायतो चित चमकिय चिन्तव ए, सेवन्ता प्रभु पायतो ॥ १८॥ सहस किणर स्वामी वीर जिन, पेखवि रुप विसालतो। एह अचभव सभव ए, साचो ए इन्द्रजाल तो ॥ तो बोलावइ त्रिजग गुरु, इन्द्र भूइ नामेणतो। श्री मुख ससा स्वामी सवे, फेडे वेद पएण तो ॥ १९॥ मान मेल मद ठेल करे, भगतहि नाम्यो सीसतो। पच सयासुं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीसतो ॥ वधव सयम सुनवि करे, अगन भूइ आवे यतो। नाम लेई आभास करे, ते पिण प्रति बोधेय तो ॥ २०॥ इण अनुक्रम गणहर रयण, थाप्पा वीर इग्यार तो। तो उपदेशै भुवन गुरु, सयम सु व्रत बार तो ॥ बिहु उपवासे पारणो ए, आपण पै विहरत तो। गोयम सयम जग सयल, जय जयकार करन्त तो ॥ २१॥ (वस्तु) इन्द्र भूइ २ चढियो बहु मान, हु कारो करि कम्प तो। समव सरण पहुतो तुरन्त तो, जेह ससा स्वामि सवे। चरम नाह फेडै फुरन्त तो ॥ बोध बीज सजाय मने, गोयम भवहि ... । दिक्ख लेइ सिख्या सही, गण हर पय सम्पत्त ॥ ... (भास) आज हुओ सुविहान, आज पचेलम पुन्य ... गोयम स्वामी, जो निय नयने अमिय झरो ॥

गाजी ॥ १० ॥ कुशम वृष्टि विरचै तिहां देवा, चौसठ इंद्रज मांगे सेवा । चामर छत्र सिरोपरि सोहे, रुवहि जिनवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रस भर वर वर सन्ता, जो जन वानि वखाण करन्ता । जांणवि वर्द्धमान जिन पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कन्त समोहिय, जल हल कन्ता, गयण विमानहि रण रण कन्ता । पेखवि इन्द भूइ मन चिन्ते, सुर आवे अम जज्ञ हुवते ॥ १३ ॥ तीर तरडक जिमते वहिता, समव सरण पुहता गह गहिता। तो अभिमाने गोयम जंपै, इण अवसर कोपै तणु कंपै । ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्यु बोलै, सुर जानता इम काइ डोलै । मो आगल कोइ जान भणीजै, मेरु अवर किम ओपम दीजै ॥ १५ ॥ (वस्तु) वीर जिनवर वीर जिनवर नोंण, संपन्न पावा पुर सुर महिय । पत्तनाह ससार तारण, तिहि देवइ निम्महिय ॥ समव सरण बहु सुक्ख कारण, जिनवर जग उज्जोय करे । तेजहि कर दिनकार, सिंहासण स्वामी ठव्यो हुउ तो जय जयकार ॥ १६ ॥ (भास) तो चढियो घण मान गजै, इन्द भूइ भूय देवतो । हुंकारो कर संचरिय, कवणसु जिनवर देवतो ॥ जोजन भूमि समो सरण, पेखवि प्रथमा रभतो । दह दिस देखे विबुध वधू, आवंती सुर रभतो ॥ १७ ॥ मणि मय तोरण दन्ड ध्वज,

कोसीसे नव घाटतो । वयर विवर्जित जन्तुगण, प्राती हारिज आठतो ॥ सुर नर किन्नर असुर वर, इन्द्र इन्द्राणी रायतो चित चमक्रिय चिन्तव ए, सेवन्ता प्रभु पायतो ॥ १८ ॥ सहस किणर स्वामी वीर जिन, पेखवि रूप विसालतो । एह अचभय सभव ए, साचो ए इन्द्रजाल तो ॥ तो बोलावइ त्रिजग गुरु, इन्द्र भूइ नामेणतो । श्री मुख ससा स्वामी सवे, फेडे वेद पएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद ठेल करे, भगतहि नाम्यो सीसतो । पच सयासु व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीसतो ॥ बवत्र सयम सुनवि करे, अगन भूइ आवे यतो । नाम लेई आभास करे, ते पिण प्रति बोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहर रयण, थाप्या वीर इग्यार तो । तो उपदेशै भुवन गुरु, सयम सु व्रत बार तो ॥ विहु उपवासे पारणो ए, आपण पै विहरत तो । गोयम सयम जग सयल, जय जयकार करन्त तो ॥ २१ ॥ (वस्तु) इन्द्र भूइ २ चढियो बहु मान, हु कारो करि कम्प तो । समव सरण पहुतो तुरन्त तो, जेह ससा स्वामि सवे । चरम नाह फेडे फुरन्त तो ॥ बोध बीज सजाय मने, गोयम भवहि विरत्त । दिक्स लेइ सिख्या सही, गण हर पय सम्पत्त ॥ २२ ॥ (भास) आज हुओ सुविहान, आज पचेलम पुन्य भरो । दीठा गोयम स्वामी, जो निय नयने अमिय झरो ॥

समव सरण मझार, जे जे ससा ऊपजै ए । ते ते पर उपगार, कारण पूछै मुनि पवरो ॥ २३ ॥ जींहां २ दीजै दीख, तीहां केवल ऊपजे ए । आप कनें अण हुन्त, गोयम दीजै दान इम । गुरु ऊपर गुरु भक्ति, स्वामी गोयम उपन्निय । अणचल केवल नाण, रागज राखे रङ्ग भरे ॥ २४ ॥ जो अष्टापद सैल, वंदे चढ चौवीस जिन । आतम लबधि वसेण चरम सरीरी सोज मुनि । इय देशना निसुणेह, गोयम गण हर संचरिय । तापस पन रस एण, जो मुनि दीठो आवतोए २५ ॥ तप सोसिय निय अङ्ग, अह्मां सगतिन ऊपजे ए । किम चढस्यै दृढकाय, गज जिम दीसै गाजतो ए । गिरुओ ए अभिमान, तापस जो मन चिन्तवै ए । तो मुनि चढियो वेग, आलबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कचन मनि निप्पन्न दन्ड कलस ध्वज वड सहिय । पेखवि परमानन्द, जिन हर भरतेसर महिय्र । निय २ काय प्रमान, चिहुं दिसि संठिय जिनह बिंब । पण मवि मन उल्हास, गोयम गण हर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामिनो जीव, तिर्यक जृंभक देव तिहां । प्रति बोध्या पुन्डरिक, कंन्डरीक अध्ययन भणी । वलता गोयम साम, सवि तापस प्रति बोध करे । लेई आपण साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खाड घृत आण, अमिय वूठ अगूठ ठवे । गोयम एकण पात्र,

करावै पारणो सवे । पच सयां सुभ भाव, उज्जल भरियो खीर मिसे । साचा गुरु सयोग, कवलत केवल रूप हुय ॥ २९ ॥ पच सयां जिन नाह, समव सरण प्राकार त्रय । पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे । जाने जानवि पीयूष, गाजती घन मेघ जिम । जिन वाणी नि सुनेवि, णानी हुआ पच सया ॥ ३० ॥ (वस्तु) इण अनुक्रम २ नाण संपन्न, पनरै सै परि वरिय । हरिय दुरिय जिन नाह वन्दइ, जानेवि जग गुरु वयण । तिहि नाण अप्पाण निन्दइ चरम जिनेसर इम भणे, गोयम मकरिस खेव । छेह जाय आपण सही, होस्या तुल्ला वेव ॥ ३१ ॥ (भास) स्वामियो ए वीर जिनन्द, पूनम चन्द जिम उल्लसिय । विहरियो ए भरह वासंमि, वरस बहुत्तर स वसिय । ठवतो ए कनय पउ मेन, पाय कमल संघै सहिय । आवियो ए नयणा नन्द, नयर पावा पुर सुर महिय ॥ ३२ ॥ पेखियो ए गोयम स्वामि, देव समा प्रति बोध करे । आपणो ए त्रिसला देवि, नन्दन पुहतो परम पए । वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाण्यो जिन समे ए । तो मुनि ए मन विष वाद, नाद भेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए स्वामिय देख, आप कनासुं टालियो ए । जानतो ए तिहुअण नाह, लोक विवहारण पालियो ए । अति भलो ए कीधलो स्वामि, जाण्यो केवल

समव सरण मझार, जे जे संसा ऊपजै ए । ते ते पर उप-
गार, कारण पूछै मुनि पवरो ॥ २३ ॥ जीहां २ दीजै दीख,
तीहां केवल ऊपजै ए । आप कने अण हुन्त, गोयम दीजै
दान इम । गुरु ऊपर गुरु भक्ति, स्वामी गोयम उपन्निय ।
अणचल केवल नाण, रागज राखे रङ्ग भरे ॥ २४ ॥ जो
अष्टापद सैल, वदै चढ चौवीस जिन । आतम लवधि वसेण
चरम सरीरी सोज मुनि । इय देशना निसुणेह, गोयम गण
हर संचरिय । तापस पन रस एण, जो मुनि दीठो आवतोए
२५ ॥ तप सोसिय निय अङ्ग, अह्मा सगतिन ऊपजै ए ।
किम चडस्यै दृढकाय, गज जिम दीसै गाजतो ए । गिरुओ
ए अभिमान, तापस जो मन चिन्तवै ए । तो मुनि चढियो
वेग, आलँबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कचन मनि निप्पन्न
दन्ड कलस ध्वज्ज वड सहिय । पेखवि परमानन्द, जिन हर
भरतेसर महिय । निय २ काय प्रमान, चिहुं दिसि सठिय
जिनह विम्ब । पण मवि मन उल्हास, गोयम गण हर तिहां
वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामिनो जीव, तिर्यक जृंभक देव
तिहा । प्रति बोध्या पुन्डरिक, कंन्डरीक अध्ययन भणी ।
वल्लता गोयम साम, सवि तापस प्रति बोध करे । लेई
आपण साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांड
घृत आण, अमिय वूठ अगूठ ठवे । गोयम एकण पात्र,

करावै पारणो सवे । पंच सयां सुभ भाव, उज्जल भरियो, खीर मिसे । साचा गुरु सयोग, कवलत केवल रूप हुग ॥ २९ ॥ पच सयां जिन नाह, समव सरण भाकार तय । पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे । जाने जानवि पीयूप, गाजती घन मेघ जिम । जिन वाणी नि सुनेवि, णानी हुआ पच सयां ॥ २० ॥ (वस्तु) इण अनुक्रम २ नाण सपन्न, पनरै सै परि वरिय । हरिय दुरिय जिन नाह वन्दइ, जानेवि जग गुरु वयण । तिहि नाण अप्पाण निन्दइ चरम जिनेसर इम भणे, गोयम मकरिस खेव । छेह जाय आपण सही, होस्या तुल्ला बेव ॥ ३१ ॥ (भास) स्वामियो ए वीर जिनन्द, पूनम चन्द जिम उल्लसिय । विहरियो ए भरह वासमि, वरस बहुत्तर स वसिय । ठवतो ए कनय पउ मेन, पाय कमल संघे सहिय । आवियो ए नयणा नन्द, नयर पावा पुर सुर महिय ॥ ३२ ॥ पेखियो ए गोयम स्वामि, देव समा प्रति बोध करे । आपणो ए त्रिसला देवि, नन्दन पुहतो परम पर । वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाण्यो जिन समे ए । तो मुनि ए मन विषवाद, नाद भेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए स्वामिय देख. आप कनासूं टालियो ए । जानतो ए तिहुअण नाह, लोक विवहारण पालियो ए । अति भलो ए कीधलो स्वामि, जाण्यो केवल

मांगस्यै ए । चितव्यो ए बालक जेम, अहवा केडे लागस्यै ए ॥ ३४ ॥ इ क्रिम ए वीर जिनन्द, भगतहि भोले भोलव्यो ए । आपणो ए उंचलो नेह, नाह नसपे साचव्यो ए । साचो ए ए वित राग, नेह न हेजै लालियो ए । तिन समे ए गोयम चित्त, राग वैरागे वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लह रहितो रागे साहियो ए । केवल ए नाण उपन्न, गोयम सहिज उमाहियो ए । तिहुअण ए जय जयकार, केवल महिमा सुर करे ए । गण धर ए करय बखाण, भविया भव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥ (वस्तु) पढम गण हर २ वरप पच्चास, गिह वासे संवसिय । तीस वरप संयम विभूसिय । सिरि केवल नाण पुण, वार वरस तिहुअण नमसिय । राज ग्रही नयरी ठव्यो, वाणवइ वरसाउ । स्वामी गोयम गुण निलो, होस्यै शिव पुर ठाउ ॥ ३७ ॥ (भास) जिम सहकारे कोयल टहुकै, जिम कुसमावन परमल महकै । जिम चन्दन सोगंध निधि, जिम गङ्गा जल लहिरचा लहकै । जिम कनयाचळ तेजे झलके, तिम गोयम सोभाग निधि ॥ ३८ ॥ जिम मान सरोवर निवसै हसा, जिम सुर तरुवर कणय वतसा । जिम महुयर राजीव वने, जिम रयणायर रयणे विलसै । जिम अंवर तारा गण विकसै, तिम गोयम गुरु केल घने ॥ ३९ ॥ पूनम निसि जिम ससियर सोहै, सुर तरु महिमा

जिम जग मोहै । पूरब दिसि जिम सहस करो, पंचानन जिम गिरवर राजे । नरवइ घर जिम मगल गाजे, तिम जिन सासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहै साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भासा । जिम वन केतकि मह महै ए, जिम भूमी पति भुय बल चमकै । जिम जिन मन्दिर घन्टा रणकै, गोयम लब्धै गह गह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिन्तामणि कर चढीयो आज, सुर तरु सारै वछिय काज । काम कुंभ सहु वसि हुआए, काम गवी पूरै मन कामी । अष्ट महा सिधि आवै धामी, स्वामी गोयम अणुसरो ए ॥ ४२ ॥ पणव क्षर पहिलो पभणी जै, माया बीजो श्रवण सुणी जै । श्री मती सोभा सभवो ए, देवा धुर अरिहन्त नमी जै । विनय पहु उवझाय थुणी जै, इण मतै गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ पर घर वसता काय करी जै, देश देशातर काय भमी जै । कवण काज आयास करो, प्रह ऊठी गोयम समै रीजे । काज समग्गल ततखिण सीझे, नव निधि विलसै तिहां घरे ॥ ४४ ॥ चवदय सय बारोत्तर वरसै, गोयम गण हर केवल दिवसै । कीयो कवत्त उपगार परो, आदहि मङ्गल ए पभणी जै । परव महोच्छव पहिलो दीजै रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिन उयरै धरियो, धन्य पिता जिन कुल अवतरियो । धन्य सु गुरु

मांगस्यै ए । चितव्यो ए बालक जेम, अहवा वेडे लागस्यै ए ॥ ३४ ॥ हू किम ए वीर जिनन्द, भगतहि भोले भोलव्यो ए । आपणो ए उंचलो नेह, नाह नसपै साचव्यो ए । साचो ए ए वित राग, नेह न हेजै लालियो ए । तिन समे ए गोयम चित्त, राग वैरागे वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लट रहितो रागे साहियो ए । केवल ए नाण उपन्न, गोयम सहिज उमाहियो ए । तिहुअण ए जय जयकार, केवल महिमा सुर करे ए । गण धरु ए करय बखाण, भविया भव जिम निरतरे ए ॥ ३६ ॥ (वस्तु) पढम गण हर २ वरष पच्चास, गिह वासै सवसिय । तीस वरष संयम विभूसिय । सिरि केवल नाण पुण, बार वरस तिहुअण नमसिय । राज ग्रही नयरी ठव्यो, बाणवइ वरसाउ । स्वामी गोयम गुण निलो, होस्यै शिव पुर ठाउ ॥ ३७ ॥ (भास) जिम सहकारे कोयल टहुकै, जिम कुसमावन परमल महकै । जिम चन्दन सोगध निधि, जिम गङ्गा जल लहिरयां लहकै । जिम कनयाचल तेजें झलकै, तिम गोयम सोभाग निधि ॥ ३८ ॥ जिम मान सरोवर निवसै हसा, जिम सुर तरुवर कणय वतसा । जिम मद्दुयर राजीव वने, जिम रयणायर रयणे विलसै । जिम अम्बर तारा गण विकसै, तिम गोयम गुरु केल घने ॥ ३९ ॥ पूनम निसि जिम ससियर सोहै, सुर तरु महिमा